Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं न मानूँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

167966
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं न मानूँ

Central Library
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
167966

गुरुदत्त

081
167966

ऋचा प्रकाशन, नई दिल्ली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

© भारती साहित्य सदन, १९५९

R
089.9143
GUR-M

23553624. 23551344, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़
करोल बाग, नई दिल्ली-110005
www.hindisahityasadan.com

मो० 7065618655, 9213527666
हिन्दी साहित्य सदन
2, बी.डी. चैम्बर्स, 10/54, देशबन्धु गुप्ता रोड़,
करोल बाग, नई दिल्ली-110005

MAIN NAA MAANUN by Gurudutt

प्रकाशक : ऋचा प्रकाशन
नई दिल्ली

वितरक : भारती साहित्य सदन
३०/९०, कनॉट सरकस (मद्रास होटल के नीचे)
नई दिल्ली-११०००१

संस्करण : अप्रैल, १९९३

शब्द संयोजक : अजय प्रिंटर्स, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

मुद्रक : कुमार ऑफसेट, विश्वास नगर, दिल्ली-११००३२

₹80P - -

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्राक्कथन

अभिमानी का सिर नीचा होता है, परन्तु इस संसार में ऐसे लोग भी हैं जो सिर नीचा होने पर भी, उसको नीचा नहीं मानते। ऐसे लोगों के लिए ही कहावत बनी है—'रस्सी जल गई, पर बल नहीं टूटे'।

इसका कारण मनुष्य की आद्योपांत विवेक-शून्यता है। विवेक अपने चारों ओर घटने वाली घटनाओं के ठीक मूल्यांकन का नाम है।

मन के विकार हैं—काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा अहंकार। जब इन विकारों के कारण बुद्धि मलिन हो जाती है तो वह ठीक को गलत और गलत को ठीक समझने लगती है। इसको विवेक-शून्यता कहते हैं।

मन के विकारों में अहंकार सबसे अन्तिम और सबसे अधिक बुद्धि भ्रष्ट करने वाला है। अहंकारवश मनुष्य ठोकर खाकर गिर पड़ता है, बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है। बुद्धि भ्रष्ट हो जाने से वह नहीं मानता कि वह गिर पड़ा है अथवा उसका अभिमान व्यर्थ था। वह अपनी भूल स्वीकार नहीं करता और अन्त तक कहता रहता है—मैं न मानूँ, मैं न मानूँ।

व्यक्ति अथवा जातियों के जीवन में समय-समय पर ऐसे उदाहरण मिलते रहते हैं। पिछले विश्वव्यापी युद्ध में जर्मनी की पराजय १९४४ के जून मास में आरम्भ हुई थी। तब ही रोमेल इत्यादि जनरल हिटलर को चेतावनी दे रहे थे कि उसके सैनिक-संगठन में दोष है, परन्तु अपनी प्रारम्भिक विजयों से मदान्ध हिटलर उसे नहीं समझ पाया। वह अन्त तक भी यह नहीं समझ सका कि उसकी पूर्ण योजना बालू की भीत की भाँति गिरती जा रही है। अन्त समय में भी वह अपनी भूल को नहीं माना।

'मैं न मानूँ' एक ऐसी ही, परन्तु घर-गृहस्थी की कहानी है।

—गुरुदत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम परिच्छेद

पंजाब यूनिवर्सिटी की मैट्रिक की परीक्षा हो रही थी । लाहौर मॉडल स्कूल में भी एक परीक्षा-केन्द्र था । उस दिन का प्रथम परीक्षा-पत्र देकर लड़के स्कूल के हॉल से बाहर निकले तो भगवानदास भी बाहर आया और लड़कों में दृष्टि दौड़ा किसी को ढूँढ़ने लगा । प्रायः सभी लड़के परस्पर अपने प्रश्नों के उत्तर मिला रहे थे ।

भगवानदास की दृष्टि सबसे पृथक् खड़े एक लड़के पर पड़ी । वह उस ओर ही चल पड़ा । मार्ग में एक अन्य लड़के ने पूछा, "भगवान ! दूसरे सवाल का क्या जवाब है ?"

भगवानदास ने मुस्कराते हुए कहा, "जो तुम अपने पर्चे में लिख आए हो ।"

दूसरा लड़का इस पर कुछ कहने ही वाला था कि भगवानदास आगे निकल गया । वह उसके पास जा पहुँचा, जिसके पास वह जाना चाहता था । "नूरुद्दीन !" उसने उसकी बाँह-में-बाँह डालकर पूछा, "कैसा रहा आज का पर्चा ?"

"कुछ न पूछो, दोस्त ! चलो चलें ।"

दोनों घर की ओर चल पड़े । उन दिनों एक दिन में दो पर्चे हुआ करते थे । छः दिन में पूर्ण परीक्षा समाप्त हो जाया करती थी । परीक्षा का आज पाँचवाँ दिन था । गणित की परीक्षा का दिन था और यह पर्चा अरिथमैटिक तथा ऐलजैबरा का था । परीक्षा प्रातः सात बजे आरम्भ हुई थी और दस बजे पर्चे ले लिए गए थे । सायं तीन बजे दूसरा पर्चा मिलने वाला था । घर दो मील के अन्तर पर था । जाना, भोजन करना, विश्राम कर जल्दी-जल्दी ज्योमेट्री की कुछ थ्योरमों पर दृष्टि डालना और फिर पौने तीन बजे वापस हॉल के दरवाजे पर उपस्थित होना था । अतः वे चल पड़े । मार्ग में भगवानदास ने कहा, "आज का यह पर्चा तो तुम्हारा कमजोर था

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही। फिर भी कितने सवाल किए हैं ?"

"भई, किए तो छः हैं, मगर ठीक तो खुदा जाने एक भी है अथवा नहीं।"

"आठ करने थे। छः किए और भला बताओ, क्या-क्या जवाब है ?"

"मैं लिखकर नहीं लाया।"

"तुम भी बुद्धू हो। तीन भी ठीक किए होते तो दिल को तसल्ली हो जाती।"

"तसल्ली तो मेरे दिल को इम्तिहान देने से पहले ही थी।" नूरुद्दीन ने कह दिया—"देखो दोस्त, मैं या तो पास हो जाऊँगा या फेल। दोनों हालतों में मुझे अपने वालिद के साथ काम करना है। रोज़ सुबह सात बजे काम पर जाना है और सायं पाँच बजे लौटना है। वालिद कहते थे कि तीस रुपया पाकेट खर्च देंगे। देखो कितनी तसल्ली की बात है!"

दोनों हँसने लगे। नूरुद्दीन ने कहना जारी रखा—"वे कहते थे कि मज़दूरों की हाज़िरी लगानी होगी। उनको देखते रहना है कि काम करते हैं या नहीं। कहीं पेशाब करने जाते हैं तो कितने वक्त के लिए ग़ैर-हाजिर रहते हैं। बस, अभी मेरा यही काम होगा। वहाँ न तो ऐलजैबरा के फार्मूले चाहिए, न ही तजारत के सवाल निकालने होंगे।"

नूरुद्दीन का पिता खुदाबख्श मिस्त्री का कार्य करता-करता ठेकेदार हो गया था। वह स्वयं कुछ भी पढ़ा-लिखा नहीं था। लकीरें खींच-खींचकर हिसाब रखता था। कार्य-कुशलता तथा अनुभव के आधार पर उन्नति कर रहा था। उसने बीस राजगीर और मज़दूर काम पर लगाए हुए थे और उनके वेतन तथा काम का हिसाब रखने में उसको कठिनाई अनुभव होने लगी थी। इसलिए, खुदाबख्श प्रतिदिन लड़के से पूछता रहता था—"कितने दिन इम्तिहान के और हैं ?"

इसी प्रकार एक दिन खुदाबख्श ने कहा, "अब काम बढ़ गया है। मुझको तुम्हारी मदद की सख्त ज़रूरत है।"

"बस, 'शनिच्छर' वार शाम को छः बजे आख़िरी पर्चा है।"

"और 'ऐतवार' को तुमको मेरे साथ काम पर जाना है।"

"क्या मैं और नहीं पढ़ूँगा ?"

"मेरे काम के लायक बहुत पढ़ गए हो।"

"पर अब्बा जान! मैं शादी करूँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदाबख्श ने लड़के के मुख पर देखा और उस पर लज्जा की लाली देख कह दिया, "अपनी माँ से कहो।"

"माँ से कह दिया है। वह मान गई है।"

"क्या मान गई है ?"

खुदाबख्श को इसमें न मानने की तो कोई बात समझ में आई ही नहीं थी। लड़का जवान हो रहा था। भला शादी न करने की बात तो माँ कर सकती ही नहीं थी। नूरुद्दीन ने बाप को समझा दिया, "वह सादिक है न? वही जो रेल के एग्ज़ामिनर के दफ्तर में काम करता है। उसकी लड़की कम्मो से शादी करूँगा। माँ मानती नहीं थीं। मैंने उनको राज़ी कर लिया है।"

खुदाबख्श कितनी ही देर तक लड़के का मुख देखता रहा। फिर उसने पूछा, "पर, सादिक मानेगा क्या ?"

"नहीं मानेगा तो मैं उसकी लड़की को भगाकर ले जाऊँगा।"

"बहुत बदमाश हो गए हो !"

"नहीं अब्बाजान ! हमारी एक किताब में एक राजा ने अपनी माशूका को भगा ले जाने की बात लिखी है।"

"वह किताब स्कूल में पढ़ाई जाती है ?"

"हाँ ! उसका नाम है 'प्रिज़नर आफ़ जैंडा'। जैंडा एक देश का नाम था। वहाँ का राजा ख़ूबसूरत, मगर शराबी और काहिल (प्रमादी) था। एक अंग्रेज़ मुसाफिर वहाँ पहुँच गया। किस्मत से उस मुसाफिर की शक्लसूरत राजा से बिल्कुल मिलती थी। राजा के वज़ीर, जो राजा की काहिली से तंग आ चुके थे, उस मुसाफिर को अपना राजा बना बैठे और असली राजा को कैद कर लिया। राजा की सगाई नगर के एक धनी आदमी की लड़की से हो चुकी थी। लड़की राजा से मिलने आती रहती थी। उस मुसाफिर के राज्य-कार्य सँभालने पर भी वह लड़की मिलने आई। उसने भी इस अदला-बदली को नहीं पहचाना। वह हैरान तो हुई। राजा की आदतों में बहुत फर्क पड़ गया था। जहाँ पहले वह शराब में मदमस्त पड़ा रहता था, वहाँ अब वह कारोबार में लगा हुआ था।

"वह मुसाफिर राजकाज को पसन्द नहीं करता था। इससे वह वहाँ से भाग जाना चाहता था, मगर वह राजा की बनने वाली रानी से मोहब्बत करने लगा था, इसीलिए वह वहाँ टिका था। असली राजा कैद में बन्द था। आखिर, उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़की को अपना राज़ बता दिया। लड़की भी उससे मोहब्बत करने लगी थी। मगर उसने कहा, "मेरा बाप इस अदला-बदली को पसन्द नहीं करेगा। वह तो मेरे रानी बनने के ख्वाब ले रहा है। अगर तुम मुझसे शादी करना चाहते हो तो यहाँ के राजा बने रहो और उसको कैद में रहने दो।"

"मुसाफिर को यह बात पसन्द नहीं आई। एक तो वह इसको धोखा समझता था, दूसरे, उसको राजगद्दी से ज्यादा अपनी आज़ादी पसन्द थी। आखिर, एक दिन वह लड़की को लेकर 'इलोप' कर गया। वह इंग्लैंड में जा पहुँचा और वहाँ उसने लड़की से शादी कर ली।"

"यह 'इलोप' क्या होता है?"

"यही, जो मैं करने की बात कह रहा हूँ।"

"बहुत गन्दी किताबें पढ़ाते हैं स्कूलों में?"

"अब्बाजान! मैं कम्मो से शादी करूँगा।"

"कैसी लगती है?"

"दुबली, पतली, लम्बी, गोरी और –।" आगे वह अपने बाप को बता नहीं सका।

यह बुधवार की बात थी। आज शुक्रवार था। आज वह इम्तिहान देकर घर लौटते हुए भगवानदास को बता रहा था, "और, दोस्त! मेरी एक माशूका है। मैं उससे मोहब्बत करता हूँ। मेरे काम पर जाने के एक महीने के अन्दर मेरी उससे शादी होगी। कल माँ, लड़की की माँ से मिल आई हैं और बात पक्की कर आई हैं। अब बताओ, तसल्ली की बात है या नहीं?"

"ठीक है।" भगवानदास ने सामने मार्ग पर चलते हुए कहा।

भगवानदास अपनी श्रेणी में सबसे योग्य विद्यार्थी था। उसके मास्टर आशा कर रहे थे कि वह मैट्रिक की परीक्षा में बहुत अच्छे अंक लेकर पास होगा। कदाचित् वह छात्रवृत्ति भी पा जाएगा। उसके घर पर भी उसके विवाह की चर्चा हो रही थी। उसकी माँ उसके पिता से कहा करती थीं, "लाला शरणदास की पत्नी कई बार आ चुकी है।"

भगवानदास का पिता लोकनाथ कहा करता था—"लड़के को एम॰ ए॰ पास करना है। पहले शादी कर दूँगा तो पढ़ाई नहीं हो सकेगी।"

"सगाई तो हो सकती है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"क्या लाभ होगा ?"

"शरणदास बड़े आदमी हैं। उनसे सम्बन्ध बनेगा फिर आना-जाना बना रहा तो कुछ लाभ ही होगा। अभी तो हम लोग भगवान की ससुराल से खायेंगे। विवाह के बाद तो ये हमको पूछेंगे भी नहीं।"

लोकनाथ लाट साहब (गवर्नर) के दफ्तर में क्लर्क था। डेढ़ सौ रुपया वेतन पाता था और घर-गृहस्थी सुभीते से चला रहा था। शरणदास अनारकली बाज़ार में घड़ियों की दुकान करता था। बिरादरी में धनीमानी व्यक्ति समझा जाता था। अपनी पहली लड़की के विवाह पर उसने पचास तोले सोना दिया था और उन दिनों यह एक बहुत बड़ा दहेज समझा जाता था। शरणदास की हैसियत देख, लोकनाथ के मुख में पानी भर आया था। इससे उसने कह दिया, "अच्छा, दसवीं जमात का परीक्षाफल निकल लेने दो, उसके बाद बात करेंगे।"

नूरुद्दीन की बात सुनकर भगवानदास भी अपनी सगाई की बात पर विचार करने लगा था। उसने अपनी होने वाली पत्नी का नाम भी नहीं सुना था। उसने शरणदास की दुकान देखी थी। एक दिन वह अपने पिता के साथ एक जेबघड़ी खरीदने वहाँ गया था। घड़ी आठ रुपए की आई थी। उसके बाद ही उसकी माँ शरणदास की पत्नी के सन्देश पाने लगी थी। शरणदास ने लड़के को उसी दिन देखा था और पसन्द कर लिया था।

: २ :

परीक्षा समाप्त हुई और अगले ही दिन से नूरुद्दीन अपने बाप के साथ काम पर जाने लगा। किन्तु वह नित्य सायंकाल भगवानदास से मिलता अवश्य था। दोनों बचपन के दोस्त थे। एक ही मुहल्ले के रहने वाले थे। दोनों के मकान केवल सड़क के अन्तर पर थे। एक का मकान सड़क के एक ओर और दूसरे का सड़क के दूसरी ओर था। ये तब से मित्र थे, जब वे सड़क के किनारे बैठ, कंकड़ों से खेला करते थे। तब खुदाबख्श मिस्त्री का काम करता था। एक समझदार कारीगर होने के नाते उसकी माँग रहती थी। मुहल्ले में जो कोई भी मकान बनता, खुदाबख्श का हाथ लगे बिना, उसको ठीक नहीं माना जाता था। उन दिनों अधिकांश मिस्त्री दो रुपए रोज़ लेते थे, परन्तु खुदाबख्श ढाई रुपए लेता था।

भगवानदास और नूरुद्दीन इकट्ठे मुहल्ले के कुछ ही अन्तर पर मिशन हाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्कूल में प्रविष्ट हुए। जब कुछ बड़े हुए तो मुहल्ले के लड़कों ने फुटबाल की एक टीम बनाई और नूरुद्दीन उसमें कप्तान बन गया। भगवानदास उस टीम का एक सदस्य था। तब भी नूरुद्दीन की भगवानदास से दिली दोस्ती रही। स्कूल में भरती हुए तो नूरुद्दीन भगवानदास के घर आकर, उनके मकान की बैठक में पढ़ा करता था। नूरुद्दीन का पढ़ाई में सबसे कमजोर विषय गणित था। भगवानदास उसको समझाता रहता था। ज्योमेट्री तो वह समझ भी जाता। परन्तु अरिथमैटिक और ऐलजैबरा तो उसके दिमाग में आते ही नहीं थे।

भगवानदास की बहन का विवाह हुआ तो सबसे अधिक काम करने वाला नूरुद्दीन ही था। जो भी काम उसको बताया गया, वही उसने किया। तीन रात तो वह अपने घर ही नहीं गया। इस विवाह के समय वे दसवीं श्रेणी में पढ़ते थे।

नूरुद्दीन साढ़े पाँच बजे काम से लौटता और घर जा, माँ से दो रोटी ले और खाकर सीधा भगवानदास के घर की बैठक में जा पहुँचता। कभी भगवानदास घर पर नहीं होता तो वह बैठक में बैठा प्रतीक्षा करता रहता। लोकनाथ के घर की बैठक, मुहल्ले का पंचायत-घर बनी हुई थी। मुहल्ले का कोई-न-कोई झगड़ा, किसी-न-किसी की चर्चा, किसी के विवाह आदि का प्रबन्ध अथवा देश-विदेश की बातचीत भी वहाँ होती रहती थी। लोकनाथ भी दफ्तर से लौट, सायंकाल का अल्पाहार कर बैठक में आ जाता था और इधर-उधर की बातें होती रहती थीं। लोकनाथ हुक्का गुड़गुड़ाता रहता और बातें करता रहता।

परीक्षा-फल अभी नहीं निकला था, तभी एक दिन नूरुद्दीन भगवानदास के घर पहुँचा तो वह घर से निकल रहा था।

"किधर जा रहे हो, भगवान ! आओ, परेड ग्राउण्ड तक टहल आएँ ?"

"क्यों, आज क्या है ?"

"पिताजी से कोई बात करने आए हैं। मैंने वहाँ बैठना ठीक नहीं समझा।"

"क्यों ?"

"अरे बुद्धू ! इसलिए कि वे मेरी बातें कर रहे हैं।"

"तो फिर क्या हुआ ? तुमको गाली देते हैं क्या ?"

"नहीं; मेरी तारीफ़ (प्रशंसा) कर रहे हैं।"

"तब तो सुनने में मज़ा आएगा।"

नूरुद्दीन अपने मित्र की प्रशंसा सुन प्रसन्न हुआ करता था। उसकी अपनी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रशंसा तो कोई करता नहीं था। इससे उसको मित्र की प्रशंसा अपनी ही प्रशंसा प्रतीत होती थी।

वे घर से कुछ दूर पहुँच चुके थे। नूरुद्दीन चलता-चलता खड़ा हो गया और लौट जाने का विचार करने लगा। भगवानदास ने उसकी बाँह-में-बाँह डाल, उसको रंगमहल चौक की ओर खींचते हुए कहा, "बात यह है कि एक लाला मेरी सगाई की बात करने आए हुए हैं। इससे मैं वहाँ से चला आया हूँ। मुझको शर्म लगने लगी थी।"

नूरुद्दीन खिलखिलाकर हँस पड़ा और बोला, "तुम भी लड़कियों की तरह शर्म करते हो?" उसने भगवानदास के मुख पर देखते हुए पूछ लिया, "अरे भगवान! शर्म तो तुम्हारी होने वाली बीवी को करनी चाहिए। तुमको किस बात की शर्म लगती है?"

भगवानदास ने उसके इस प्रश्न का कोई उत्तर नहीं दिया। दोनों परेड ग्राउण्ड की ओर चल पड़े थे। नूरुद्दीन ने अपनी बात बताते हुए कहा—"मेरा विवाह सादिक की लड़की कम्मो से होगा। सगाई से पहले तो वह लाभचन्द की दुकान पर दूध-दही लेने आया करती थी और मैं उसको देखा करता था। कई बार उससे बातें भी की हैं। उसके वालिद की बाबत और उसके कुत्ते 'बेली' की बाबत। कभी बेली उसके साथ हलवाई की दुकान पर नहीं आता तो मैं पूछ लेता, 'आज बेली कहाँ है?' और वह बताया करती—'घर पर बँधा हुआ है।'

"मगर एक दिन सगाई के बाद भी मेरी नज़र उस पर पड़ गई। बस, मुझको देखते ही वह घर को भागी। हाथ में एक छन्ने में दही ले जा रही थी। वह भी भागते हुए गिर पड़ी।"

"यह कब की बात है?" भगवानदास ने पूछ लिया।

"तीन-चार दिन हुए हैं। उसके बाद कल उसका बाप दही लेने आया था। वह शरम खा गई मालूम होती है।"

"पता नहीं क्यों? जब वे लाला मेरी पीठ पर हाथ फेरकर पूछने लगे, 'भगवानदास! पर्चे कैसे किए हैं?' तो मुझे रोमांच हो आया और मैंने अपने पिताजी से कहा, 'मैं घूमने जा रहा हूँ।' उन लालाजी को नमस्ते कर, बैठक से निकल आया।"

"वाह भई! खूब! श्वसुर ने पीठ पर हाथ फेरा और तुम्हारे रोंगटे खड़े हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गए। वह तुम्हारा श्वसुर था या बीवी थी ?"

"तो क्या बीवी का हाथ लगने से रोंगटे खड़े होते हैं ?"

"भगवानदास ! इसका तजरुबा तो है नहीं। हाँ, बीवी का ख्याल करने से रोंगटे जरूर खड़े हो जाते हैं। तुमने लालाजी की लड़की देखी है ?"

"नहीं ! वे अनारकली बाज़ार में घड़ियों की दुकान करते हैं। वे वहीं रहते हैं और सुना है, बहुत धनी आदमी हैं।"

"कम्मो के बाप हैं तो बाबू, चालीस रुपया महीना पाते हैं। बहुत मुश्किल से गुज़र होती है। सादिक मियाँ मेरे बाप से मिलने आए थे और कह रहे थे कि वे दहेज वगैरा कुछ नहीं दे सकेंगे।"

"फिर ! शादी होगी या नहीं ?"

"होगी क्यों नहीं ? हमारे घर में तो खाने-पीने को बहुत है। पिछले काम में बाप को तीन हज़ार रुपए की बचत हुई थी। इस काम में तो और ज्यादा होने वाली है।"

"कितने समय में काम खत्म किया था ?"

"छः महीने में।"

"ओह ! पाँच सौ रुपए महीना ? बहुत मज़े में हो ?"

"हाँ ! अब्बा ने कम्मो के बाप से कह दिया था, 'कुछ हरज नहीं। मैं लड़की को जेवर-कपड़ों से लाद दूँगा। खाने-पीने को रोज मिठाई-पूरी खिलाऊँगा।' "

"तो शादी तय हो गई है ?"

"हाँ, अब्बा कहते थे। सादिक के घर दावत नहीं होगी। शादी के बाद दोस्तों, रिश्तेदारों की दावत हमारे घर पर होगी। देगें चढ़ेंगी, ज़र्दा, पुलाओ, नान, मिठाइयाँ खाई जाएँगी।"

"शादी कब होगी ?"

"बस ! इस महीने की पन्द्रह तारीख को।"

"दस दिन बाद ?"

"हाँ, और तुम्हारी ?"

"पिताजी कह रहे थे कि विवाह मेरे एम० ए० पास करने के बाद होगा।"

"मतलब छः साल बाद ?"

"हाँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन दोनों दोस्त सैर करके घर लौटे तो शरणदास जा चुके थे। लोकनाथ मुहल्ले के कुछ अन्य लोगों से बैठे बातचीत कर रहे थे। उनके सामने एक लाल रेशमी रूमाल में रुपयों की पोटली बँधी रखी थी। रूपलाल ने भगवानदास को देखा तो कह दिया, "अरे ओ भगवान! वह देखो! वह लाल रूमाल में क्या रखा है?"

दूसरे बैठे लोग हँसने लगे। भगवानदास और नूरुद्दीन प्रश्नभरी दृष्टि से लाला लोकनाथ की ओर देखने लगे तो उन्होंने कह दिया, "भगवान! वे घड़ियों वाले लाला तुम्हारी शादी की बात कर गए हैं। यह लड़का रोकने के लिए दे गए हैं। इक्कीस रुपए और चौदह छुहारे के जोड़े हैं।"

नूरुद्दीन ने भगवानदास की पीठ पर हाथ फेरकर कह दिया, "मुबारक हो दोस्त!"

लोकनाथ ने नूरुद्दीन से पूछ लिया, "नूरे! तुम्हारी भी तो शादी होनेवाली है?"

"हाँ बाबूजी! इस महीने की पन्द्रह तारीख को।"

"हाँ! तुम्हारा श्वसुर आया था और बता गया है।"

"क्या कहता था?"

"कुछ नहीं। कुछ रुपए की मदद माँग रहा था।"

"किसलिए?"

"भाई, शादी में कुछ तो खर्च होता ही है।"

नूरुद्दीन को उधार लेकर शादी करने की बाद पसन्द नहीं आई। उस दिन वह घर गया तो अपनी माँ से कहने लगा, "अम्मी! सुना है, कम्मो का बाप लड़की की शादी करने के लिए रुपए उधार ले रहा है।"

"तो?"

"यह ठीक नहीं, अम्मी! पहले ही गुज़र नहीं होती। अब कर्ज़ा लेगा तो उतारेगा कैसे?"

"पर बेटा! हम इसमें क्या कर सकते हैं?"

"उनको मना कर देना चाहिए।"

"कौन करे! हम कुछ कहने जाएँगे तो वह इसमें बेइज़्ज़ती मानेगा।"

नूरुद्दीन अपने पिता की तरह कार्य-कुशल था। उसने इसके लिए एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

योजना सोची । वह उठकर बाप के पलंग के नीचे रखे संदूक में से रुपए निकालने चल पड़ा । माँ खाना बना रही थी । उसकी समझ में नहीं आया कि वह क्या करने जा रहा है । वह पहले भी सन्दूक में रुपए रखने और निकालने जाया करता था । खुदाबख्श किसी काम से बाज़ार गया हुआ था । नूरुद्दीन ने पाँच सौ रुपयों के नोटों का बंडल निकाल जेब में रखा और घर से निकल गया । वह सीधा अपने श्वशुर के मकान पर पहुँचा और दरवाज़ा खटखटाने लगा ।

सादिक के मकान की ऊपर की मंजिल से कम्मो ने झाँककर देखा । नीचे गली में अँधेरा था । रात के नौ बज रहे थे । कम्मो के मुख पर घर के दीपक का प्रकाश पड़ रहा था । नूरुद्दीन ने पहचान लिया । मगर कम्मो ने नीचे अँधेरे में खड़े नूरुद्दीन को नहीं पहचाना । उसने पूछ लिया, "कौन है ?"

"अपने अब्बा को नीचे भेजो !"

कम्मो ने अभी भी नहीं पहचाना । उसने खिड़की से पीछे हटकर अपने वालिद को कह दिया, "नीचे कोई है, आपको बुला रहा है ।"

सादिक नीचे उतर दरवाज़ा खोल, पूछने लगा, "क्यों भाई ! कौन है ?"

"मैं हूँ ।"

"तुम कौन ? नूरा ! अरे, तुम यहाँ किसलिए आए हो ?"

"आपसे एक बात करनी है ।"

"तो भीतर आ जाओ । कोई देख लेगा तो बदनामी होगी ।" उसने नूरुद्दीन को बाँह से पकड़ दरवाज़े के अन्दर कर लिया । घर की सबसे नीचे की मंजिल में बैठक थी । बैठक खोली गई । आले में माचिस रखी थी । सादिक ने माचिस जलाकर, वहीं रखी एक मोमबत्ती जला दी । दोनों एक मैली-सी दरी पर बैठ गए । सादिक प्रश्न-भरी दृष्टि से देखता हुआ पूछने लगा, "अच्छा बेटा ! बताओ, क्या काम है ?"

"आप उस दिन अब्बाजान से खर्चे की बाबत कहने गए थे ।"

"बात यह है नूरुद्दीन ! तुम लोग अब ठेकेदारी करते हो । मैं तो दफ्तर में कलम ही घिसता हूँ । चालीस रुपए मिलते हैं । चार रुपए वहीं प्रॉविडेंट फंड में कट जाते हैं । बाकी छत्तीस रुपए में तो मुश्किल से खाना-पीना चलता है । फिर भी बेटा ! कुछ तो करूँगा ही । तुम अपने दोस्तों को ला सकते हो । बारात को मिठाई तो दूँगा ही ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बाबूजी ! मैं जानना चाहता हूँ, कितना खर्च करने वाले हैं आप ?"

"अभी तो दो-ढाई सौ रुपए में काम पूरा कर दूँगा । एक सौ रुपया अपने प्राविडेंट फंड में से उधार मिल जायेगा । एक-डेढ़ सौ और इधर-उधर से हो जायेगा ।"

"मैं यह कहने आया हूँ कि न तो आप प्रॉविडेंट फंड से लीजिये, न ही इधर-उधर से उधार लीजिये ।"

"तो फिर काम कैसे चलेगा ?"

"खुदा देगा । आप उधार मत लीजिए । कुछ-न-कुछ इन्तज़ाम हो जायेगा । देखिये बाबूजी ! मेरा कहा मानिये, कम-से-कम इस शादी के लिए कुछ भी उधार लेंगे तो मैं शादी रोक दूँगा ।"

"क्यों ?"

"बस यही बात है ।" इतना कहकर नूरुद्दीन उठ खड़ा हुआ और बोला, "अब मैं चलता हूँ । शादी से पहले आपसे मिलूँगा ।"

वह बैठक से बाहर को चला तो सादिक ने फूँक मारकर मोमबत्ती बुझा दी । नूरुद्दीन लौट पड़ा और कहने लगा, "देखिये ! यह मेरी आपसे इल्तज़ा है । कर्ज़ बहुत बुरी बला है । इसको मत लीजिये ।"

नूरुद्दीन बैठक के बाहर आ गया । सादिक उसको देखता रह गया ।

मकान की सीढ़ियों पर कम्मो और कम्मो की माँ खड़ी थीं । सादिक ने बैठक का दरवाजा बन्द किया और ऊपर जाने लगा तो कम्मो की माँ ने पूछ लिया, "क्या कहता था, वह ?"

सादिक ने कहा, "कुछ नहीं, यों ही ।"

अगले दिन बैठक घर की सफाई करते समय कम्मो की माँ को नोटों का एक बंडल मिला तो वह समझ गई कि नूरा छोड़ गया है । उसने कम्मो के वालिद को नीचे बैठक में बुला लिया और उसको नोटों की थई दिखाकर कहा, "यह यहाँ मोमबत्ती के पास पड़ी थी ।"

सादिक भी उन नोटों को देख, भौंचक्का रह गया । उसकी समझ में भी यही आया कि नूरुद्दीन इसे रख गया है । कम्मो की माँ ने कह दिया, "यह उसको वापस कर आओ ।"

"शादी के बाद वापस कर दूँगा । अभी रहने दो ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो इसमें से ही खर्च करोगे ?"

"करूँगा तो सही, लेकिन बाद में इसमें ाल भी दूँगा ।"

: ३ :

नूरुद्दीन की शादी मैट्रिक का परीक्षाफल घोषित होने से पहले हो गई । बारात नहीं चढ़ी । नूरुद्दीन ने अपने वालिद को कह दिया, "जब वहाँ खाना-पीना नहीं होने वाला तो फिर बारात की क्या जरूरत है ?" जैसा खुदाबख्श ने कहा, वैसा ही सादिक ने मंजूर कर लिया ।

निश्चित तिथि को खुदाबख्श अपने बहुत ही समीप के दस सम्बन्धियों को लेकर सादिक के घर पहुँच गया । मुल्ला वहाँ आया हुआ था । उसने निकाह पढ़ाया और सादिक ने दस कागज़ के लिफाफों में एक-एक सेर मिठाई भर कर दस मेहमानों को दे दी । एक ज़र्दे की और दो मिठाई गुलभिस्त देकर लड़की को विदा कर दिया । उसी सायंकाल खुदाबख्श के घर दो सौ मेहमानों की दावत थी । पाँच देगें पुलाओ और गोश्त कोरमा की बनीं और तन्दूर से एक ढेर नान बनवाकर मँगवाए गए । खूब खाना-पीना हुआ । खुदाबख्श का मुहल्ले के कई हिन्दुओं से मेल-जोल था । उन सबके घर उसने मिठाई बँटवाई ।

भगवानदास के पिता के घर बकरे का कच्चा मांस और कच्चे चावल, मैदा, सूजी, चीनी, नमक-मिर्च सब कच्ची रसद पहुँच गई । लोकनाथ की पत्नी निरामिष भोजन करती थी । इनके घर मिठाई भी आई । स्त्री-वर्ग मांस नहीं खाता था । मिठाई उनके लिए थी ।

नूरुद्दीन अपनी शादी के कई दिन बाद अपने दोस्त भगवानदास से मिलने आया । भगवानदास उसको देखकर हँसने लगा । बैठक में दोनों अकेले थे ।

नूरुद्दीन ने पूछ लिया, "हँसते क्यों हो ?"

"फुरसत मिल गई है, बीवी से ?"

"हाँ ! वह आज अपनी माँ के घर गई हुई है ।"

"तो चित्त बहुत उदास हो रहा है ?"

"दोस्त ! घर की रोशनी चली गई मालूम होती है । इसलिए यहाँ चला आया हूँ ।"

"बहुत प्यार है उससे ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत अच्छी है, वह ।"

"सुना है, कल इम्तिहान का नतीज़ा निकलने वाला है ।" भगवानदास ने बात बदल दी ।

"मेरा नतीज़ा तो निकला हुआ है ।"

"क्या ?"

"मैं फोर्थ डिविज़न में पास हूँ ।"

दोनों हँसने लगे । नूरुद्दीन ने कहा, "मैं सोचता हूँ कि तुम भी पढ़कर क्या करोगे ? अपने पिताजी से कहो, कोई काम करा दें तुमको ।"

"इस बात की चर्चा घर में हुई थी । पिताजी एक सौ चालीस रुपए वेतन पाते हैं । इसमें से बीस रुपए महीना वे जमा करते हैं । बीस रुपए महीना वे बीमा देते हैं । शेष सौ रुपए में हम घर का खर्च चलाते हैं । अभी तक तो काम चलता रहा है, मगर मैं कॉलेज में दाखिला लूँगा तो कम-से-कम पच्चीस रुपए महीने का खर्च मेरा बढ़ जाएगा । मेरे कपड़े और पुस्तकों आदि का खर्च पृथक् होगा । पिताजी विचार कर रहे थे, वह कहाँ से आएगा । कारोबार के विषय में भी विचार किया गया है । क्या काम किया जाए, पूँजी कहाँ से आए ? पूँजी का प्रबन्ध कर भी लें तो कारोबार चल सकेगा क्या ?

"पिताजी कहते हैं कि उनके बाबा कानूनगो थे । उनके पिता म्यूनिसिपल कमेटी में तीस रुपए महीना के मुहर्रिर थे और अब वे लाट साहब के दफ्तर में क्लर्क हैं । हमारे खून में कारोबार करने का स्वभाव ही नहीं और अगर मुझको कोई दुकान वगैरा करवाई गई तो मैं उसको चला नहीं सकूँगा ।"

नूरुद्दीन खिलखिलाकर हँस पड़ा । फिर कहने लगा, "भगवान ! तुम हिन्दू लोग खूब सोचते हो । देखो ! मेरे बाबा मज़दूर का काम करते थे । छः आना रोज मज़दूरी पाते थे । मेरे अब्बा राजगीरी करने लगे और डेढ़ रुपया रोज़ से काम आरम्भ कर, ढाई रुपए तक लेते रहे थे । अब डेढ़-दो वर्ष से वह ठेकेदारी करने लगे हैं । अब मैंने अपनी ठेकेदारी का नाम 'प्रीमियर कन्स्ट्रक्शन कम्पनी' रख लिया है । इस काम में तरक्की करने को बहुत स्थान है ।"

"जो काम बाप-दादाओं ने नहीं किया, वह मैं कैसे कर सकूँगा ! इसी विषय में बातचीत होती रही है ।"

"पर, भगवान ! यह भी तुम्हारे माता-पिता ने कभी सोचा है अथवा नहीं कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनकी दादी की दादी चूल्हा सेंकती हुई मरी और उसके बाद सब घर की औरतें रोटी और सलूना ही बनाती रही हैं। अब तुम लोग भला रोटी क्यों नहीं बनाते? तुम लोग कलम क्यों घिसने लगे हो?"

"यह बात नहीं, दोस्त! औरतें औरतों का काम करती हैं और मर्द मर्दों का।"

"पर मेरी बीवी तो कहती है कि वह चूल्हा नहीं फूँकेगी।"

"तो क्या करेगी?"

"रोटी बनाने के लिए नौकरानी रखेगी। वह उर्दू पढ़ती है। नावल पढ़ने का उसको बहुत शौक है। अभी तो नई विवाह कर आई है। माँ उससे काम नहीं लेती, मगर वह, माँ के बर्तन साफ करने से हुए गन्दे हाथ देख, कह रही थी कि चौका-वासन के लिए एक खादिमा रख लेनी चाहिए।"

"परन्तु, वह काम तो घर का ही करेगी?"

"नहीं, भगवान! वह घर में मलिका बन, हुकूमत करेगी। अभी से वह मेरे छोटे भाई रमज़ान की अंग्रेजी की किताब पढ़ने लगी है और कहती है कि दो साल में हमारे ठेकेदारी का हिसाब-किताब रखने लगेगी।"

"और रोटी इत्यादि?"

"अभी तो अम्मी बनाती हैं, फिर कोई नौकरानी रखी जाएगी।"

भगवानदास विचार करता था कि एक बाबू की लड़की खुदाबख्श के घर में बाबूगिरी करने आई है। इस विचार के आते ही अब हँसने की बारी भगवानदास की थी। उसने कह दिया, "नूरे! तुम्हारी बीवी तो उस बात को ही सिद्ध कर रही है, जो मेरे पिताजी कहते हैं। वह क्लर्क की लड़की, क्लर्क का काम करेगी। मिस्त्री के घर में दफ्तर खोल देगी।"

नूरुद्दीन की समझ में बात आई तो वह भी हँसने लगा।

अगले दिन परीक्षाफल निकला। भगवानदास प्रान्त में तीसरे नम्बर पर रहा और वजीफा पा गया। घर में बधाइयाँ देने वाले आने लगे। बधाई देने के लिए आने वालों को मिठाई बँटने लगी। भगवानदास का श्वसुर शरणदास भी आया और बधाई के साथ एक थाल लड्डुओं का तथा ग्यारह रुपए दे गया। इस प्रकार भगवानदास के वजीफा पा जाने की प्रसन्नता में उसके किसी कारोबार में लगने का विचार विलीन हो गया और समय पर वह गवर्नमेंट कॉलेज में भरती हो गया। उसने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्टर बनने के विचार से इंटर में साइंस ले ली।

जब तक भगवानदास इंटर पास कर मेडिकल कॉलेज में प्रविष्ट हुआ, नूरुद्दीन के घर एक लड़का पैदा हो चुका था। नूरुद्दीन ने अपने पुराने मकान को गिरवाकर उसकी जगह पर नया मकान बनवाना आरम्भ कर दिया था। दूसरी तरफ लोकनाथ को लड़के की पढ़ाई का खर्च देने में कठिनाई अनुभव होने लगी थी। भगवानदास का एक भाई और एक बहन थी। बहन का विवाह हो चुका था। भाई अब स्कूल में पढ़ता था। उसका भी न्यूनाधिक खर्च होने लगा था।

इन्हीं दिनों लोकनाथ का लाट साहब के दफ्तर से सरकारी निर्माण विभाग में तबादला हो गया। उसने एक दिन अपने सुपरिण्टेण्डैंट से अपनी कठिनाई का उल्लेख किया था। सुपरिण्टेण्डैंट ने मेहरबानी कर, उसका तबादला करा दिया और इस दफ्तर में पहुँचते ही लोकनाथ की तली गरम होने लगी। इससे घर का खर्च सुभीते से चलने लगा।

भगवानदास मेडिकल कॉलेज की थर्ड ईअर में पहुँचा तो नूरुद्दीन के एक लड़की हो गई। नूरुद्दीन और भगवानदास में दोस्ती केवल बनी ही नहीं रही, प्रत्युत और भी गहरी हो रही थी। जब से लोकनाथ सरकारी निर्माण विभाग में गया था, नूरुद्दीन उनकी बैठक में रोज एक-आध घण्टा आता रहता था और अब तो वह अपनी बीवी को भी भगवानदास की माँ से मिलाने के लिए ले आता था। नूरुद्दीन की पत्नी ने अपने पति के घर में आने के पहले महीने में ही अपना नाम बदल लिया। कम्मो के माँ-बाप और खुदाबख्श ने इस पर आपत्ति की । मगर कम्मो ने हठ किया और उसका नाम कम्मो से करीमा हो गया।

करीमा घर से बाहर बुर्का पहनकर निकलती थी। मगर जैसे अपने घर में वह अपने श्वसुर से परदा नहीं करती थी, वैसे ही वह भगवानदास और लोकनाथ से भी परदा नहीं करती थी। भगवानदास समझ गया कि नूरुद्दीन का पत्नी का चुनाव बहुत श्रेष्ठ है। सत्य ही करीमा बहुत सुन्दर थी।

नूरुद्दीन और करीमा का लोकनाथ के घर आना-जाना बे-मतलब नहीं था। नूरुद्दीन के कहने पर और खुदाबख्श ने अपने लोकनाथ से पुराने सम्बन्धों के कारण लोकनाथ का 'प्रीमियर कन्स्ट्रक्शन कम्पनी' में दो आने का हिस्सा रख लिया। इससे लोकनाथ का हाथ और भी खुल गया और साथ ही खुदाबख्श को सरकारी काम मिलने लगा। डेढ़ लाख की इमारत का एक काम इस कम्पनी को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिला तो नूरुद्दीन ने लोकनाथ के सम्मुख एक प्रस्ताव कर दिया।

"बाबूजी!" उसने कहा, "आपका मकान भी अब नया बन जाना चाहिए।"

"क्यों?"

"करीमा कहती है कि भगवान भापा डॉक्टर बनकर आयेगा तो रोगी देखने के लिए जगह होनी चाहिए। आपके घर में तो जगह है नहीं।"

"ओह! तो इस बात की चिन्ता करीमा को होने लगी है?"

"हाँ! फिर भाभी आएगी तो उसके सोने-बैठने को अलहदा जगह चाहिए। डॉक्टर की बीवी और धनी सेठों की लड़की को अगर अलहदा जगह नहीं मिली तो माँजी से लड़ाई हो पड़ेगी।"

"भाई, भगवानदास की माँ ने तो कभी इस बात पर अपनी सास से झगड़ा किया नहीं था।"

नूरुद्दीन इस बात को समझ नहीं सका परन्तु उसने इसकी और अधिक व्याख्या जानने का यत्न भी नहीं किया। वह अपनी बात जानता था। विवाह के पश्चात् पहली ही रात उसकी बीवी ने उसकी माँ से कह दिया था कि वह रात को अलहदा कमरे में सोयेगी। घर में नीचे की मंजिल पर घर का कूड़ा-करकट पड़ा रहता था। शादी के अवसर पर खाना-पीना करने के लिए नीचे के कमरे खाली कराए गए थे। रात के वक्त उसने नीचे की मंजिल पर एक कमरे पर अधिकार कर लिया था और नूरुद्दीन को, अपने सास-श्वसुर के देखते-देखते उस कमरे में ले जाकर भीतर से कुंडा चढ़ा लिया।

यह दिक्कत तो एक दिन ही रही। अगले दिन खुदाबख्श ने ऊपर की मंजिल पर अपने सोने का कमरा अपने लड़के और बहू के हवाले कर दिया और खुद नीचे के कमरे में जाकर रहना शुरू कर दिया। फिर जब नया मकान बना तो उसने अपने वालिद के एक दोस्त ड्राफ्ट्समैन से घर का नक्शा बनवाया था। उसमें अपने सोने का कमरा, अपनी सहेलियों से मिल-बैठने का कमरा, अपने देवर के पढ़ने का कमरा सब पृथक्-पृथक् थे। घर में रसोई-घर और गोदाम का भी प्रबन्ध था।

जब खुदाबख्श का घर बन गया तो उसकी सास को अनुभव हुआ कि करीमा बहुत ही समझदार लड़की है और उसने घर का सब प्रबन्ध उसके हाथ में दे दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

R 089·9143
GUR-M
 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीमा ने अपने घर के बाहर अपने श्वसुर और पति के कारोबार में भी हाथ बँटाना शुरू कर दिया था। उसने मेहनत कर अपने वालिद सादिक से हिसाब-किताब रखने का ढंग सीखा और फिर सब काम अपने हाथ में ले लिया। नूरुद्दीन तो केवल काम के स्थान पर लिखा-पढ़ी करता था, दफ्तर का काम करीमा करती थी। जो काम खुदाबख्श ने लकीरें खींच-खींचकर आरम्भ किया था, वह अब नियमित रूप से कैश-बुक, लैजर, स्टॉक-बुक में लिखा जाता और हानि-लाभ के चिट्ठे बनने लगे थे।

167966

लोकनाथ के घर में वह दिक्कत तो नहीं थी, जो करीमा को अपने घर से विवाह के बाद दिखाई दी थी। फिर भी जो सुख-सुविधा उसने अपने नए घर में बनवा ली थी, वह वहाँ पर अभी नहीं थी। भगवानदास की माँ सुबह पाँच बजे उठती थी और सबसे पहले बच्चों को स्कूल के लिए तैयार करती थी। उनको नहला-धुला, कपड़े पहना, प्रातः का अल्पाहार करा स्कूल भेजती। फिर अपने पति को दफ्तर के लिए तैयार कराती। तत्पश्चात् वह स्वयं स्नानादि से निवृत्त हो, भोजन करती। नित्य उसको भोजन करते समय ग्यारह बज जाते थे। एक दिन करीमा जब उस समय इनके घर आयी, तो भगवानदास की माँ को स्नान करते देख, पूछने लगी, "माताजी, अभी सुबह से कुछ खाया-पीया है या नहीं?"

"नहीं! अभी नहाई हूँ। अब अपने लिए दो रोटी सेंक लूँगी।"

"तो अभी तक कुछ नहीं खाया?"

"देखो बेटी! बच्चे साढ़े छः बजे स्कूल जाते हैं। उनको पाँच बजे उठा, नहला-धुला, खिला-पिला तैयार कर देती हूँ। वे साढ़े छः बजे जाते हैं तो फिर भगवानदास के पिता जाग पड़ते हैं। पहले उनको हुक्का ताज़ा करके देती हूँ। जब तक वे हुक्का पी, नहाने-धोने के लिए तैयार होते हैं, मैं उनके लिए पानी गरम करती हूँ। वे इस गरमी के मौसम में भी गरम पानी से नहाते हैं। उनको 'वाय' का रोग है। ठंडा पानी उनको सुहाता नहीं। वे नहाते हैं तब तक उनके लिए भोजन तैयार कर लेती हूँ। वे खाते हैं। फिर हुक्का पीते हैं। तत्पश्चात् कपड़े पहनते हैं और फिर दफ्तर के लिए जाते हैं। उनके चले जाने के बाद ही मुझको नहाने-धोने की फुरसत मिलती है। साढ़े नौ बजे से अब मैं स्नान करके खाली हुई हूँ।"

"माताजी! यह इन्तजाम तो ठीक नहीं। देखिए मैं अपने घर में क्या करती हूँ। मेरा देवर रमज़ान भी स्कूल पढ़ने जाता है। उसको भी घर से साढ़े छः बजे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाना होता है। मैं रात को तन्दूर से छः-सात नान मँगवा लेती हूँ। प्रातः दो मिनट चूल्हा जलाने में लगते हैं। रमज़ान खुद जला लेता है और नान में घी-शक्कर लगा, गरम करके खा जाता है। वह नया मकान बनने से पहले बाजार में लगे नल में नहा लिया करता था। अब घर में नल लगा है। वह वहाँ नहा लेता है। मुझको उसके लिए कुछ भी नहीं करना पड़ता। रमज़ान के बाद मैं नहाती हूँ। जब मैं पाक-साफ़ को निकलती हूँ, रमज़ान स्कूल चला गया होता है। मैं नहाकर रात का पड़ा सलूना गरम कर देती हूँ और उसके साथ और कभी घी-शक्कर से नान खाकर बाप-बेटा अपने काम पर चले जाते हैं। मेरे श्वसुर तो आठ दिन में एक दिन नहाते हैं, मगर मैंने उनके लड़के को नहाने की आदत डाल दी है और अब वे रोज नहाते हैं।

"मेरी सास को अभी भी देरी से उठने की आदत है। वे बिस्तर पर ही चाय पीती हैं। जब बाप-बेटा काम पर चले जाते हैं और मैं सुबह का नाश्ता कर लेती हूँ, तो उनके पीने के लिए चाय ले जाती हूँ। वे बिस्तर में ही चाय पीती हैं, और फिर आराम से उठती हैं। वे भी मेरे श्वसुर की तरह हफ्ते में एक दिन ही नहाती हैं। तब वे भी नान और रात के सलूने से या घी-शक्कर से नाश्ता कर लेती हैं। वे खा-पीकर फिर सो जाती हैं और मैं उनके दफ्तर का हिसाब-किताब ठीक कर देती हूँ। दोपहर के एक बजे हम साग-भाजी से रोटी खाती हैं। यह रोटी और साग-भाजी नौकरानी बनाती है। मैं खाने के बाद सोती हूँ और तीसरे पहर पढ़ती हूँ। उर्दू का अखबार पढ़ती हूँ या कोई अंग्रेजी की किताब पढ़ लेती हूँ। साढ़े पाँच बजे बाप-बेटा काम से लौटते हैं। उनके आने पर नौकरानी चाय बनाती है और बाजार से मिठाई, बिस्कुट वगैरा मँगवाकर चाय पीते हैं। बाप तो आराम करता है और बेटा दिन-भर का हिसाब मुझको बता देता है जो मुझको अगले दिन रजिस्टरों में लिखना होता है।

"रात के आठ बजे हम रात का खाना खाते हैं। पेट भरकर खाते हैं और फिर गहरी नींद सोते हैं। मेरे श्वसुर कभी मिलने वालों से मिलने बैठक में जा बैठते हैं।"

"नौकरानी को क्या तनखाह देती हो ?"

"बीस रुपए और रोटी-कपड़ा।"

"बहुत ज्यादा देती हो।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माताजी ! मैं इस कीमत से कहीं ज्यादा का काम कर देती हूँ ।"

"क्या काम करती हो ?"

"उनके मुंशी का काम करती हूँ । फिर रोज़ तीन-चार घण्टे पढ़ती हूँ । इससे मेरे दिमाग में नई-नई बातें पैदा होती हैं । उनको करने से बहुत सुख मिलता है ।"

"यह हमसे नहीं हो सकता । एक तो भगवान के पिता हुक्का पीते हैं । दूसरे, वे अपने आप अपना काम कर नहीं सकते । तीसरे, हम रात की बासी रोटी नहीं खा सकते । हमारे खाने में जब तक चटनी, अचार, मिर्च-मसाला और घी न पड़ा हो, बच्चों के गले से नीचे उतरता नहीं । सबसे बड़ी बात तो यह है कि हम इतना ज्यादा नौकर का खर्च नहीं दे सकते ।"

भगवानदास की माँ रामदेई की समझ में करीमा की बात नहीं आई । उसकी जीवन-मीमांसा भिन्न थी । वह स्वयं भी क्लर्क की लड़की थी । अब क्लर्क की पत्नी और क्लर्क की ही पतोहू बनकर यहाँ आई थी । दोनों स्थानों पर मर्द नौकरी करते थे । महीने के बाद तनखाह ले आते थे । वे सुबह पाँच बजे उठें, चाहे सात बजें उठें, उनके वेतन में वृद्धि नहीं होती थी । ठीक दस बजे दफ्तर में पहुँचना होता था । ठीक चार बजे फाइलें बन्द कर देने का नियम था । बीच में एक से दो तक विश्रान्ति होती थी । घर काम लाने की आवश्यकता नहीं थी । घर लाकर काम करने का कुछ मिलता नहीं था ।

: ४ :

करीमा अपने पति के मित्र के घर में कोई भी परिवर्तन कर सकने में असफल हुई तो उसने ही अपने घरवाले से कहा था कि वह अपने दोस्त के बाप का नया घर तामीर करवाने की राय कर दे । नूरुद्दीन का कहना था, "मगर वे इतने कंजूस हैं कि एक पैसा खर्च करना नहीं चाहते ।"

"यह बात नहीं । वे कंजूस हैं या नहीं, यह तो मैं जानती नहीं; मगर वे जीना नहीं जानते । उनको चीज़ों की कीमत का इल्म नहीं । मैं चाहती हूँ कि उनको इस बात का इल्म कराने के लिए उनका नया मकान बनवाना चाहिए ।"

"मगर रुपया तो उनका खर्च होगा ?"

"वह अभी आप अपने पास से खर्च कर दीजिए, बाद में मिल जाएगा ।"

"यही तो मुश्किल है । कैसे मिल जाएगा ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"देखिए जी ! मैं जानती हूँ, यह मिलना मुश्किल है । आपने मेरी शादी के लिए मेरे वालिद साहब को कुछ दिया था । मेरी माँ ने तब कहा था कि वह रुपया आपको वापस कर दिया जाए, मगर वालिद साहब बोले, 'विवाह पर जो कुछ खर्च होगा, वह उसमें डालकर, विवाह के बाद वापस कर देंगे ।' उसमें से मेरे कपड़ों वगैरा पर डेढ़-दो सौ खर्च किया गया था और मेरे वालिद साहब उसमें से निकाले रुपयों की कमी पूरी कर वापस नहीं कर सके । मगर आपको उन पाँच सौ के दाम से कहीं ज्यादा की चीज मिल चुकी है ।"

"तो तुम यह जानती हो ?"

"हाँ, मेरे सामने कई बार अम्मी और अब्बाजान में यह बात हो चुकी है । अब्बाजान हमेशा कह दिया करते हैं, अभी रुपया इकट्ठा नहीं हुआ, होते ही दे दूँगा । एक दिन इस पर बातचीत होते-होते खूब लड़ाई हो रही थी कि मैं पहुँच गई । मैंने उनको समझाया कि लेनदार तो झगड़ा करता नहीं और आप फिजूल में लड़ने लगे हैं ।

" 'तो वह तुमको कभी सुझाता भी नहीं ?' अम्मी ने मुझसे पूछ लिया ।

"मैंने कहा, 'नहीं ! कभी तो मुझको शक होता है कि रुपया रख जाने वाला कोई फरिश्ता था और आप उसकी नेकनामी मुफ्त में कर रही हैं ।' मेरे यह कहने पर अब उनका झगड़ा खत्म हो गया है । अब वे कभी नहीं झगड़ते ।"

"बहुत खूब ! और रुपया देने वाले का नाम भी नहीं रहा ?"

"बात यह है कि जब खरीदार किसी भी चीज को खरीदकर घर ले आता है, तब सौदा खत्म हुआ । इसमें खरीदने और बेचने वाले का नाम कहाँ रहा ? रहना चाहिए भी नहीं । बात तो अब खरीदार और चीज़ में रह गई है ।"

"तो उन पाँच सौ रुपए में, मैं कुछ खरीदकर लाया हूँ ?"

"मेरी समझ में तो कुछ ऐसा ही आया है ।"

"क्या खरीदकर लाया हूँ ?"

"सादिक साहब की लड़की कम्मो को । क्या अब उसे घर लाने का अफसोस लगने लगा है ?"

"नहीं, मैं तो यह विचार कह रहा हूँ कि सादिक मियाँ को ठग लिया हैं मैंने ! एक अनमोल शै को कौड़ियों के मोल पा गया हूँ ।"

"वह बाँदी आपके पाँच सौ रुपये का बदला चुकाने की कोशिश कर रही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
है। मेरा ख्याल है कि अपने दोस्त भगवानदास को पाँच-दस हजार का मकान बनवा देंगे तो यह सौदा भी घाटे का नहीं रहेगा।"

इस तरह समझा-बुझाकर करीमा ने नूरुद्दीन को लोकनाथ के पास भेज दिया। नूरुद्दीन ने प्रस्ताव रखा तो लोकनाथ ने इसको टालने का यत्न किया, मगर नूरुद्दीन ने बात नहीं छोड़ी। उसने कह दिया, "बाबूजी ! मैं आपको सत्य कहता हूँ कि भापा भगवान की अपनी प्रैक्टिस चलाने के लिए मकान और रोगी देखने का मतब (चिकित्सालय) साथ-साथ होने चाहिए। यह मकान पुराना है, यहाँ अँधेरा है और यह ढंग का बना भी नहीं। इससे कहता हूँ नहीं तो वह डॉक्टर बनते ही किसी भाड़े के मकान में चला जाएगा और जिन्दगी का मजा नहीं रहेगा। कहिए तो नए मकान का नक्शा बनवाऊँ ?"

"कितना रुपया लग जाएगा ?"

"नक्शा बन जाने के बाद ही इसका अन्दाज लग सकता है। इस पर भी छः-सात हजार तो लग ही जाएगा।"

"नूरे ! इतना रुपया हमारे पास नहीं है।"

"रुपये की आप फिक्र क्यों करते हैं ? मकान बन जाएगा। आप उसमें रहने लगेंगे। तब थोड़ा-थोड़ा कर दे दीजिएगा।"

"सूद क्या लोगे ?"

"हमारे मजहब में सूद लेना हराम है।"

"मगर मकान का किराया लेना तो हलाल है न। जब तक रुपया नहीं दूँगा, मकान का किराया समझकर ले लेना।"

नूरुद्दीन गम्भीरता से विचार करने लगा था कि हजरत वली-उल- इस्लाम ने यह किराये के लिए शरा क्यों नहीं बनाई ? सूद के लिए यह फरमान क्यों जारी किया है ? मगर वह न तो शरा की बहुत बातों को जानता था, न ही उसको इस विषय में बहुत सोचने की जरूरत पड़ी। उसने कह दिया, "आप छः महीने के लिए किसी दूसरे मकान में रहने का बन्दोबस्त करिए। बकाया मुझपर छोड़िए। मैं सब कर लूँगा।"

"भाई, मेरे पास छः-सात हज़ार रुपया मकान पर लगाने के लिए नहीं है।"

"आपकी कृपा से भगवान के भाई नूरे के पास है।"

नक्शा बन गया। मंजूर हुआ और जब तक भगवान डॉक्टरी की पढ़ाई के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आखिरी साल में पहुँचा, मकान बनकर तैयार हो गया। मकान में नया फर्नीचर लग गया। भगवानदास के लिए रोगियों को देखने का कमरा, एक कमरा रोगियों के लिए परीक्षा करने का और एक निरीक्षण का कमरा बन गया। यह सब मकान की नीचे की मंजिल पर था। पहली मंजिल पर भगवानदास और उसके पिता की बैठकें थीं तथा बच्चों के पढ़ने के लिए कमरे थे। दूसरी मंजिल पर स्त्री-वर्ग के रहने के कमरे थे और रसोई-घर था। उसके साथ ही गुसलखाना इत्यादि थे।

मकान को देख, सबसे अधिक प्रसन्नता भगवानदास के भाई-बहन नरोत्तम और मोहिनी को हुई थी। रामदेई को विदित था कि रुपया सब-का-सब नूरुद्दीन खर्च कर रहा है। इस कारण उसको न तो खुशी थी, न ही नाराज़गी। लोकनाथ तो यह समझा था कि यह उनकी सरकारी विभाग निर्माण में सिफारिश करने की रिश्वत मिली है। उन्हीं दिनों में इस कम्पनी को एक सड़क निर्माण का ठेका मिला था। बीस मील लम्बी पक्की सड़क बननी थी और इस पर लगभग एक लाख रुपया लगना था। प्रीमियर कन्स्ट्रक्शन कम्पनी का टेंडर काफी ऊँचा था और सरकारी अनुमान से अधिक था। इस पर भी एग्ज़िक्यूटिव इंजीनियर को किंचित् मात्र संकेत करने से वह मंजूर हो गया था। लोकनाथ का विचार था कि इस काम में उनको उसके मकान की लागत से कहीं अधिक लाभ मिलने वाला है। इससे वह यह मकान मिलना अपना अधिकार ही समझने लगा था।

मकान जब बन गया तो लोकनाथ ने पूछ लिया, "नूरुद्दीन ! मकान का हिसाब-किताब तो मिल जाना चाहिए।"

"क्या करेंगे हिसाब सुनकर ?"

"भाई ! इन्कम-टैक्स वालों को बताना पड़ेगा कि रुपया कहाँ से आया है और कैसे खर्च हुआ है ?"

"मिल तो सकता है। मगर आप लिख दीजिए कि हमसे उधार लेकर लगाया है।"

"पर कितना ?"

"अभी आप दस हजार लिख दीजिए।"

"तो क्या तुम अपने हिसाब में इसे दर्ज करोगे ?"

"हाँ, यह तो करना ही होगा। नहीं तो लोग समझेंगे कि आपको किसी नाजायज़ काम करने के लिए रिश्वत मिली है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस रुपये की अदायगी कब करनी होगी ?"

"यह रुपया भगवान देगा, आपको देने की ज़रूरत नहीं है।"

"वह कहाँ से देगा ?"

"बाबूजी ! भापा बहुत बड़ा डॉक्टर बनेगा। लाखों कमाएंगा और उसमें से यह दस हज़ार भी दे देगा।"

"भाई, नूरे ! देख लो, अभी उसकी शादी करनी है। उस पर बहुत रुपया खर्च करना है और फिर भगवान के ससुराल वाले बड़े आदमी हैं। उनकी लड़की का नाज़-नखरा भी होगा। मैंने तुमको पहले ही कहा था कि मकान-जैसी फ़ज़ूल बात के लिए मेरे पास रुपया नहीं है।"

"बाबूजी ! मैंने आपसे माँगा नहीं ! यह मेरे और भगवान के विचार करने की बात है।"

भगवानदास को इस उधार की चिन्ता थी। उसको जब पता चला कि दस हज़ार रुपया खर्च हो गया है तो उसने अपने पिता से पूछ लिया, "अब इस रुपये का भुगतान कैसे होगा ?"

लोकनाथ और रामदेई दोनों बैठे थे। भगवानदास के इस प्रश्न पर लोकनाथ ने कह दिया, "मैंने नूरुद्दीन को कह दिया था। अभी मुझे तुम्हारी शादी करनी है और मेरे पास मकान के लिए रुपया नहीं है।"

"तो उसने क्या कहा था ?"

"कहता था कि मुझको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है। भगवान जब कमाने लगेगा तो दे देगा।"

"तो मेरी कमाई पर पहले ही ऋण का बोझ लादा जा रहा है ?"

"वह कहता था कि तुमको अपनी प्रैक्टिस चलाने के लिए एक अच्छा मकान और चिकित्सालय चाहिए और उसने तुम्हारे लिए सब प्रबन्ध नीचे की मंजिल पर कर दिया है।"

"पर पिताजी ! मुझको तो यह उम्मीद दिलाई जा रही है कि मुझको कॉलेज में ही नौकरी मिल जाएगी।"

"सत्य ? यह तो बहुत खुशी की बात है। क्या वेतन मिलेगा ?"

"अभी तो कम ही मिलेगा। मगर तरक्की होते-होते दो हज़ार तक मिलने लगेगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"ठीक है बेटा ! तुम नौकरी कर लेना और कर्ज़ की बात मैं विचार कर लूँगा।"

लोकनाथ का विचार था कि एक-आध बड़ा-सा ठेका और दिलवा दिया तो बस मकान हज़म हो जाएगा।

: ५ :

करीमा भगवानदास की माँ से मिलने आया करती थी। अब तो वह मुहल्ले में चर्चा का विषय बनने लगी थी। मुहल्ले में एक ब्राह्मणी विधवा राधा रहती थी। वह गौरी की माँ कहाती थी। गौरीशंकर राधा का लड़का था और पुरोहिताई का काम करता था। उसका यजमानों के घर आना-जाना रहता था। गौरीशंकर की पत्नी सत्यवती भी पूजा-पाठ करा लेती थी। वह एक दिन रामदेई के घर कथा करने आई तो उसके साथ करीमा भी घर में प्रवेश करने लगी। करीमा उस समय बुर्का पहने हुई थी। सत्यवती घर में जाते-जाते रुक गई। करीमा ने उसे अपने से दूर हटते देखा तो हँस पड़ी, परन्तु रुकी नहीं और घर में चली गई। सत्यवती घर में गई तो, मगर उसको यह बात कुछ ठीक प्रतीत नहीं हुई। वह सीढ़ियाँ चढ़ती हुई विचार कर रही थी कि वह बच गई। एक मलेच्छ का स्पर्श होने वाला था। वह सत्यनारायण की कथा करने आई थी। घर से स्नान कर शुद्ध-पवित्र हो, वह चली थी। इस कारण वह एक मुसलमान औरत से छूते-छूते बची, तो अपना अहोभाग्य मानने लगी थी।

ऊपर की मंजिल पर वह पहुँची तो जिस कमरे में कथा होने वाली थी, उसके बाहर खूँटी से बुर्का टँगा देखा। यह करीमा ने कमरे में जाते समय उतार दिया था। कमरे में कुछ स्त्रियाँ बैठी थीं और सब खिलखिलाकर हँस रही थीं। उनमें वह करीमा सबसे जोर से हँस रही थी।

सत्यवती ने द्वार पर खड़े हो देखा और वहीं खड़ी रह गई। रामदेई ने कह दिया, "आओ पंडिताइन ! आ जाओ।"

"पूजा कहाँ होगी ?"

"इसी जगह, आ जाओ।"

"यहाँ कैसे हो सकती है ?"

"क्यों, यहाँ क्या है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्यवती अपने मन की बात बता नहीं सकी। करीमा का चाँद समान उज्ज्वल और अति सुन्दर मुख अभी भी उसकी ओर देखकर हँस रहा था। पंडिताइन के कहने पर कि पूजा यहाँ नहीं हो सकती, करीमा समझ गई। वह एकाएक उठी और भगवान की माँ से कहने लगी, "माँजी ! मैं फिर आऊँगी।" इतना कहक़र वह कमरे से बाहर निकलने लगी तो पंडिताइन के सामने आ खड़ी हो गई। पंडिताइन द्वार में खड़ी, पूजा किसी अन्य कमरे में करने के लिए कहने ही वाली थी। करीमा ने कह दिया, "पंडिताइन बहिन ! ज़रा रास्ता छोड़ दो।"

सत्यवती तो पहले ही एक ओर हट जाने वाली थी। इससे वह एक ओर हट गई। करीमा बाहर निकली और खूँटी से लटके बुर्के को उसने उतारा, पहना और सीढ़ियों से नीचे उतर गई।

रामदेई करीमा को रोकना चाहती थी, परन्तु वह पंडिताइन के साथ झगड़े के डर से चुप रही। पंडिताइन को सीढ़ियाँ उतरता हुआ बुर्का हँस रहा सुनाई दिया। इससे उ.सके क्रोध की मात्रा कुछ अधिक ही हुई थी।

पंडिताइन ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा, "यजमानिन ! इसको किस लिए बुला रखा था ?"

"बुलाया नहीं था। वह लड़के के दोस्त की बीवी है और हमारे घर में आती-जाती है।"

पंडिताइन ने विचार किया और यह समझ कि अब तो वह चली गई और कदाचित् अब वह इस घर में आयेगी ही नहीं। उसका विचार था कि इतनी बेइज़्ज़ती के बाद तो कुत्ता-बिल्ली भी घर से निकल जाते हैं। उसने अपने मन को तसल्ली दी। अतः वह पूजा पर बैठ गई और एक घंटा-भर पूजा तथा कथा सुनाकर, दान-दक्षिणा वसूल कर चल दी।

घर पर सत्यवती ने यही बात अपनी सास को बताई तो उसने कहा, "यह मुसलमान की बच्ची इनके घर में घुसी रहती है। मुझको तो दाल में कुछ काला प्रतीत होता है।"

"क्या काला हो सकता है ?"

"तुमने उसकी सूरत देखी है ?"

"हाँ।"

"कैसी लगी है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत ही सुन्दर है।"

"तो बस यही बात है। मुहल्ले की सब औरतें कह रही हैं कि भगवान की वह रखैल है।"

"क्यों, उसके अपना घरवाला नहीं है क्या ?"

"है तो। मगर कुत्ते ही हड्डी का स्वाद है न !"

"तो माँ ! शरणदास की पत्नी को कह दो न ? वे भी तो हमारे यजमान हैं। उनकी लड़की का हित भी देखना चाहिए।"

बात राधा की समझ में आ गई। उसको सूझ नहीं रहा था कि क्या करे ? भगवानदास अच्छा खूबसूरत जवान था। वह फुटबॉल का खिलाड़ी भी था। चलता था तो झूमता हुआ चलता था। राधा ने अपनी पतोहू का सुझाव मान लिया कि लोकनाथ के समधी से कहकर भगवानदास की शादी शीघ्र ही करा देना चाहिए, बस फिर यह लड़की भाग जाएगी।

उसी दिन वह शरणदास के घर जा पहुँची। शरणदास का लड़का रामकृष्ण घर पर ही था। शरणदास दुकान पर गया हुआ था। राधा पहुँची तो शरणदास की लड़की माला ने पंडिताइन को पाँव लागूँ कर पूछ लिया, "ताई, कैसे आई हो ?"

"माला ! माँ कहाँ है ?"

"ऊपर है। बुलाऊँ उसको ? कुछ काम है क्या ?"

"हाँ ! आई तो ऐसे ही थी, पर अब तुमको देखकर काम भी समझ में आ गया है।"

तब तक रामकृष्ण की बहू दयारानी अपने कमरे से निकली और पंडिताइन को देख कर बोली—"ताई ! आओ न।"

"राम हैं न अन्दर ?"

"हाँ ! मगर वे तो जा रहे हैं।"

राधा ने माला को कहा, "माला, जाओ। माँ को कहना पंडिताइन आई है। खाली हो तो आ जाए ?"

राधा दयारानी के साथ कमरे में गई तो रामकृष्ण जाने के लिए खड़ा हो गया। राधा ने कहा, "राम, ज़रा बैठो।"

रामकृष्ण ने खड़े-खड़े ही कहा, "हाँ बताओ ताई ! क्या कहती हो ?"

"मैं तो तुम्हारी माँ से केवल मिलने ही आई थी। मगर तुम्हारी बहन को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख विचार में पड़ गई हूँ। मैं पूछती हूँ इसका विवाह कब करोगे ?"

"ताई ! अगले वर्ष मई के महीने में भगवानदास की परीक्षा का परिणाम घोषित होगा तब विवाह कर देंगे।"

"पहले क्यों नहीं ?"

"हम तैयार हैं मगर लड़का नहीं मानता।"

"क्या कहता है ?"

"कहता है कि पढ़ाई में हर्ज होगा।"

"वाह ! भला यह कैसे ? पंडितजी पूर्ण ऋग्वेद कंठस्थ किए हुए थे। उनका विवाह तो बचपन में ही हो गया था। उनके घर में लड़के हुए तब भी वे मंत्र नहीं भूले। भला आजकल की पढ़ाई, वेद-मन्त्रों के मुकाबले में क्या है ?"

"तो ताई ! उन्होंने कुछ कहा है ?"

"उन्होंने से क्या मतलब ?"

"लड़के के माता-पिता से, और किनसे ?"

"वे बेचारे क्या कहेंगे ! आप ज़ोर देंगे तो वे मान जाएँगे।"

तब तक रामकृष्ण की माँ मायारानी और माला दोनों नीचे आ गईं। पंडिताइन ने कह दिया, "माला ! एक गिलास पानी तो लाओ।"

माला लौट गई। बात पुनः आरम्भ हो गई। राधा ने कहा, "माया बहन माला को देख मन में विचार आया कि यह अब जवान हो गई है। इसका विवाह हो जाना चाहिए।"

"परन्तु," राम ने पूछ लिया, "ताई, हम उन पर जोर कैसे डाल सकते हैं ?"

"उनको कहिए कि लड़का जवान हो रहा है। कहीं ऐसा न हो कि लड़के को कोई दूसरी ही फाँस ले। विवाह हो जाएगा तो बछड़ा खूँटे के साथ बँध जाएगा।"

"तो तुमने भी कोई बात सुनी है ?"

"बात यह है कि लड़का जवान है। अस्पताल में नर्सें और दाइयाँ बहुत घूमती रहती हैं। सुना है, इनकी जमात में कुछ लड़कियाँ भी पढ़ती हैं।"

"तुमको तो डर ही है, हमें तो कुछ और ही सुनाई दिया है।"

"क्या ?"

राधा समझ रही थी कि किसी मुहल्ले वाले ने उस मुसलमान छोकरी की बात बता दी है। वह स्वयं कोई बात कहकर अपने सिर पर इल्ज़ाम नहीं लेना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहती थी। इस कारण उसने विस्मय में ही पूछा।

इस समय माला जल लेकर आ गई। माया देवी ने अपनी लड़की को कह दिया, "माला! तुम ऊपर चली जाओ। देखो हम तुम्हारे विवाह की बातें कर रही हैं और तुमको यह बातें सुननी नहीं चाहिएँ।"

माला उलटे पाँव ही लौट गई। मगर जिस ढंग से बात कही गई थी। उससे तो माला के मन में उत्कट इच्छा उत्पन्न हो गई कि बात सुननी चाहिए। कमरे के बाहर परदा टँगा था। माला कमरे से निकल आई, मगर परदे से कान लगाकर भीतर होनेवाली बातें सुनने लगी।

भीतर माला की माँ राधा से कह रही थी, "सामने एक मुसलमान ठेकेदार रहते हैं। सुना है कि उनके घर की कोई लड़की वहाँ घुसी रहती है।"

"मगर वह तो भगवान के बचपन के दोस्त की बीवी है। वह तो तब से इनके घर में आती है, जब से उसकी शादी हुई है।"

राधा इस विषय में अपनी अनभिज्ञता प्रकट कर रही थी। वह जानती थी कि अगर लड़की शरीफ हुई तो व्यर्थ में उसके घरवाले से झगड़ा हो जाएगा और गौरीशंकर की जान आफ़त में आ जाएगी। इसलिए राधा ने कहा, "तुमने लड़की देखी है माया बहन!"

"हाँ, देखी है। बहुत ही सुन्दर है। रंग चाँद की तरह गोरा है।"

"परन्तु तुमको उसकी बाबत किसी प्रकार का शक नहीं होता? और फिर मैं तो भगवानदास के कॉलेज में जो आग सुलग रही है, उसके विषय में ही कह सकती हूँ। हमारे एक यजमान हैं सुधाकरजी। वे प्रोफेसर हैं। वे कुछ दिन पहले बीमार हुए तो उनकी पत्नी ने उनको हस्पताल में दाखिल करवा दिया। जब वे हस्पताल से निकले तो वहाँ से एक लौंडिया को साथ ले आए। अब उससे भी शादी कर ली है। पहली पत्नी बेचारी बहुत ही परेशान है।"

"मैं तो समझता हूँ," रामकृष्ण ने कह दिया, "अगर उसको किसी से विवाह करना है तो कर ले। हम माला के विषय में उसके बाद विचार कर लेंगे।"

"पर राम!" मायारानी ने कहा, "सात वर्ष हो गए हैं लोकनाथ की बीवी को खिलाते हुए। उस दिन तुम्हारे पिता हिसाब लगा रहे थे। दो हज़ार रुपए से ऊपर हम दे चुके हैं। वह सब फोकट में ही चला जाएगा।"

"तो यह बच कैसे जाएगा?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं बचाने की बात नहीं कर रही राम ! मैं तो यह कह रही हूँ कि इस बात की नौबत ही न आए।"

अब राधा ने और रंग चढ़ा दिया। उसने कहा, "मान लो वह किसी कृस्तान की बच्ची को न भी घर लाए, परन्तु उससे सम्बन्ध बना ले तो माला की मुसीबत बन जाएगी। शादी हो जाएगी। एक तो जवानी का जोश ठण्डा हो जाएगा, दूसरे दो घरों की देख-रेख हो जाएगी। तीसरे माला भी उसको कुछ समझा सकेगी। जितना जोर पत्नी का होता है, उतना तो माता-पिता का भी नहीं हो सकता।"

यह सुन सब गम्भीर हो गए। मौन भंग किया मायारानी ने। उसने कहा, "मैं कल भगवानदास की माँ से मिल आती हूँ। देखें, वह क्या कहती है ?"

"माँ ! जाना है तो विवाह का मुहूर्त्त निकलवाकर जाओ और फिर उन पर ज़ोर डालो।"

"अगर माता-पिता ने यह कह दिया कि लड़का मान जाए तो उनको आपत्ति नहीं होगी, तब ?"

"तो फिर मैं भगवानदास से मिल लूँगा। मैं आशा करता हूँ कि मैं उसको मना लूँगा।"

: ६ :

करीमा ने अपने घरवाले को उसके दोस्त के घर में घटी घटना बताई तो नूरुद्दीन ने कुछ चिन्ता व्यक्त की। करीमा ने उसे गम्भीर देखा तो पूछ लिया, "क्या हुआ है ? खामोश क्यों हो गए हो ?"

"यह तो ठीक नहीं हुआ।"

"क्या ठीक नहीं हुआ ?"

"यही कि वहाँ पर कुछ लोग तुमसे नफ़रत करते हैं।"

"मुझसे क्यों नफरत करेंगे ? मैंने उनका क्या बिगाड़ा है ?"

"तुम मुसलमान हो। ये हमको मलेच्छ समझते हैं।"

"तो समझने दो। मैं तो मलेच्छ हूँ नहीं। रोज नहाती हूँ। दातुन-कुल्ला भी करती हूँ। रोज धुले कपड़े पहनती हूँ। खुदा को याद करती हूँ। मलेच्छ तो वे हैं जो मुझसे परहेज करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह तो ठीक है, करीमा ! मैं कहता हूँ कि इससे तुम्हारी बेइज़्ज़ती जो हुई है।"

"देखिए जी, जैसे पंडिताइन ने मुझको देखा और दूर हट गई, मैंने ऐसा समझा कि भंगन सामने से एक तरफ हट जाती है। कभी वह हट नहीं सकती तो आवाज देकर उसको हटा दिया जाता है। ऐसा ही मैंने भी किया। जब मैं वहाँ से आने लगी थी तो मुझको उसे कहना पड़ा था कि वह मेरे लिए रास्ता छोड़ दे।"

यह सुन नूरुद्दीन हँस पड़ा। फिर कुछ गम्भीर होकर बोला, "यह अपने दिल को तसल्ली देने के लिए ठीक है, मगर दूसरे क्या समझते हैं, सवाल तो यही है।"

"जी नहीं। सवाल यह है कि हम क्या समझते हैं ? पंडिताइन ने मुझको क्या समझा है, इससे मुझको क्या ? मैं उसको अपने से घटिया समझती हूँ। मेरा रंग उससे गोरा है। नख्श तीखे हैं। मेरे कपड़े भी उससे ज्यादा साफ-सुथरे हैं। मेरे ख्यालात भी किसी तरह से गलीज़ (गन्दे) नहीं हैं। फिर कोई वज़ह नहीं कि वह मुझको नफ़रत के लायक समझे।"

"मगर ये हिन्दू, कम-से-कम इनमें से कुछ लोग बहुत ही बेवकूफ हैं।"

"पर मैं तो नहीं हूँ। एक बात और, जिनके घर मैं जाती हूँ, वे तो मेरे साथ बैठकर खाना भी खाते हैं।"

"अच्छा ऐसा करो। अब कल फिर जाना और देखना कि भगवान की माँ में कुछ फरक आया है ?"

इससे करीमा भी गम्भीर हो गई। फिर कुछ विचारकर कहने लगी, "अच्छा ! मैं कल जाकर पता करूँगी।"

अगले दिन करीमा गई तो भगवानदास की माँ के पास भगवानदास की सास बैठी थी। करीमा के आने पर रामदेई ने उसे बुलाकर उसको अपने पास बिठा लिया औरर कहा "जानती हो इनको ?"

"जी, इनके दीदार पहले भी किए हैं। ये आने वाली भावज की माँ हैं न ?"

"हाँ ! ये कहने आई हैं कि भगवान की शादी जल्दी कर देनी चाहिए।"

"शादी तो माताजी, करनी ही है। दो महीने पहले क्या और बाद में क्या ?"

"बेटा ! उसकी परीक्षा में अभी छः महीने पड़े हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो फिर क्या हुआ ? छः महीने भाभी हमारे पास रहेंगी ?"

"तो तुम भी चाहती हो ?"

"बिलकुल और फौरन । देखिए माताजी ! मन में तो भैया भी चाहते होंगे कि शादी हो जाए, मगर शर्म के मारे क्या कहें ? जब पिताजी ने कह दिया कि शादी इम्तिहान के बाद होगी तो वे क्यों कहते कि फौरन हो जाए ?"

"मगर पढ़ाई में तो हरज होगा है न ?"

"मैं तो समझती हूँ कि मुनव्वर के वालिद की शादी दसवीं जमात में इम्तिहान से पहले हो जाती तो वे इम्तहान में पास हो जाते ।"

"तुम तो बिलकुल उल्टी बात कर रही हो ?"

"माताजी ! मैं समझती हूँ कि शादी के बाद दिमाग के बहुत से फतूर ठंडे पड़ जाते हैं और पढ़ाई अच्छी तरह हो सकती है । खराबी तो हद से ज्यादा सोहबत में है ।"

"यही तो बात है । इसको कैसे रोक सकते हैं ?"

"यह तो इनकी लड़की ही रोक सकेगी ।"

"तो क्या तुम अपने घरवाले को रोक सकी हो ?"

"हाँ माँजी ! वे हिसाब में फेल हुए थे और अब हिसाब में वे किसी भी बनिया को मात कर देंगे ।"

"ये कहती हैं," भगवानदास की माँ ने मायारानी की ओर संकेत कर कहा, "कि इनको अपनी छोटी लड़की की शादी करनी है । जानकी अब सोलह वर्ष की हो गई है । भगवान की बहू तो अठारह वर्ष की हो चुकी है । बिना बड़ी लड़की की शादी किए ये छोटी की शादी नहीं कर सकते ।"

"तो दोनों की इकट्ठी ही कर दें ।"

"यही तो कह रही हैं ।"

"माताजी, मान जाइए ।"

"तो ऐसा करो, नूरुद्दीन को कहकर भगवानदास को मना लो, हमको कोई आपत्ति नहीं हो सकती ।"

यह सुनकर भगवानदास की सास बोल उठी, "अगर हमको इजाज़त दें तो हम लड़के को तैयार करने का यत्न करें ।"

"लड़का आपका है । आप उसे समझाइए-बुझाइए, चाहे कान पकड़ कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राज़ी कर लीजिए।" रामदेई ने कह दिया।

मायारानी अति प्रसन्न हो, वहाँ से विदा हो गई। उसने करीमा को भी देखा था और उसकी बातचीत के ढंग से बहुत खुश हुई थी। वह प्रसन्न-वदन वहाँ से लौटी। उसको आशा हो गई थी कि विवाह हो जाएगा।

जब मायादेवी चली गई तो करीमा हँस पड़ी। इस पर रामदेई ने पूछ लिया "क्यों, हँसी क्यों हो ?"

"इसलिए कि भगवान भापा अब फँसे हैं। अभी तो वह औरतों से नफरत करते थे, अब मज़ा आएगा।"

रामदेई ने बात बदल दी। उसने पूछा, "कल की पंडिताइन वाली बात पर नाराज़ तो नहीं हो ?"

"मैं तो आपसे ही पूछने वाली थी। कल मैंने पंडिताइन को कहा था, जरा रास्ता छोड़ दो। इस पर उसके माथे पर त्योरी चढ़ गई थी। मैं उम्मीद करती हूँ कि मुझको खूब गाली दी होंगी।"

"नहीं ! गाली नहीं दी। मैं तो चाहती थी कि तुम भी बैठकर सुन लेतीं। मगर सब लोग एक समान समझदार तो होते नहीं।"

"हाँ माताजी ! इसलिए हम लोगों को, जो अपने को समझदार समझते हैं, उनकी अकल पर रहम करना चाहिए और उनकी बेवकूफियों पर हँस देना चाहिए।"

"अच्छा तो यह बताओ, भगवान की शादी कर देनी चाहिए ?"

"जब लड़की के माता-पिता कहते हैं तो कर देनी चाहिए। क्या हरज़ है ?"

लाला लोकनाथ को मनाने में कठिनाई नहीं हुई। भगवानदास को यह झंझट पसन्द नहीं था। उसने अपने माता-पिता को तो कह दिया था कि वह अभी छः महीने विवाह नहीं करेगा। मगर जब नूरुद्दीन रामकृष्ण के साथ उसको समझाने आया तो वह इन्कार नहीं कर सका। बात पक्की हो गई। विवाह की तारीख तय हो गई और दोनों ओर से तैयारियाँ होने लगीं। शरणदास ने दोनों लड़कियों का विवाह दो दिन के अन्तर पर कर दिया।

शरणदास ने बारातियों को बहुत खिलाया-पिलाया और लड़की को भूषण, वस्त्र और घर का फर्नीचर दिया। भगवानदास को नकद ग्यारह हज़ार दिया। यह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भी कह दिया कि जब वह प्रैक्टिस शुरू करेगा तो उसको इससे मोटर खरीदनी चाहिए।

बाजे-गाजे के साथ बहू की डोली लाई गई। दो दिन तक घर में धूम मची रही। सबसे अधिक प्रसन्नता का प्रदर्शन करीमा ने किया।

तीसरे दिन जब घर से सब मेहमान विदा हो गए तो रामदेई ने बहू से करीमा का परिचय करा दिया, "देखो माला! यह है करीमा, तुम्हारी देवरानी। भगवानदास का दिली दोस्त है नूरुद्दीन और यह उसकी बीवी और मेरी पतोहू है।"

माला ने सुना तो नाक चढ़ा ली। करीमा ने देखा तो हँस पड़ी। माला ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर उसकी तरफ देखा तो करीमा ने गम्भीर हो कहा, "माला बहन! अभी तो पहली बार मिले हैं। इससे अभी तो नफ़रत और मोहब्बत की कोई बात ही नहीं हुई। इसी से कह रही हूँ कि अभी इतना समझो कि मैं भी तुम्हारी बहन हूँ।"

"देखा है।" माला ने कह दिया।

"क्या देखा है?"

"इस गोरी खाल के पीछे काला मन है।"

"किस दूरबीन से देखा है? अच्छा सुनो! अपने घरवाले के सामने यह माथे पर बल मत लाना। आज सुहागरात है। झगड़ा किया तो जीवन-भर पछताओगी।"

माला को यह भविष्यवाणी तो समझ में तो आई, परन्तु इस पर विश्वास नहीं आया। उसने कहा, "मैं तुमसे ज्यादा पढ़ी-लिखी हूँ। तुमसे ज्यादा अक्ल रखती हूँ। आयु में भी तुमसे कम मालूम नहीं होती। इससे तुम हमारे कामों में दखल मत देना। नहीं तो ठीक नहीं होगा।"

"दखल तो दूँगी बहन! तुम मेरी मानना नहीं। समझदार बेसमझों की बात को सुनते हैं पर मानते नहीं।"

इतना कह वह मुसकराई और फिर भगवान की माँ से कहने लगी, "माला बहन भैया को सीधा कर देंगी। मैं बहुत खुश हूँ।"

उस दिन भगवानदास की हस्पताल में ड्यूटी थी। वह रात के साढ़े आठ बजे आया। पिछले तीन-चार दिन तो वह कॉलेज के काम में समय नहीं दे सका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

था। आज वह कॉलेज़ गया था और पढ़ाई के पश्चात् हस्पताल में भी गया। वहाँ से वह लौटा तो भोजन कर, अपने पढ़ाई के कमरे में जा बैठा और भीतर से कुण्डा चढ़ा लिया। दो घण्टा काम कर वह ग्यारह बजे सोने के लिए अपने सोने के कमरे में चला गया। वह अभी कपड़े बदल ही रहा था कि माला उठी और कमरे का दरवाजा भीतर से बन्द कर पलंग पर जा बैठी। कमरे में दो पलंग लगे थे। दोनों साथ-साथ लगे थे। ये दोनों पलंग विवाह पर मिले थे। दोनों पलंगों पर एकसमान बिस्तर था। इस कारण यह कहना कि कौन किसका बिस्तर है, कठिन था।

भगवान कपड़े बदल ही रहा था कि माला ने कह दिया, "बहुत देरी कर दी है?"

"देरी? नहीं, मैं समझता हूँ कि तुम कुछ जल्दी आ गई हो।"

"जल्दी आ गई हूँ? प्रतीक्षा करते-करते ऊब गई थी तो अपने आप यहाँ चली आई हूँ।"

"फिर भी छः महीने समय से पूर्व आ गई हो।"

माला की अब समझ में आया कि वह विवाह की बात कर रहा है। इस से उसके मुख पर मुसकराहट दौड़ गई। उसने कहा, "जी, वह तो आ गई हूँ। अब लौट नहीं सकती। मैं आज रात की बात कर रही थी।"

"ओह!" भगवानदास ने घड़ी देखते हुए कहा, "अभी तो ग्यारह बजे हैं। खैर, तुम सोई नहीं, यही गनीमत है। कितने बजे सो जाया करती थीं, अपनी माँ के घर में?"

"वहाँ तो नौ बजे सो जाते थे। सुबह पाँच बजे नींद खुल जाया करती थी, अब आज देंखे।"

"बहुत सोते हैं आप लोग। आठ घण्टे। यह तो बहुत ज्यादा है। इससे आदमी बीमार भी हो सकता है।"

"अभी तक तो हुई नहीं। अब डॉक्टर साहब के घर में बीमार हुई तो शर्म की बात है।"

"घर आने से क्या होता है? डॉक्टर की बात मानोगी तो डॉक्टर की जिम्मेवारी होगी। नहीं तो डॉक्टर बेचारा क्या करेगा।"

भगवानदास उसके पास ही पलंग पर बैठ गया। उसने अपनी जेब से एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अँगूठी निकाली और उसे माला के बाएँ हाथ की अँगुली पर चढ़ाते हुए बोला, "यह मेरी ओर से, नए जीवन में अपनी पत्नी के लिए प्रथम भेंट है। पसन्द आई है ?"

माला ने हाथ कुछ दूर रखकर, बिजली के प्रकाश में उसकी चमक देख कहा, "असली हीरा मालूम होता है।"

"जेवर परखने में तो बहुत समझदार मालूम होती हो।"

"माँ के पास कई अँगूठियाँ हैं, जिनमें हीरे लगे हैं।"

"चलो। एक तुम्हारे पास भी हो गई।"

"कितने की लाए हैं ?"

"अभी मूल्य नहीं चुकाया।"

"तो उधार लाए हो ?"

"नहीं; रुपया जमा करा आया हूँ। मगर अभी बिल नहीं बना।"

"ये सर्राफ भारी चोर होते हैं, आपको सावधान रहना चाहिए।"

"तो मूल्य चुकाने से पहले तुमसे पूछ लूँगा। तुम तो इस विषय में बहुत समझदार मालूम होती हो।"

"कहेंगे तो अपने पिताजी के जौहरी से दाम लगवा लेंगे।"

"नहीं। इसकी जरूरत नहीं। जितना भी मूल्य तुम आँकोगी, उतना मैं दे दूँगा। मैं समझता हूँ कि तुमको बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी है। अब सो जाएँ।"

"मगर सोने से पहले एक बात आपको माननी होगी।"

"हाँ, कहो ?"

"आपके दोस्त की बीवी है न ? क्या नाम है उसका ?"

"करीमा की बात कह रही हो ?"

"जी हाँ। मैं चाहती हूँ कि उसको इस घर में आने से मना कर दीजिए।"

"क्यो, क्या किया है उसने ?"

"इसके बताने की भी आवश्यकता है क्या ?"

"देखो माला ! यह घर मेरा नहीं है। मेरे माता-पिता का है। इसमें कौन आता है और कौन नहीं आता, मेरे अधिकार से बाहर है। हाँ, यह कमरा मेरा है। इसमें तुम चाहो तो वह नहीं आएगी। एक बात मैं और बता देना चाहता हूँ कि इस घर में जितना मेरा अधिकार है, उतने से ज्यादा तुम्हारा नहीं हो सकता।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तो यह बात माताजी से कहूँ ?"

"विचार कर लो। मेरी राय मानो तो इस कमरे से बाहर की बातों में दखल मत देना।"

इस बात से करीमा के विषय में माला को जो सन्देह था, वह कुछ पक्का ही हुआ था। साथ ही उसने यह समझ लिया कि अपने सास-श्वसुर से पृथक् मकान में रहना चाहिए। इसी से उसका अधिकार-क्षेत्र शयनागार से बाहर तक जा सकता है। उस रात इससे अधिक बात नहीं हो सकी।

अगले दिन हँसी-हँसी में नूरुद्दीन ने पूछ लिया, "बीवी कैसी है भगवान !"

भगवान को स्मरण था। उसने भी नूरुद्दीन की शादी के कुछ दिन बाद उससे पूछा था। नूरुद्दीन का उत्तर उसको स्मरण था। नूरुद्दीन ने कहा था, 'बहुत मज़ेदार है।' अब वही प्रश्न नूरुद्दीन के मुख से सुन, वह विचार करने लगा कि क्या बताए। वह रात के अनुभव को स्मरण कर, उसको प्रकट करने के लिए शब्द ढूँढ़ ही रहा था। एकाएक उसको बात समझ में आ गई। उसने कहा, "हरी मिर्च है।"

"हरी मिर्च ? क्या मतलब ?"

"बस, हरी मिर्च। देखने पर चखने को जी किया। चखने पर बहुत ही तीखी लगी। मगर छोड़ने की तबीयत भी नहीं थी। चखने पर अभी तक स्वाद आ रहा है। ज्यों-ज्यों समय व्यतीत होता है, उसका तीखापन कम हो रहा है और उसका स्वाद बढ़ रहा है। साथ ही फिर चखने को तबीयत कर रही है।"

नूरुद्दीन खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "मुझको भी अपनी बीवी की संगति की पहली रात याद है। मुझको वह खीर मालूम हुई थी। चम्मच भर-भरकर खाता रहा था और उसकी तृप्ति कई दिन तक रही थी। अब भी वह खीर ही मालूम होती है। रोज मिलती नहीं मगर जब मिलती है, खीर खाने की-सी तृप्ति होती है और उसका मीठा स्वाद कई दिन तक आता रहता है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

द्वितीय परिच्छेद

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवानदास की परीक्षा समाप्त हुई और वह अपनी श्रेणी में प्रथम रहा। उसका परीक्षाफल घोषित होते ही उसी हस्पताल में हाउस सर्जन की नियुक्ति हो गई। वेतन डेढ़ सौ रुपए ही था। इसके साथ ही उसको प्रिंसिपल ने कॉलेज में 'प्रोफेसर-शिप' के लिए प्रार्थना करने को कह दिया। परिणाम यह हुआ कि एक वर्ष तक हस्पताल में काम करने के बाद ही वह पाँच सौ रुपया मासिक पर 'फिज़िओलोजी' (शरीर-क्रियाविज्ञान) पढ़ाने के लिए मैडिकल कॉलेज में नियुक्त कर लिया गया।

उसके घर के बाहर बोर्ड लगवा दिया गया, "भगवानदास एम० बी० बी० एस०, प्रोफेसर, मैडिकल कॉलिज, लाहोर।"

जिस दिन बोर्ड लगा, उस दिन कई दिन माँ के घर में रहकर माला ससुराल आई थी। उसने घर के द्वार के बाहर नाम पर बोर्ड लगा देखा तो वहीं-की-वहीं खड़ी रह गई। उसकी माँ उसे छोड़ने आई थी। उसने पूछा भी, "माला! खड़ी क्यों हो गई हो?"

इतने में माला ने उस बोर्ड का अर्थ समझ लिया था और वह घर में प्रविष्ट हो गई। नीचे बैठक में नूरुद्दीन, लोकनाथ, खुदाबख्श और भगवानदास बैठे हुए थे। मायारानी और माला ऊपर चढ़ गईं। ऊपर बड़े कमरे में भगवानदास की माँ, रामदेई, भगवानदास की बहन मोहिनी और करीमा बैठी थीं। करीमा ने सबसे पहले माला को देखा और उसने कह दिया, "लो भाभी आ गई हैं।"

रामदेई और मोहिनी भी सीढ़ियों की ओर देखने लगीं। माला और उसके पीछे माला की माँ भीतर आई। तीनों घर की औरतें खड़ी हो, आने वालों का स्वागत करने लगीं। माला ने हाथ जोड़, थोड़ा-सा सिर झुकाकर नमस्कार किया और अपने कमरे की ओर चलने लगी। मोहिनी ने उसकी बाँह-में-बाँह डालकर रोकते हुए कहा, "भाभी! जो कुछ माँ के घर से लाई हो दिखा तो जाओ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करीमा और रामदेई हँसने लगीं। माला के माथे पर त्योरी चढ़ गई। माला की माँ ने बात को बदलने के विचार से कहा, "माला! ठीक तो कह रही है मोहिनी। भागी कहाँ जा रही हो? भगवानजी तो नीचे हैं। वे आएँगे तो कमरे में चली जाना।"

विवश होकर माला को वहीं सबके साथ बैठ जाना पड़ा। मायादेवी के हाथ में गठरी थी। उसने गठरी सबके बीच में रख दी। उसमें ग्यारह 'मट्ठियाँ' थीं और एक डिब्बे में मिठाई थी।

मोहिनी ने हँसते हुए कहा, "आज तो भाभी पकड़ी गई हैं। करीमा बहन! खाओगी न 'मट्ठी'?"

"भाभी देंगी तो खाऊँगी क्यों नहीं?"

"वाह, भाभी से छीनकर नहीं खाओगी?"

"छीनने की क्या ज़रूरत है मोहिनी!" मायारानी ने कह दिया, "मैं तो अपने आप ही देनेवाली थी।"

"मौसी! कुछ मज़ा नहीं रहा। छीनने का जो स्वाद है, वह सब आपने खत्म कर दिया। अब तो केवल मट्ठी का ही स्वाद रह गया है। भाभी को रूठे देखने का स्वाद समाप्त हो गया।"

मायारानी भी हँस पड़ी। माला के मुख पर न तो मुसकराहट दिखाई दी, न ही उसके दाँत दिखाई दिए।

मोहिनी उठकर गई और आम के अचार का मसाला एक चीनी की प्लेट में रखकर ले आई। कुछ चीनी की प्लेटें भी लाई गईं। उनमें एक-एक मट्ठी रामदेई ने रख दी और फिर प्लेटें सबके सामने रख बोलीं, "लो मोहिनी! खाओ।"

"मैं तो भाभी के साथ खाऊँगी।" मोहिनी ने अपनी प्लेट की मट्ठी माला के सामने रखी प्लेट में रखकर कहा, "आओ भाभी, खाएँ।"

"मुझको भूख नहीं है।" माला ने गम्भीर मुख बनाए ही कह दिया।

"वाह! तो क्या हम भूखी बैठी थीं कि कब भाभी मट्ठियाँ लाएँ और हम अपना मुख खोलें।"

"दिखाई तो यही दिया है।" माला ने कहा और हाथ-पर-हाथ रखे बैठी रही।

"नहीं भाभी!" मोहिनी ने हँसते हुए कहा, "ईश्वर की कृपा से अब तो भैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँच सौ रुपए की नौकरी पा गए हैं.। वैसे तो पेट पहले भी भरा था। फिर भी भाभी जो कुछ भी लाएगी, वह हम खाएँगी ही खाएँगी, खाए पर भी खाएँगी।"

मोहिनी ने 'मट्ठी' का एक टुकड़ा तोड़कर अचार से खाना आरम्भ कर दिया और कहा, "और भाभी ! तुम भी खाओ। पेट भरा है तब भी खाओ।"

"क्यों ?"

"भैया की नौकरी लगी है न। तुम को खुशी नहीं है क्या ?"

माला ने उत्तर नहीं दिया। मोहिनी, करीमा और रामदेई तीनों खाती रहीं।

मायारानी ने बात बदल दी। उसने कहा, "जानकी के दिन चढ़ गए हैं। परन्तु उसकी बड़ी बहन माला तो अभी वैसी ही बैठी है।"

"मौसीजी !" करीमा ने कह दिया, "बहुत जल्दी है आपको दोहते-दोहतियाँ देखने की ? भाभी को कुछ सुख तो भोगने दो।"

"तुम्हारे कितने बच्चे हैं ?" मायारानी ने करीमा से पूछ लिया।

"दो हैं, तीसरे की नींव रखी जा चुकी है।"

"क्या आयु है तुम्हारी ?"

"उन्नीस की हो चुकी हूँ।"

"माला साढ़े उन्नीस की हो चुकी है। तुम्हारे हिसाब से इसके घर भी तीन बच्चे हो चुकने चाहिए थे।"

"सब उस परवरदिगार, करीम, रहीम की मेहरबानी पर ही है। भाभी ! कुछ खुदा के नाम का दिया करो तो दो बच्चे एकदम भी हो सकते हैं।"

"यह तो बहुत ही मुसीबत होगी।"

"तो फिर धीरज से अपनी पारी की प्रतीक्षा करनी चाहिए।"

नीचे बैठक में एक दूसरी ही बात हो रही थी। नूरुद्दीन ने प्रस्ताव रखा था—"भगवान के नौकर होने की दावत दी जाए।"

"क्या होगा इससे ?" भगवानदास का प्रश्न था।

"होगा यह कि मुहल्ले में और उससे बाहर भी, लोगों में यह विख्यात हो जाएगा कि भगवान भापा एक बड़े डॉक्टर बन गए हैं। फिर भापा की प्रैक्टिस चलने लगेगी। भापा एक मोटर रखेंगे और कभी-कभी तो नूरे को भी मोटर की सवारी मिल जाएगी।"

"यह सब व्यर्थ है। मैं यहाँ प्रैक्टिस चलाने के हक में नहीं हूँ। मेरा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवन-कार्य अब निश्चित हो चुका है। मैं पढ़ाई कराऊँगा और नए-नए रोगों का कारण, उनका निदान और उनकी चिकित्सा ढूँढूँगा।"

"और यह जो बोर्ड बाहर लगवाया है ?"

"यह तो डाकिए को बताने के लिए है। बोर्ड चाचा ने बनवाकर लगवा दिया है। मैं समझा हूँ कि लगवाने का उद्देश्य इतना मात्र ही है ?"

"मगर इस बोर्ड को पढ़कर, कोई रोगी आ गया तो क्या करोगे ?"

"उसको देखूँगा और अपनी अक्ल के मुताबिक नुस्खा भी लिख दूँगा। मगर मैं प्रैक्टिक करने के हक में नहीं हूँ।"

"यदि दस-बीस रोगी रोज़ आने लगे तो ?" नूरुद्दीन ने पूछ लिया।

"तो अपनी फीस इतनी ज्यादा कर दूँगा कि वे आना छोड़ दें।"

"यही तो हम लोग चाहते हैं। फीस अधिक करने से तो लोग और भी अधिक संख्या में आएँगे।"

"क्यों, लोग अधिक धनी हो गए हैं क्या ?"

"नहीं, यह बात नहीं है। बात यह है कि लोग मुख देखकर टीका लगवाते हैं। बड़े डॉक्टरों की बड़ी फीस होती है और बड़ी फीस वाले डॉक्टर बड़े होते हैं।"

"भापा ! मैं यह बोर्ड उतरवा दूँगा। मुझको घर पर 'प्रैक्टिस' करनी मंजूर नहीं।"

"तुम बोर्ड उतरवा दोगे तो मैं तुम्हारा नाम दीवार पर पेंट करवा दूँगा। फिर दीवार को कहाँ उठाकर ले जाओगे ?" खुदाबख्श ने मुसकराकर कह दिया।

"बहुत ज़बरदस्ती करोगे, चाचा !"

"तुम नई बीवी पाकर कुछ उल्टी बातें सोचने लगे हो।"

"इसमें तो कुछ भी उल्टा नहीं है। अपनी विद्या और अपनी 'सर्विस' की बात मैं जानता हूँ। जिस काम के लिए मैं नौकर हूँ, उसको करना अति आवश्यक है।"

"तो नौकरी छोड़ दो। उस नौकरी से लाभ ही क्या, जो किसी इनसान की तरक्की में बाधक बन जाए।"

"यह मेरी तरक्की में कैसे बाधा बनेगी ?"

"पाँच सौ महीने से कितनी तरक्की करोगे इस जगह पर ?"

"पंद्रह सौ महीने तक हो सकती है।"

"बस ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"और क्या चाहिए, चाचा !"

"जानते हो मेरी आमदनी क्या है ?" खुदाबख्श ने गम्भीर होकर पूछ लिया।

"कितनी है ?"

"पिछले वर्ष का इन्कमटैक्स के लिए हिसाब बनाया है। दो लाख पाँच हज़ार रुपए का है। और भगवानजी महाराज ! मेरे लिए काला अक्षर भैंस बराबर है। तुम तो सत्रह साल तक पढ़ते रहे हो। बाप के हज़ारों रुपए पढ़ाई पर खर्च कराए हैं।"

खुदाबख्श की आय की बात सुन, लोकनाथ और भगवानदास चुप रह गए।

नूरुद्दीन ने कहा, "भैया भगवान ! दावत तो होगी। इस मकान में होगी और दो-तीन दिन में होगी। तुम मानो, चाहे न मानो। तुम खर्च दो, चाहे न दो; दो सौ के लगभग मेहमान आएँगे और बाजे बजेंगे। मुजरा होगा और रात एक बजे तक ज़शन होगा।"

"कहाँ होगा ? यहाँ इतनी जगह कहाँ है ?"

"मैंने सब विचार कर लिया है। बाज़ार में तम्बू, कनात, दरी, कुर्सियाँ लगवा दूँगा। वहाँ पर आए हुए लोगों को बैठाऊँगा। इस कमरे में पचीस आदमी बैठकर आसानी से खा सकेंगे। जो आते जाएँगे, बैठते जाएँगे। किसी वक्त पचीस से अधिक हो गए तो वे बाहर बैठकर प्रतीक्षा करेंगे और मदारी का तमाशा देखेंगे। जो खाते जाएँगे, उनको मकान की सबसे ऊपर की छत पर बैठा दिया जाएगा और वहाँ गाना-बजाना और नाच-रंग होगा।"

"मतलब यह कि जो कुछ मेरे विवाह पर नहीं हुआ, वह मेरे इस नौकरी लगने पर होगा ?"

"विवाह के वक्त तुम्हारे श्वसुर को बहुत खुशी थी और सुना है, उसने अपनी लड़की की शादी पर तीस हज़ार खर्च किया है।"

"क्या उसको हमसे ज्यादा खुशी थी ?"

"हाँ, और होनी भी चाहिए थी। उसकी लड़की को भगवान जैसे डॉक्टर के घर नौकरी मिल गई थी। अब भापा की नौकरी लगी है और खुशी हमको हो रही है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"फिर भी कितना बजट है नूरुद्दीन !"

"ऐसे कामों में मैं बजट नहीं बनाया करता। मुनव्वर की वर्षगाँठ पर मैंने छोटी-सी दावत दी थी, और पाँच सौ खर्च हो गया था।"

"और यह दावत उससे बड़ी होगी ?"

"जो भी हो जाए। बताओ दोस्त ! किस दिन तुमको फुरसत है ?"

"किस दिन का प्रबन्ध करना चाहते हो ?"

"आने वाले 'इतवार' को।"

जब भगवानदास और लोकनाथ चुप रहे तो नूरुद्दीन ने एक कागज़ उठाया और समान की सूची बनानी आरम्भ कर दी।

: २ :

"मैंने आपको कई बार कहा है कि मैं इस घर में नहीं रहूँगी और आप इस घर को छोड़ने की अपेक्षा इसमें पाँव पसारते जा रहे हैं ?" माला अपने पति के गले में बाँह डाले, उसके समीप लेटे हुए कह रही थी।

"क्या पाँव पसारे हैं ?" भगवानदास ने उसको कसकर गले से लगाते हुए कहा, "घर अभी नहीं छोड़ सकता।"

"देखिए, आपने साइनबोर्ड लगवा दिया है। इसका अर्थ मैं यह समझी हूँ कि आप उस स्थान को अपने होने वाले रोगियों में विख्यात कर रहे हैं।"

"बोर्ड लगवाया है नूरुद्दीन के वालिद खुदाबख्श ने।"

"आपके सब काम तो खुदाबख्श और नूरुद्दीन ही करते हैं। उस दिन हीरे की अँगूठी का दाम भी नूरुद्दीन ने ही दिया था। अब बोर्ड उसके बाप ने लगवा दिया है। कल को कहेंगे, यह मकान नूरुद्दीन के बाप ने बनवा दिया है। मैं यही जानना चाहती हूँ कि आपने क्या किया है ?"

"मैंने एक बात की है। वह है, लाला शरणदास की लड़की माला को डोली में डालकर घर ले आया हूँ। क्या यह कम बहादुरी की बात है ?"

"बस बीवी को पकड़, उसका मलीदा कर दिया। बहुत बहादुरी हो गई। देखो जी ! मेरी माँ कहती है कि मेरी बहन जानकी के दिन चढ़ गए हैं।"

"बहुत खुशी की बात है।"

"और मैं –।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम्हारी तुम जानो।"

"मुझको सन्देह हो रहा है कि कुछ आप में दोष है।"

"होगा!" भगवानदास की अपनी पत्नी को पकड़ ढीली पड़ गई थी। उसको सन्देह हो गया था कि वह आज फिर लड़ने वाली है।

विवाहित जीवन में कई बार पहले भी लड़ाई हो चुकी थी। एक बार ससुराल से आए सामान में से बहन मोहिनी को दो साड़ी, जम्पर और सोफासेट देने के समय झगड़ा हुआ था। साड़ियाँ आदि देने के समय तो भगवानदास ने माला को समझाया था कि उसकी माँ ने उसको पन्द्रह, एक से एक बढ़िया, साड़ियाँ दी थीं। दस उसकी सास ने ले दी थीं। इन पच्चीस में से दो ही तो दी जा रही थीं। तब माला ने कहा था, "माँ जी अपनी साड़ियों में से दे दें। मेरी माँ की दी हुई में से न दें।"

"माला! तुमको तो हानि होगी नहीं। मोहिनी के घर में तुम्हारी माँ की साड़ियों में से दी जाएँगी तो तुम्हारी माँ की शोभा होगी। हम तो मोहिनी को नित्य कुछ-न-कुछ देते ही हैं।"

"पर मैं विचार करती हूँ कि उसका क्या हक़ है मेरी माँ से मिले सामान पर? आप मेरा सोफासेट भी तो दे रहे हैं?"

"वह इसलिए कि उसको घर पर रखने का स्थान नहीं। नीचे बैठक में दो सोफासेट पहले ही रखे हैं। इसको वहाँ टिका तो दिया है मगर कमरा सामान से लद-सा गया है।"

"इसी से तो कह रही हूँ, कोई बड़ा-सा मकान लीजिए। आपके पिताजी को कुछ तो ख्याल करना चाहिए था कि किन के साथ सम्बन्ध बनाने लगे हैं? उनके यहाँ से मिले दहेज को रखने के लिए, मकान तो बनवा लेना चाहिए था।"

उस दिन का झगड़ा तो दो रात-भर पति-पत्नी के पृथक्-पृथक् सोने पर और माला के एक सप्ताह के लिए माँ के घर चले जाने पर समाप्त हुआ था। भगवानदास ने माँ को बता दिया था कि माला अपनी माँ के घर का सामान मोहिनी को देना पसन्द नहीं करती। तब लाला लोकनाथ ने बाज़ार से दो सूट का कपड़ा और एक सौ रुपया देकर मोहिनी को विदा कर दिया था।

जब माँ के घर रहते हुए माला को पता चल गया कि उसकी साड़ियाँ और सोफासैट नहीं दिए गए तो वह ससुराल लौट आई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आज फिर कुछ ऐसा ही अवसर आ गया था। भगवानदास को बिच्छू के डंक मारने के समय होने वाली पीड़ा के समान अनुभव हुआ। उसने कुछ तनकर कहा, "क्या दोष हो सकता है ?"

"आप डॉक्टर हैं। आपको पता होना चाहिए।"

"ठीक है। मैं अपना और तुम्हारा दोनों का टैस्ट करवाता हूँ। जिसके दोष होगा, उसकी चिकित्सा हो जाएगी।"

"मुझमें तो कोई दोष प्रतीत होता नहीं। मैं तो एक औरत की भाँति ठीक हूँ।"

"यही तो देखना है ?"

"यह कैसे देखा जाएगा ?"

"कल मेरे साथ हस्पताल चलना। वहाँ लेडी डॉक्टर बताएगी कि किस कारण से तुम्हारे अभी तक सन्तान नहीं हुई ?"

"मैं तब तक नहीं जाऊँगी, जब तक आप कॉलेज के सरकारी बंगले में नहीं चले जाते।"

"फोकट में एक सौ रुपया भाड़े में चला जाएगा। माता-पिता से पृथक् रहोगी तो रोटी, नौकर-चाकर का खर्च भी दुगुना हो जाएगा। यह नहीं हो सकता।"

"परन्तु यहाँ रोटी का कुछ नहीं देना पड़ता क्या ?"

"देता हूँ। अभी तक डेढ़ सौ मिलता था। उसमें से पचास रुपए माँ को घर के खर्च के लिए देता था। अब अगले मास से पाँच सौ मिलेंगे तो डेढ़ सौ पिताजी को देने का विचार है।"

"डेढ़ सौ ? इतना किसलिए ?"

"मैं चाहता हूँ कि घर में रहते हुए घर का पूरा खर्च मैं दिया करूँ।"

"क्यों ?"

"इसलिए कि पिताजी तेईस साल तक सब खर्च देते रहे हैं। अब कम-से-कम तेईस साल तक मैं उनका सब खर्च दे दिया करूँ।"

"और, वे जो कमाते हैं ?"

"उसका वे जो उनके मन में आए वे करें।"

"यह तो बिलकुल बेहूदा है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कुछ भी हो माला ! अब सो जाओ। मुझको बहुत सुबह उठकर कॉलेज का लेक्चर तैयार करना है।" यह कह वह लपककर अपने पलंग पर चला गया।

क्रोध से आगबबूला हो माला करवट बदलकर सोने का यत्न करती रही। भगवानदास तो पन्द्रह मिनट के भीतर सो गया लेकिन माला रात-भर जागती रही। दिन चढ़ने लगा तो उसे नींद आ गई। भगवानदास उठा और अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में चला गया । वह पाँच बजे से आठ बजे तक वहाँ बैठकर काम करता रहा। तदनन्तर स्नानादि से निवृत्त हो, रसोइ-घर में भोजन करने चला गया। भोजन माँ बना रही थी। उसने माँ को बताया—

"माला आज माँ के घर जाना चाहेगी।"

"अभी कल तो आई है?"

"वह यह कहने आई है कि अब मैं प्रोफेसर बन गया हूँ। मुझको शहर से बाहर मकान लेकर रहना चाहिए।"

"और तुम भी उसके साथ ही रहने जा रहे हो?"

"नहीं माँ ! अभी नहीं। अभी तो इस रविवार को मेरी नौकरी लगने की दावत हो रही है।"

"कहाँ होगी दावत?"

"यहीं, इस मकान पर।"

"कितना रुपया खर्च करोगे?"

"जितना भी हो जाए।"

"देखो भगवान ! अपनी चादर देखकर पाँव पसारो। बीवी धनियों की बेटी है। उसके अपने माता-पिता के घर की बातें यहाँ नहीं चल सकेंगी। सुना है, वे पुरानी अनारकली के आगे एक कोठी बनवा रहे हैं। उनके लिए लाख- दो लाख रुपया खर्च कर देना साधारण बात है। तुम पहले अपनी हैसियत उत्पन्न करो। उसके बाद जो मन में आए करना।"

"माँ ! अमीरों की लड़की घर में लाकर गलती हो गई है।"

"मुझको भी कुछ यही अनुमान हो रहा है। पर बेटा, थूककर चाटा नहीं जा सकता। अब जो हो गया सो हो गया। अब तो उसको समझाओ। आखिर तुम्हारे इतना पढ़ने-लिखने का क्या लाभ होगा अगर तुम उस नौंवी-दसवीं श्रेणी तक पढ़ी को समझा नहीं सकते।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"समझाने के लिए ही उसको माँ के घर जाने की छूट दे रखी है।"

"यह कैसे ? इससे तो वह बिगड़ेगी, सुधरेगी नहीं।"

"माँ ! बड़ी जमातों में औरतों को समझाने का यह भी एक तरीका बताया जाता है। भूल करने वाले को सीमा से अधिक भूल करने का अवसर दिया जाए। जब वह अपने को बहुत कठिनाई में डाल ले, तब उसको मुश्किल से निकालकर ठीक मार्ग पर ले आया जाए।"

"परन्तु इससे पहले समझाना तो चाहिए।"

"रात-भर समझाता रहा हूँ। देखो माँ ! तुम उसको छोड़ने मत जाना। हाँ, वह जाना चाहे तो पंडिताइन के साथ भेज देना।"

माँ ने कुछ उत्तर नहीं दिया। भगवानदास ने भोजन समाप्त किया और कपड़े पहन कॉलेज जाने की तैयारी करने लगा। उस समय माला अँगड़ाइयाँ लेती हुई उठी। दीवार पर टँगी घड़ी में समय देखकर बोली, "अब तो नौ बज रहे हैं ?"

"हाँ, मुझे दस बजे क्लास लेनी है। मैं जा रहा हूँ।"

"मैं माँ के घर जानेवाली थी।"

भगवानदास का अनुमान ऐसा ही था। फिर भी उसने कहा, "अभी कल ही तो आई हो ?"

"मैं किसी लेडी डॉक्टर को दिखाने जा रही हूँ।"

"ठीक है ! मैंने माँ से कह दिया है। वह पंडिताइन को तुम्हारे साथ भेज देंगी।"

"तो पहले से ही मुझको घर से निकालने का प्रबन्ध कर रखा था।"

"तो मत जाना। मैंने तुमको जाने के लिए नहीं कहा।" इतना कह, वह पढ़ने के कमरे में से अपनी पढ़ाने की फाइलें लेकर, बाईसिकल निकाल चल दिया।

रामदेई ने अपने पति से भगवानदास की बात बताई तो लोकनाथ ने कह दिया, "हमको लड़के और बहू की बातों में दखल नहीं देना चाहिए।"

"और जो-कुछ भी बेहूदगी वे करें, उसको देखते रहना चाहिए।"

"देखो रामो ! मेरी यह धारणा है कि माता-पिता को बच्चों को पढ़ा-लिखाकर योग्य बना देना चाहिए। बस ! फिर जहाँ चाहें वे जाएँ; जैसे चाहें, वे रहें; जो चाहें खाएँ और जो चाहें पहनें।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदेई तो स्कूल-कॉलेज में पढ़ी नहीं थी। इस कारण चुप रही। मोहिनी भी आज ससुराल जाने वाली थी। वह भोजन करने आई तो माँ से कहने लगी, "माँ! मैं आज जाऊँगी।"

"हाँ, मैं छोड़ने जाऊँ। या तुम्हारी सास लेने आयेगी?"

"वहाँ से कोई आयेगा।"

"तो ठीक है। तैयार रहना, उसे रोटी पानी पूछना तब जाना।"

"आज फिर भाभी-भैया में झगड़ा हुआ है?"

"कैसे कहती हो, यह?"

"भाभी पिताजी को उनके कमरे में बैठकर बता रही हैं।"

इससे माँ अवाक् मोहिनी का मुख देखती रह गई। मोहिनी ने कहा, "एक दिन मैं उनके पिताजी से कुछ कहने गई थी तो उन्होंने मुझसे कह दिया था कि मुझको अपनी माताजी से कहना चाहिए। मेरे विषय में माताजी सब कुछ कर देंगी।"

"तुम किस विषय में अपने श्वसुर से कहने गई थी?"

"हमारे सोने के कमरे में कोई अलमारी नहीं थी।"

"तो अपने घरवाले से क्यों नहीं कहा?"

"वे कहते थे कि उस समय पिताजी का हाथ तंग है। और मैं उनको अपनी एक अँगूठी बेच, अलमारी खरीदने के लिए कहने गई थी।"

"तो फिर बेच डाली अँगूठी?"

"नहीं; मैंने पिताजी से कहा तो उन्होंने मेरी अँगूठी मुझे वापस दे दी और दो-तीन दिन बाद अलमारी आ गई थी।"

"यह माला कुछ मूर्ख मालूम होती है।"

"माँ! उसको समझाना चाहिए।"

"मैं कैसे कह सकती हूँ। एक डॉक्टर की बीवी को एक क्लर्क की बीवी भला क्या सीख दे सकती है?"

मोहिनी की सास उसे लेने आई। जब मोहिनी को विदा किया गया तो माला आ गई और कहने लगी, "मैं जा रही हूँ।"

"कहाँ?"

"जहाँ आपका पुत्र मेरे जाने की बात कह गया है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह कह गया है कि तुम जाना चाहो तो मैं तुम्हारे साथ पंडिताइन को भेज दूँ।"

"हाँ माताजी, उसको बुला दो। मैं कपड़े पहनकर तैयार हो रही हूँ।"

"भोजन तो कर लो।"

"क्या जाने आपने बनाया हुआ है या नहीं? मोहिनी की सास आई थी उसको भी तो आपने खिलाया है न?"

"मैंने उसके और मोहिनी के साथ बैठकर खा लिया है। तुम्हारे लिए रखा है।"

"खिलाना होता तो मुझको भी बुला लेतीं।"

"मगर तुम तो उस समय नहा रही थीं। तुम्हारी बात हुई थी। मुझको झूठ बोलना पड़ा था कि तुम्हारी तबीयत ठीक नहीं इसलिए तुम देरी से उठी हो।"

"अब खाना माँ के घर जाकर खाऊँगी।"

घर में चौका-बासन के लिए एक लड़का रखा हुआ था। उसका नाम था साधू। रामदेई ने साधू को भेज पंडिताइन को बुला लिया। राधा आ गई और माला की कपड़ों की गठरी उठा, उसको माँ के घर ले चली।

: ३ :

राधा ने चलते हुए पूछ लिया, "बहू! अभी तुम कल तो आई थीं।"

"हाँ, ताई!"

"और आज फिर जा रही हो?"

"मेरे माँ-बाप ने अपनी लड़की इन कंगालों के घर में देकर भारी भूल की है।"

"क्यों? किस बात की कमी है तुमको?"

"इनके पास है ही क्या? सोने तक को पलंग तो है नहीं।"

"परन्तु माँ ने दो पलंग जो दिए थे, वे क्या हुए?"

"अभी तो हैं मगर वे भी अपनी लड़की को देने का विचार कर रहे हैं।"

"ओह! और अपनी बहू के लिए?"

"फर्श पर चटाई जो है।"

राधा जानती थी कि रामदेई हाथ की बहुत 'सखि' है। मुहल्ले-भर के सब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यजमानों से अधिक दान-दक्षिणा देती है। वैसे ही वर्ष में एक बार उसको और उसकी बहू को कपड़े बनवा देती है। इससे इस बात का उसे विश्वास नहीं आया। मगर वह एक बात जानती थी कि सड़क के दूसरी ओर रहने वाला मिस्त्री देखते-देखते लखपति हो गया है। अब तो भगवानदास भी उसके घर में घुसा रहता है। खुदाबख्श की पतोहू बहुत ही सुन्दर है और वह इनके घर में आती-जाती है। इस सब की पृष्ठभूमि में राधा को बाप-बेटा दोनों के चरित्र पर सन्देह हो गया था और बहू के दुखी होने की बात दूसरे ही ढंग पर समझने लगी थी।

राधा ने करीमा को देखा था और अब अपने साथ-साथ चलती हुई माला को भी देख रही थी। उसको करीमा स्वर्ग की अप्सरा लगती थी और यह किसी कहार की लड़की। सूरत-शक्ल बहुत ही साधारण थी।

राधा ने बात बदल दी। उसने कहा, "बहू! पति-सुख की बात कहो। वह भी प्राप्त है अथवा नहीं?"

माला को राधा की बात स्मरण आ गई, जो विवाह से पूर्व, वह उसकी माँ को तथा उसकी भाभी दयारानी को बता रही थी। वह परदे के पीछे छुपी हुई इन सबकी बातें सुन रही थी। अब उसका ध्यान कर उसने कह दिया, "बाप-बेटा दोनों ही शौकीन हैं। दोनों अच्छे औहदे पर हैं। खूब कमाते हैं और भगवान जाने किन-किन को दे आते हैं?"

"क्या देखा है, इनका तुमने?" स्त्री-सुलभ स्वभाव से राधा ने दूसरों के रहस्य की बात जानने की इच्छा से पूछ लिया।

माला अपने पति के रात वाले व्यवहार से जली-भुनी हुई थी। इसलिए कहने लगी, "ताई! कहते लज्जा लगती है। किसी हिन्दू के घर में किसी मुसलमान औरत का इतना चलन मैंने कहीं नहीं देखा।"

"ओह!"

"वह छोकरी करीमा तो ऐसे आती है, जैसे घर में ही किसी की सौत हो।"

"छोकरी!" पंडिताइन मन-ही-मन मुसकरा रही थी।

दो बच्चों की माँ करीमा को माला छोकरी का नाम दे रही थी।

"हाँ, दाल में कुछ काला मालूम तो होता है। मुहल्ले में चर्चा भी है।" माला ने आगे कहा।

पंडिताइन ने और अधिक जानने के लिए कह दिया, "देखो! मैं तुमको एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बात बताती हूँ।" पंडिताइन ने कुछ सोचकर धीरे-धीरे बताना आरम्भ कर दिया, "भगवान तब तक पैदा नहीं हुआ था। खुदाबख्श मामूली मिस्त्री का काम करता था। डेढ़-दो रुपये रोज़ का कारीगर था। कई बार खाली भी रहता था। तब उसकी बीवी लोकनाथ के घर में आती-जाती थी। नूरे का जन्म हुआ तो मुझको शक हुआ कि वह हिन्दू की औलाद है। भगवान नूरे से तीन-चार महीने बड़ा है।

"परमात्मा की कुदरत, दोनों बच्चे इकट्ठे खेलते और पढ़ते हुए बड़े हुए। नूरे की पढ़ाई और खाने-पहनने का खर्च लोकनाथ ही देता था। दोनों बच्चे परस्पर भाई-भाई की तरह बर्ताव करते हैं।

"यह भी सुना जाता है कि खुदाबख्श लोकनाथ के रुपये से ही व्यापार करता है और लखपति हो रहा है। नूरे के विवाह के बाद ही यह हुआ है।

"पर बेटी! जो जिसके भाग्य में है, वह उसको मिलता है। तुम्हारी सास बेचारी बहुत ही धर्मात्मा और साधु स्वभाव की औरत है। वह ही है, जिसके कारण बांप-बेटे की करतूतों पर परदा पड़ा हुआ है।"

शरणदास का मकान आया तो ये दोनों माला की माँ के सामने जा खड़ी हुईं। मायारानी लड़की को देख, विस्मय में खड़ी रह गई। उसने पूछा, "माला! क्या हुआ है?"

माला की आँखों से आँसू ढुलकने लगे थे। उसने उत्तर देने के स्थान पर माँ के गले लगकर रोना ही ठीक समझा।

माला ने माँ को कुछ नहीं बताया। राधा ने जैसा कुछ समझा था, वैसा माला की माँ को बता दिया। उसका कहना था, "बिटिया बेचारी बहुत दुखी मालूम होती है। बहन माया! यह उस घर में सुखी नहीं रह सकती, जहाँ मुसलमानों का आना-जाना बना रहेगा।"

राधा तो अपनी सम्मति देकर चली गई, परन्तु माला के माता-पिता को लड़की के दुख की कल्पना होने लगी और वे इस दुख को दूर करने का उपाय करने लगे।

भगवानदास विवाह के उपरान्त प्रायः रविवार को अपनी ससुराल चला आया करता था। उस रविवार को तो उसके घर में दावत थी। दावत का निमन्त्रण-पत्र भी नूरुद्दीन की ओर से निकला था। उसमें उसने लिखा था, "नीचे हस्ताक्षर करने वाला आपको रविवार तारीख ९, सायं साढ़े चार बचे, चाय पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निमन्त्रण देता है, जिससे डॉक्टर भगवानदास एम० बी० बी० एस० को मैडिकल कॉलेज में प्रोफेसर नियुक्त किए जाने पर बधाई दी जा सके। आपसे सविनय प्रार्थना है कि आप इस अवसर पर पधारें और इस बधाई के उपक्रम में सम्मिलित होने की कृपा करें—नूरुद्दीन ठेकेदार।"

भगवानदास तीन निमन्त्रण-पत्र लेकर अपनी ससुराल जा पहुँचा। शरणदास तब तक दुकान पर नहीं गया था। वह स्नानादि से निवृत्त हो प्रातः का अल्पाहार कर रहा था। रामकृष्ण तो मध्याह्न का खाना खाकर एक बजे दुकान पर जाया करता था। तब उसका पिता घर आ जाता था और डेढ़ बजे, मध्याह्न का भोजन किया करता था।

इस प्रकार पिता-पुत्र दोनों घर पर मिल गए। भगवानदास ने नमस्कार की तो शरणदास ने उसको अल्पाहार करने के लिए कह दिया। भगवानदास ने कह दिया, "आज मुझको घर पर जल्दी लौटना है। कारण यह है।" उसने निमन्त्रण-पत्र जो शरणदास के नाम का था, लिफ़ाफे से निकालकर सामने रख दिया।

"क्या है यह ?"

"नूरुद्दीन ने मेरी सरकारी नौकरी लगने के उपलक्ष में आज चाय-पार्टी दी है। आपको उसमें सम्मिलित होना चाहिए।"

"तो तुमको नूरुद्दीन के अतिरिक्त अन्य कोई पार्टी देने वाला मिला ही नहीं ?"

"पिताजी ! जिसके पास रुपया खर्च करने को है, वही तो खर्च कर सकता है।"

"तो क्या तुमको मैं कंगला दिखाई देता हूँ ?"

"परन्तु अपने को बधाई देने के लिए मैं भीख माँगता-फिरता ? पिताजी ! यह तो मन का सौदा है। आपको तो मैंने पिछले रविवार ही बताया था कि मुझको पक्की नौकरी मिल जानी निश्चित है, प्रिंसिपल ने मुझको कह दिया है और मैं नियुक्ति-पत्र की प्रतीक्षा में हूँ। फिर माला ने भी आपको बताया होगा। नियुक्ति-पत्र तो सोमवार को ही मिल गया था। माला यहाँ मंगल के दिन आई थी।"

"देखो बेटा !" शरणदास ने कहा, "माला ने बताया था और यह भी बता दिया था कि नूरुद्दीन तुमको दावत दे रहा है। उसने नूरुद्दीन के दावत देने का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहस्य भी बता दिया है। इसी ज्ञान के आधार पर मैं कहता हूँ कि मैं नहीं आऊँगा। मेरी बधाई तुम अभी ले जाओ।"

"क्या रहस्य बताया है उसने नूरुद्दीन के पार्टी देने का ?"

"यही कि वह तुम्हारा सगा भाई है और नूरुद्दीन का बेटा मुनव्वर तुम्हारा सगा पुत्र है।"

भगवानदास खिलखिलाकर हँस पड़ा। हँसते हुए उसने कहा, "और इसीलिए,वह रूठकर यहाँ चली आई है ?"

"वह कहती तो यही है।"

"बात ठीक हो तो भी रूठने की क्या ज़रूरत थी ? किसी के पास दो पैसे होते हैं तो वह उसको बाँट सकता है। हमारी माँ को तो इस बात का न ज्ञान हुआ प्रतीत होता है और न ही उसको अपने को मिलने वाले प्रसाद की कभी कमी अनुभव हुई है। आखिर मैं भी तो बाप का बेटा हूँ। इसी प्रकार आपकी लड़की के भी कभी सन्तान हो जाती।"

"बेटा ! विवाह को दो साल हो रहे हैं। अभी तो कुछ लक्षण दिखाई दिये नहीं।"

"परन्तु पिताजी ! वे लक्षण यहाँ बैठे तो प्रकट होंगे नहीं। उसको तो मेरे घर में चलकर रहना चाहिए।"

"तो अपनी बीवी से बात कर लो। वह तुम्हारे घर जाएगी तो मैं भी तुमको बधाई देने चला आऊँगा।"

शरणदास उठ खड़ा हुआ और दुकान जाने के लिए कपड़े पहनने चला गया। भगवानदास का चित्त नहीं कर रहा था कि वह माला से मिले। अपने पिता पर और अपने पर यह लाँछन सुनकर तो उसको भी क्रोध आने लगा था। वह भी खाने के कमरे से उठकर बाहर आया तो रामकृष्ण की पत्नी और माला अल्पाहार के लिए वहाँ आ पहुँचीं। रामकृष्ण की पत्नी दयारानी ने हाथ जोड़ नमस्कार की और कह दिया, "जीजाजी, आइये न नाश्ता करिए।"

"पिताजी ने करा दिया है। भाईसाहब कहाँ हैं ?"

"आइये बैठिए तो। वे भी आ रहे हैं।"

भगवान पुनः खाने के कमरे में चला गया। वह अभी बैठा ही था कि रामकृष्ण आ गया। भगवानदास ने जेब से उसके नाम का निमन्त्रण-पत्र निकालकर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दे दिया। रामकृष्ण ने पढ़ा तो कह दिया, "ठीक चार बजे तो आ नहीं सकूँगा।"

"चार बजे से रात के बारह बजे तक जश्न का प्रबन्ध है। जब भी अवकाश मिले, आ जाइए। पाँच बजे से चाय आरम्भ होगी। साढ़े पाँच बजे मदारी के खेल होंगे। साढ़े छः बजे से मास्टर मोहन का गाना होगा। आठ बजे से भोजन होगा और फिर साढ़े नौ बजे से रात के बारह बजे तक मुन्नीबाई का नाच और गाना होगा।"

"ओह! बहुत बड़ा जश्न किया जा रहा है?"

"यह सब-कुछ नूरुद्दीन कर रहा है।"

"मैं किसी समय आऊँगा।"

"और एक काम मेरा कर दीजिए। यह निमन्त्रण-पत्र भाई साहब कृष्णगोपाल को दे दें और माला! भाभी और बहन जानकी को तुम लेकर चली आना।"

"मैं नहीं आ रही।"

रामकृष्ण हँस पड़ा। भगवानदास भी हँस पड़ा। हँसते हुए भगवानदास ने कहा, "भाई साहब को तो नूरुद्दीन का निमन्त्रण आया है। मगर तुमको, भाभी और बहन जानकी को मैं निमन्त्रण दे रहा हूँ। मेरा तो निमन्त्रण अस्वीकार नहीं करना चाहिए।"

"वही तो अस्वीकार कर रही हूँ।"

"भैया! यह आएगी। आप चिन्ता न करें। दयारानी इसको साथ लेकर ही आएगी। नहीं तो उनको आपके घर का रास्ता कौन बताएगा?"

सायं दावत पर रामकृष्ण, दयारानी, कृष्णगोपाल और जानकी तो आए मगर शरणदास, मायारानी और माला नहीं आई। भगवानदास का विचार था कि आएँगे तो सब आएँगे। अन्यथा कोई नहीं आएगा। परन्तु आधे परिवार के आने से तो उसको विचार करने की सामग्री मिल गई। वे सब रात के सात बजे आए थे। उस समय मास्टर मोहन गा रहा था। बीस के लगभग शौकीन बैठे सुन रहे थे। कुछ लोग चाय पीने के बाद चले गए थे। कुछ खाना खाने के लिए आ रहे थे।

रामकृष्ण और कृष्णगोपाल अपनी पत्नियों के साथ आए तो भगवानदास ने उठकर उनका स्वागत किया। रामकृष्ण और गोपाल को ले जाकर उसने नूरुद्दीन और कॉलेज के एक सहयोगी प्रोफेसर घोष के पास बैठा दिया। स्त्रियाँ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भीतर रामदेई के पास चली गईं।

रामदेई ने जानकी और दयारानी को अपने पास बैठा लिया। प्रोफेसर घोष की पत्नी नीला और मुहल्ले की दो स्त्रियाँ पहले ही वहाँ बैठी थीं।

रामदेई ने दयारानी से पूछा, "माला नहीं आई ?"

"नहीं ! उसने तो हमको भी आने से मना किया था मगर हमको यह उसकी मूर्खता प्रतीत हुई। मौसी ! एक बात करो। उसको पृथक् कर दो।"

"पृथक् ! यहाँ क्या कष्ट है उसको ?"

"आज-कल की लड़कियाँ हैं न। उनको अपनी आयु से बड़ी स्त्रियों की संगति भाती नहीं।"

"मगर उसने मुझको कभी कहा नहीं कि वह पृथक् होना चाहती है। मुझको तो इस बात में कभी भी आपत्ति नहीं हो सकती थी। अपने घर वाले को मना ले। वह मान जाए तो जहाँ चाहे चली जाए।"

"यही तो कठिनाई है। उसने जीजाजी से कहा था और वे माने नहीं। उसका विचार है कि वे अपने दोस्त नूरुद्दीन की बीवी को छोड़कर नहीं जाएँगे। हमको तो किसी तरह का सन्देह मालूम नहीं होता। मगर वह अभी बच्ची है न, उसके मन में न जाने कैसे यह बात बैठ गई है कि लाख यत्न करने पर भी नहीं निकलती।"

"देखो बेटी दया ! मैं अपने पुत्र को पृथक् होने के लिए नहीं कह सकती। कोई भी माँ यह नहीं कह सकेगी। हाँ, पत्नी अपने पति को समझा-बुझा सकती है। वह समझा ले। जिस दिन वे दोनों एक मन होकर यह कहेंगे कि वे जाना चाहते हैं तो मैं सत्य हृदय से कहती हूँ कि मैं उसको मना नहीं करूँगी। जाने के समय उनको आशीर्वाद दूँगी।"

इसमें दयारानी को भला क्या आपत्ति हो सकती थी ! वह जानती थी कि जब भगवानदास बाप को घर छोड़ने को कहेगा तो फिर उसको कौन मना कर सकता है ? वे घर से यही योजना बनाकर आए थे कि डॉक्टर के माता-पिता को समझाया जाए कि वे आपत्ति न उठाएँ। जब उनके मुख से इतना निकल जाए तो फिर डॉक्टर को समझाने-बुझाने का यत्न किया जाए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ४ :

बाहर समय पाकर रामकृष्ण नूरुद्दीन को कह रहा था, "भाई, तुमने डॉक्टर के लिए बहुत खर्च कर दिया है ?"

"यह तो कुछ नहीं। हमारी साझेदारी इससे कहीं दूर की है।"

"हाँ, लोग कहते हैं कि आप और भगवानदास भाई-भाई ही हैं।"

"कम-से-कम मैं तो ऐसा ही मानता हूँ। लालाजी ने ही हमारी परवरिश की है। अब्बा महीने में पन्द्रह दिन काम पाते थे और डेढ़-दो रुपए से अधिक कमा नहीं सकते थे। वे बताते हैं कि कभी लाला लोकनाथ से कुछ माँगा तो उन्होंने इन्कार नहीं किया। अगर वे देते नहीं तो अब्बा भूखों मर जाते। माँ बेवा हो जाती और न नूरुद्दीन पैदा होता और न ही यह मज़े पा सकता जो अब उसको मुहय्या हैं।

"मैं सातवीं जमायत तक तो यह जान ही नहीं सका कि मेरी माँ और भगवान की माँ दो हैं। उन दिनों अब्बा के मन में आया कि छोटी-मोटी ठेकेदारी मिल जाए तो हालत सुधर जाए। उन्होंने भगवान के वालिद से बात की। उन्होंने उनकी वाकफ़ियत एक बढ़े ठेकेदार से करा दी। काम मिला। एक हज़ार रुपया चाहिए था। वह भी भगवान के वालिद ने दिया। काम चल निकला और अब हम लाखों के ठेके लेते हैं। बैंक में हमारी हुण्डी चलती है। इस वक्त पाँच सौ राजगीर और मज़दूर हमारे काम पर लगे हुए हैं।"

रामकृष्ण ने कह दिया, "तो भई, तुमने भगवान को अपने साथ काम पर क्यों नहीं लगा लिया ? इस प्रोफेसरी की नौकरी में क्या रखा है ?"

"अपना-अपना विचार है। जब हमने मैट्रिक की परीक्षा दी थी तो इस बात का ज़िकर आया था। मेरे वालिद साहब ने हम दोनों को काम में लगा देने की तज़वीज़ की थी, मगर लालाजी नहीं माने। वे कहते थे कि व्यापार करना उनके खून में नहीं है। वे नौकरी ही करेंगे।"

"नूरुद्दीन भैया ! एक बात मैं कहूँ ?"

"हाँ कहिए।"

"किसी तरह अपने दोस्त को समझाओ कि वह पृथक् मकान लेकर रहना शुरू कर दे।"

"क्यों ? भाभी को कुछ तकलीफ है, लालाजी के घर में ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामकृष्ण गम्भीर हो गया और चुप रहा। नूरुद्दीन उसके मुख को देखता रहा। रामकृष्ण को चुप देख, नूरुद्दीन ने पूछ लिया, "रामकृष्णजी, क्या बात है? भाभी ने क्या कुछ बताया है?"

"अगर तुम यह बात अपने मन में रख सको तो बताऊँ?"

"हाँ! किसी को नहीं बताऊँगा।"

"खुदा को हाज़र-नाज़र समझकर वायदा करो कि नहीं कहोगे?"

"भाई कह जो दिया, किसी से नहीं कहूँगा।"

"मुझको इस बात पर विश्वास नहीं। मैं समझता हूँ कि यह माला का वहम ही है। फिर भी यह बात उसके दिमाग़ में घुस गई है। उसके निकालने का उपाय यही है कि डॉक्टर अपने वालिद साहब से पृथक् हो जाएँ।

"उसने बताया है कि लाला लोकनाथ उससे मोहब्बत करना चाहते हैं। वे समझते हैं कि माला बाप-बेटा दोनों की खवाहशात को पूरी करती रहेगी।

"भगवान जाने, इसमें कितनी सचाई है! मगर बात की डुग्गी पीटने से भारी बदनामी हो जाएगी। बाप-बेटे में ठन जाएगी और जिन्दगी बदमज़ा हो जाएगी।

"यह हम समझदार आदमियों का काम है कि इस मामले को दबा दें और इसके फैलने के लिए कोई मौका ही पैदा न होने दें। मैं समझता हूँ कि आप इस परिवार के साथ इतना गहरा ताल्लुक रखते हैं और अगर आप ठीक तरीके से कोशिश करें तो जहाँ दोस्त की जिन्दगी तबाह होने से बचा सकेंगे वहाँ लाला लोकनाथ के लिए भी आप अपना फर्ज़ अदा कर सकेंगे।"

लाला लोकनाथ शौकीन आदमी तो था ही, नाच-गाने का भी उसको बहुत शौक था। नूरुद्दीन जानता था कि जब से उसकी हालत महकमा पी० डब्ल्यू० डी० में जाने से सुधरी थी, वह एक आध 'पेग' ह्विस्की का भी लेने लगा था। इससे नूरुद्दीन के मन में वह बात, जो रामकृष्ण ने बताई थी, बिलकुल असम्भव तो प्रतीत नहीं हुई। किसी समय भी मन की दुर्बलता से वह कुछ हाथ बढ़ा बैठे हों, ऐसा हो सकता है। इसलिए वह रामकृष्ण की तज़वीज़ पर गौर करने लगा।

उसे चुप और विचार-मग्न देख रामकृष्ण ने कह दिया, "भाई नूरुद्दीन! मेरी और मेरी बहन की इज्जत तुम्हारे हाथ में है। यह बात मैं तुमको इसीलिए बता सका हूँ कि मैं तुमको डॉक्टर का दिली दोस्त मानता हूँ। तुमने मुझको वचन दिया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है कि इस बात को होंठों से नहीं निकालोगे।"

"हाँ, इसके लिए कोई मौका न रहे। उसकी कोशिश बिना किसी किस्म की रंजिश पैदा किए, करना हमारा फर्ज है।"

तीर ठिकाने पर लगा। रात की दावत, गाना-नाच बहुत मज़ेदार रहा। मुन्नीबाई लाहौर की एक मशहूर नाचने-गाने वाली थी। मकान की छत पर तम्बू के नीचे नाच और गाना बारी-बारी से होता रहा। सुनने वालों की संख्या सौ के लगभग थी। लोग न्योछावर दे रहे थे और इस न्योछावर के बल पर और एक दो 'पैग' के आश्रय पर, जलसा बारह के स्थान पर रात के एक बजे तक चला।

रामकृष्ण अपनी पत्नी और बहन के साथ घर गया तो उसने अपनी पत्नी को बता दिया, "पिताजी ने नूरुद्दीन की पत्नी और उसकी माँ की निन्दा कर सब काम बिगाड़ दिया था। मैं फिर उसको ठीक मार्ग पर लाने का यत्न तो कर आया हूँ। देखें, परिणाम क्या होता है ?"

अगले दिन शरणदास ने अपने लड़के से कहा, "मुझको तुम्हारी खुशामद बिलकुल पसन्द नहीं आई। इससे कुछ बनेगा नहीं। मैं तो चाँदी की जूती से सीधा करना जानता हूँ।"

"पर पिताजी ! आप के उपाय से तो कुछ होने वाला ही नहीं था। इससे तो बहुत उम्मीद है।"

"मुझको कुछ भी उम्मीद नहीं ?"

"आप ज़रा चुप रहिए। मेरे उपाय का परिणाम निकलने के लिए कुछ समय दीजिए।"

माला अपने भाई की योजना सुनकर कहने लगी, "नूरुद्दीन उनके सामने सब बक जाएगा और फिर मेरे लिए उनसे सुलह करने की कोई आशा नहीं रह जाएगी।"

"नहीं माला ! ऐसा नहीं होगा। तुम ज़रा धीरज धरो। साँप भी मरेगा और लाठी भी नहीं टूटेगी।"

अगले दिन भगवानदास कॉलेज से घर लौटा तो मुहल्ले के लोग वहाँ एकत्रित हो रहे थे। ये वे लोग थे, जिनको नूरुद्दीन ने निमन्त्रण नहीं भेजे थे। वे रात मकान की छत पर गाने-बजाने का शब्द सुन रहे थे। अब वे डॉक्टर और डॉक्टर के पिता को बधाई देने आए हुए थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डॉक्टर ने कह दिया, "यह दावत, मैंने नहीं दी। यह भाई नूरे ने दी थी और उसने अपनी मर्ज़ी से लोग बुलाए थे।"

"पर हम तो आपसे मिठाई खाने आए हैं। नूरुद्दीन और उसका बाप नए अमीर बने हैं, उनको पुरानों से मेज-जोल रखते शर्म आती है।"

डॉक्टर भगवानदास हँस पड़ा। उसने बाज़ार से हलवाई को बुलवाया और कह दिया, सौ टोकरियाँ मिठाई की लगाकर भेज दो। आठ-आठ आने से कम दाम की मिठाई किसी में न हो। अब जो भी उस प्रकार का पिछले दिन की दावत में अनामंत्रित व्यक्ति आता, उसको मिठाई की एक टोकरी दे दी जाती।

नूरुद्दीन शाम को आया तो मिठाई बँटती देख हँसने लगा। उसने कहा, "भगवान भैया! यह ठीक ही किया है। यह बिल भी मैं दूँगा।"

"नूरुद्दीन! कुछ तो मुझको भी खर्च करने दो?" भगवानदास ने कहा।

"मैं मुनव्वर की सुन्नत करवाने वाला हूँ। तुम उसकी खुशी में दावत कर देना।"

इसने भगवानदास का मुँह बंद कर दिया। जब सब लोग चले गए तो नूरुद्दीन ने बात शुरू कर दी, "भगवान भैया! भाभी को मेरा संदेश नहीं दिया था, वंह आई नहीं।"

"उसकी तबीयत खराब थी।"

"तो क्या, एक नए जीव के आने की खबर मिल रही है?"

"नहीं, अभी ऐसी कोई बात नहीं।"

"देखो भगवान भापा! एक बात करो?"

"क्या?"

"सुना है, कॉलेज के प्रोफेसरों के लिए सरकारी बंगले बने हुए हैं, तुमको वहाँ रहना चाहिए।"

"क्यों?"

"कल तुम्हारे साथी डॉक्टर घोष बता रहे थे कि तुम्हारे लिए यही ठीक है। वहाँ अपने साथियों की संगति में रहने से तरक्की करने में सहूलियत रहेगी।"

"यह उसने कहा था या अपने मन से कह रहे हो?"

"बात इस तरह हुई थी। उसने कहा था, नाच-गाने के लिए तीन मंजिलें चढ़कर जाना पड़ा है। कोई खुली जगह पर जश्न होता तो बहुत लुत्फ़ आता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैंने कहा, "यह मकान है, कोठी तो है नहीं।'

"उसने कहा, 'भगवान को कोठी तो मिल सकती थी। अगर वह वहाँ चला जाए तो न सिर्फ ऐसे जलसे सुगमता से हो सकेंगे, बल्कि वहाँ रहते हुए, इस लायक लड़के की तरक्की का रास्ता भी खुल जाएगा।'

"मुझको यह बात ठीक लगी। मैंने फैसला किया था कि तुमको कहकर वहाँ बंगला लेने पर राजी कर लूँगा।"

भगवानदास ने कहा, "बात यह है कि मैं अपने माता-पिता को यह बात कह नहीं सकता। दूसरे, तुम लोगों से मेल-मुलाकात एक बहुत बड़ी वजह है, जिससे मैं यहाँ से जाना नहीं चाहता।"

"भगवान भापा! यह सब फज़ूल की बातें हैं। लालाजी को मैं राज़ी कर लूँगा। जहाँ तक हमारे मिलने की बात है, वहाँ हमारे लिए एक कमरा रख छोड़ना, हम वहाँ आकर रह जाया करेंगे।

"मेरा कहा मानो, कल बंगले के लिए दरखास्त दे दो।"

"पहले पिताजी से बात कर लो। मैं उसके बाद ही विचार करूँगा। मुझको यह अपने माता-पिता से कृतज्ञता की पराकाष्ठा प्रतीत होती है कि जब मैं खाने-कमाने के योग्य हुआ हूँ तो उनको छोड़कर दूसरा घोंसला बना लूँ।"

"देखो भगवान! इस घोंसले को छोड़ने के लिए मैं नहीं कहता। तुम यहाँ भी एक कमरा रख छोड़ो। कभी-कभी यहाँ आकर रह जाया करना। फिर पिताजी को खर्च देते जाना। तब तो किसी किस्म का ऐतराज़ नहीं हो सकेगा?"

भगवानदास विचार करने लगा। नूरुद्दीन ने फिर कहा, "भगवान भापा! तुमको प्रोफेसरी करनी है। इससे अपनी जिन्दगी को उसके मुताबिक ही बनाना होगा। नहीं तो, जहाँ अपने साथ बेइंसाफ़ी करोगे, वहाँ अपने तालिबइल्मों के साथ भी इंसाफ़ नहीं कर सकोगे। मैं तो यह कहूँगा कि एक झूठे ख्याल में अपने परिवार के साथ भी दग़ा करोगे।"

"नूरुद्दीन भैया! यह सब बातें डॉक्टर घोष ने बताई हैं?"

"नहीं, उसने तो यही कहा था कि वहाँ तुम्हारी तरक्की का रास्ता खुल जाएगा। यह तो मैंने सोचा है कि तरक्की का क्या मतलब हो सकता है। अपने जैसों, बल्कि अपने से अच्छों से मेल-मुलाकात और उनकी सोहबत जरूर तरक्की के लिए शाही सड़क बन जाएगी।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले दिन उसने कॉलेज के प्रिंसिपल से क्वार्टर के लिए कहा तो उसने बता दिया, "दो बँगले खाली हैं। एक तुम ले सकते हो। किराया वेतन में से कट जाएगा।"

उधर नूरुद्दीन ने लोकनाथ को कहा तो लोकनाथ उसके प्रस्ताव को सुन बोल उठा, "तो भगवान ने खुद मुझसे क्यों नहीं कहा ?"

"मगर लालाजी, उसने तो अभी भी नहीं कहा। यह तो उस दिन डॉक्टर घोष बता रहे थे। मैंने अभी भगवान भापा से बात की ही नहीं ! देखिए, मेरे दिमाग़ में तो कुछ इस किस्म का नक्शा बैठ रहा है। भापा एक आलीशान कोठी में रहे। वहाँ उसकी प्रैक्टिस भी चमकेगी। फीस बढ़ जाएगी। कम मेहनत और दाम ज्यादा। वैसे वहाँ अपने प्रिंसिपल से तथा दूसरे प्रोफेसरों से मेल-मुलाकात होने से बहुत जल्दी भगवानदास तरक्की करेगा।

"आप यहाँ एक नौकर रख लें और भगवानदास नौकर का खर्च दे दिया करे, जिससे आपकी भी सेवा हो सके। फिर जब आप 'रिटायर' होंगे, नरोत्तम भी कहीं नौकर हो जाएगा और वह भी अपना कहीं मकान ले लेगा, आप कभी भगवानदास के पास, कभी नरोत्तम के पास, जाकर रहा करेंगे। ज़िन्दगी का लुत्फ़ आ जाएगा।"

"देखो नूरुद्दीन ! तुम भगवानदास को समझा देना। मेरी तरफ से कह देना कि मैं आपप्ति नहीं करूँगा।"

"नहीं, लालाजी ! ऐसे नहीं। आप उसको कहिए कि आपने सुना है कि उसके लिए बंगले में रहना ठीक रहेगा।"

"और वह पूछे कि किससे सुना है, तो क्या कहूँ ?"

"कह दीजिए क़ि नूरुद्दीन से सुना है। तब वह मुझसे पूछेगा तो मैं उसको समझा दूँगा।"

इस तरह रामकृष्ण की नीति-कुशलता और नूरुद्दीन की कार्य-कुशलता से भगवानदास की पत्नी की इच्छा पूर्ण हो गई। उसको अपनी माँ के घर गए हुए एक महीना हो चुका था कि भगवानदास अपनी ससुराल गया और उसको लेकर हस्पताल के पीछे प्रोफ़ेसरों के लिए बने बंगले में चला गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ५ :

लोकनाथ तो इतना सरल चित्त व्यक्ति था कि वह इसमें माला के षड्यन्त्र का आभास नहीं पा सका, परन्तु भगवानदास की माँ एक स्त्री की भावना को अपने पति से अधिक समझती थी। वह जानती थी कि स्त्रियाँ अपनी बातें स्वीकार करवाने के लिए क्या-क्या प्रपंच रचा सकती हैं।

लोकनाथ ने नूरुद्दीन के कहने पर भगवानदास से कहा था कि अगर उसको कुछ अधिक कष्ट न हो तो वह अपने लिए एक बंगला ले ले। भगवानदास समझ गया कि नूरुद्दीन ने बात वहाँ तक पहुँचा दी है। उसने भी अपने मन की बात बता दी, "माला तो, जब से उसे मेरी नौकरी लगने की बात का पता चला है, कह रही है। मगर मैं, आपकी और कुछ अपनी भी, असुविधा की बात देख, उसे टाल रहा था। उस दिन प्रोफ़ेसर घोष वहाँ पर जाने के कुछ लाभ नूरुद्दीन को बता रहे थे। शायद उसने ही आपको बताया है।"

"हाँ, देखो भगवान! यह तुम्हारी नई ज़िन्दगी है। इसमें जैसा रहने से तुमको ठीक जँचे, वैसे रहना चाहिए। मैं क्लर्क हूँ। मैं पायजामा, बन्द गले का कोट और पगड़ी पहनकर दफ्तर जाता हूँ और तुमको पतलून, कोट, कालर, नैकटाई पहननी पड़ रही है। यह तो काम और ओहदे की आवश्यकता है। तुम अपने काम को ठीक ढंग से करने के लिए जहाँ भी रहना ठीक समझो, उसका प्रबन्ध कर लो।"

भगवानदास चुप रहा। जब बाप-बेटे में बात निश्चय हो गई तो रामदेई ने कह दिया, "मुझको कुछ ऐसा लग रहा है कि माला ने भगवान को मजबूर किया है कि वह हमारा मकान छोड़ दे, और भगवान ने नूरे से कहकर ही आपसे यह कहलवा दिया है।"

"कैसे कहती हो, यह? क्या प्रमाण है तुम्हारे पास कि भगवान अब मुझसे भी चार-सौ-बीसी करने लगा है?"

"औरत के मन की बात औरत ही जानती है। हकीकत यह है कि मैं भी, जब आपकी माताजी के साथ रहती थी, मन से यह इच्छा किया करती थी कि हम पृथक् होकर रहें। मैंने भी अपनी माँ से, कहा था कि हमको अपने सास-श्वसुर से पृथक् रहना चाहिए। तब मेरी माँ ने कहा, 'एक पक्षी की भाँति पर निकलते ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ-बाप का घोंसला छोड़ना चाहती हो ?'

"मैंने समझा कि माँ मेरी बात का समर्थन कर रही है। इससे मैंने हाँ कहा तो वह बोली, 'पर तुम तो चिड़िया नहीं हो। तुम तो लड़की हो। मनुष्य हो, बुद्धि और मन रखती हो। तुम्हें तो प्रत्येक कार्य के परिणाम पर विचार कर ही आचरण करना चाहिए।' तत्पश्चात् माँ ने मुझको स्वयं, सास-श्वसुर के साथ रहने के लाभ समझाए तो मैं मान गई। ऐसा मालूम होता है कि माला की माँ ने उसको समझाया नहीं। साथ ही भगवान अपनी पत्नी के मोह में आप से अधिक फँस गया है।"

"तुम्हारी बात भी ठीक हो सकती है। मगर मैं तो अपने कार्य का परिणाम विचारकर ही कह रहा हूँ। लड़का प्रोफेसर बन गया है। उसका समाज दूसरा बन गया है। न तो नूरा और खुदाबख्श उसके समाज में हैं और न ही मैं तथा मुहल्ले के अन्य मित्र। उसकी तरक्की यहाँ रुक जाएगी।"

रामदेई समझती थी कि विचारकर किया कार्य ठीक परिणाम ही उत्पन्न करता है। इस कारण वह चुप रही। फिर भी उसको एक अज्ञात भय था कि भगवानदास सुखी नहीं रहेगा।

इसके पश्चात् वह अपनी घर-गृहस्थी के प्रबन्ध में लगकर भूल गई कि भगवान मकान छोड़ने की तैयारी कर रहा है। एक दिन ठेला आया और भगवानदास माला की माँ के घर से मिला सब सामान उठवाकर ले गया। अगले दिन वह ससुराल गया और माला की कोठी में चलने के लिए कहने लगा। जब माला तैयार होकर घर से निकली और भगवानदास द्वारा लाये ताँगे में चढ़ने लगी तो भगवानदास ने कहा, "पहले माताजी से मिलकर फिर नए बँगले में चलेंगे।"

"मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।" माला ने स्पष्ट इंकार कर दिया।

"क्यों ?"

"इस बार मैं मन से प्रण कर निकली थी कि मैं उस घर में पाँव नहीं रखूँगी। मैं वहाँ नहीं जाऊँगी।"

"माला ! मैं तो उनसे अभी मिलकर आ रहा हूँ। मैं तुम्हारे लिए ही कह रहा था। तुमको माँ से मिले एक महीना होने जा रहा है, मिलने चलना चाहिए।"

"वे भी तो मुझसे मिलने नहीं आईं। जी नहीं, मैं नहीं जाऊँगी। कहें तो चलूँ, नहीं तो लौट जाऊँ।" इतना कहकर माला ने ताँगे में पैर रखते-रखते वापस कर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवान को मन-ही-मन माला की उच्छृंखलता पर क्रोध तो बहुत आया परन्तु वह मन में विचार करता था कि उसके साथी प्रोफेसर, जो बँगलों में रहते हैं, सब उसके वहाँ पहुँचने की प्रतीक्षा कर रहे होंगे। साथ ही वह अपनी ससुराल में अथवा बाहर सड़क पर खड़े-खड़े झगड़ा करना उचित न समझ, चुपचाप ताँगे में बैठकर बोला, "चलो बैठो ?"

Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar 167966

"कहाँ चल रहे हैं ?"

"नये मकान में।"

माला बैठ गई।

यों तो भगवानदास के लिए अपने विवाहित-जीवन का यह पहला अनुभव नहीं था। पिछले दो वर्ष में कई बार पत्नी से झगड़ा हो चुका था, परन्तु वे झगड़े प्रायः शयनागार में हुए थे। आज यह पहला अवसर था, जब बाज़ार में, ताँगे वाले के सामने ही, वह उसका अपमान कर बैठी थी। भगवानदास मन-ही-मन रो पड़ा। ऐसी डाँट तो उसने अभी तक अपने माता-पिता से भी नहीं खाई थी। ताँगे में बैठ माला ने पूछा, "कितना बड़ा है बँगला ?"

"अभी देख लोगी।" भगवानदास का मन अधिक बात करने को नहीं किया।

माला अनुभव करने लगी कि उसको, इस समय, जब वह अपनी इच्छा-पूर्ति में सफल हो रही है, उससे मीठा व्यवहार रखना चाहिए था। यदि वह अपनी सास से मिलने चली जाती तो क्या हानि होती ? परन्तु उसके मन में तो यह बात बैठ चुकी थी कि उसके सास-श्वसुर बहुत ही निर्धन हैं। वे अब उस नए जीवन में अपने लड़के की कुछ अधिक सहायता नहीं कर सकते। यदि किसी समय रुपए-पैसे की आवश्यकता पड़ी तो उसके पिता ही सहायक हो सकेंगे। इसलिए उसने यदि अपने सास-श्वसुर की अवहेलना की है तो कोई हानि नहीं हुई। फिर भी वह अपने पति के मन से अपने कठोर व्यवहार के प्रभाव को मिटाने के लिए कहने लगी, "मैं ज़रा यहाँ टिक जाऊँ फिर मोहिनी बहन तथा उसके बच्चों को बुलाऊँगी। कभी-कभी माताजी तथा पिताजी को भी यहाँ आकर रहने का निमन्त्रण दिया करूँगी।"

वह कहती गई कि मैं यह करूँगी, मैं वह करूँगी परन्तु भगवानदास चुप रहा। उसको उत्तर देने अथवा किसी प्रकार की बात करने की रुचि नहीं हुई। पहले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही दिन, वह विचार करने लगा था कि वह अपने माता-पिता से पृथक् होकर भूल तो नहीं कर बैठा ?

ताँगा बँगले में पहुँचा तो भगवानदास ने अपनी पत्नी की गठरी उठाई और ताँगे वाले को भाड़ा दे विदा कर दिया। माला उतरकर बँगला देखने भीतर चली गई थी।

एक नौकर भगवानदास ने पहले ही रख लिया था। नौकर का नाम था सीताराम। वह कांगड़ा जिले का रहने वाला एक ब्राह्मण था। अभी चौदह-पन्द्रह वर्ष का बच्चा ही था फिर भी बहुत चुस्त और घर का काम करने में चतुर प्रतीत होता था।

ताँगा आया देख, आस-पास के बँगलों के प्रोफेसर और उनकी पत्नियाँ भगवानदास तथा उसकी पत्नी का स्वागत करने आ गए। चाय का प्रबंध हो गया और परस्पर परिचय होने लगा।

जब परिचय कुछ बढ़ा तो स्त्रियों में परिचय घनिष्ठ होने लगा। कुछ दिन के पश्चात् नए परिचितों में भी छटनी होने लगी। आयु, स्वभाव, माता-पिता की आर्थिक स्थिति और विचारों के अनुसार मित्रता घनी होने लगी अथवा तटस्थता बढ़ने लगी।

माला को भी एक सखी मिल गई। प्रोफेसर खोसला की पत्नी रुक्मिणी का विवाह उससे भी कम काल पूर्व हुआ था। उससे इसकी घनिष्ठता इतनी बढ़ गई कि दोनों अपने-अपने पति से अपने सम्बन्धों की चर्चा भी निःसंकोच करने लगी थीं।

बँगले में आने के दूसरे दिन ही भगवानदास, कॉलेज से अवकाश पाने पर, अपने पिता से मिलने चला गया। उसका पिता बैठक में बैठा हुक्का गुड़गुड़ा रहा था कि उसने हाथ जोड़कर नमस्कार की। लोकनाथ ने पुत्र को देखा, तो पूछ लिया, "सुनाओ भगवान ! ठीक हो ?"

"हाँ पिताजी !" परन्तु उसकी आँखें डबडबा आईं।

"क्या बात है ? बीवी ने रात पीटा तो नहीं।" लोकनाथ कहते-कहते हँस पड़ा। भगवानदास के आँसू उसके गालों पर लुढ़क पड़े। इस पर भी वह मुस्करा दिया।

लोकनाथ अनुभव कर रहा था कि यह नए जीवन के नए अनुभवों का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिणाम है और वह अभी अपने मन को अपनी नई परिस्थिति के अनुकूल नहीं बना सका। इस कारण उसने बात बदल दी। उसने कहा, "जाओ, माँ से मिल आओ। मोहिनी भी आई हुई है।"

भगवानदास उठकर ऊपर की मंजिल पर चला गया। माँ मोहिनी की सास के लिए चाय तैयार कर रही थी। "आओ भगवान! कैसी है बहू?" भगवान को देख माँ ने कहा।

"ठीक है माँ!"

"अब तो प्रसन्न होना चाहिए उसे।"

"क्यों माँ? उसको यहाँ कुछ कष्ट था?" भगवानदास नें भर्राई आवाज़ में कहा।

माँ ने भगवानदास के मुख पर देखा। भगवानदास ने गालों पर के आँसू पोंछ लिए थे, परन्तु उसकी आँखें भरी हुई थीं। माँ ने देखा तो चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछा, "क्यों? क्या हुआ है?"

भगवानदास का आँसुओं से गला रुँध रहा था। उसने कहा कुछ नहीं और माँ के सामने जा बैठा। माँ की आँखें तरल हो उठी थीं। भगवानदास ने माँ की आँखों में तरलता देखी, तो उसकी आँखों से अविरल आँसू बहने लगे। कितनी ही देर तक बैठे, वे दोनों रोते रहे, मानो उनके मन एक-दूसरे की वेदना का अनुभव कर रहे हों।

माँ चाय बना रही थी। वह भूल गई थी कि बाहर कमरे में मोहिनी और उसकी सास चाय की प्रतीक्षा कर रही हैं। मोहिनी ने जब देरी होती देखी, तो वह स्वयं रसोईघर में आ गई। वह भी दोनों को आँसू बहाते देख, चकित खड़ी रह गई।

"क्या हुआ है, माँ!" मोहिनी ने कुछ भी न समझते हुए पूछ लिया।

माँ को स्मरण हो आया कि मोहिनी की सास बाहर चाय की प्रतीक्षा कर रही है। उसने कह दिया, "मोहिनी! चाय ले चलो। मैं आ रही हूँ।"

मोहिनी ने भी पहले अपनी सास को चाय पिलाकर, विदा कर देना ठीक समझा। उसने तुरन्त चाय की ट्रे तैयार की और लेकर बाहर चली गई। माँ उठी, मुख धोया तथा पोंछा, तत्पश्चात् वह भी बाहर आ गई।

भगवानदास अपने कमरे में चला गया। अब कमरा सामान से रिक्त था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वहाँ एक कुर्सी रखी थी और दीवार के साथ एक दर्पण लगा था। बस, और कुछ नहीं था। वह उस कुर्सी पर बैठ गया और दर्पण में मुख देखता हुआ अपनी अवस्था पर विचार करने लगा। एकाएक उसको विचार आया कि डॉक्टर घोष का कहना कि बँगले में जाकर रहने से उसकी उन्नति का मार्ग प्रशस्त हो जाएगा, सत्य नहीं। भला, क्या होगा इन प्रोफेसरों की संगति में रहकर? क्या कुछ इनकी संगति से प्राप्त हो सकता है, जो कॉलेज में हो रही संगति से उसे प्राप्त नहीं था? उसको कुछ ऐसा लगा कि डॉक्टर घोष ने नूरुद्दीन से हँसी की होगी।

: ६ :

आज माँ ने जब पूछा, "भोजन करोगे? भगवान!" तो वह तुरन्त तैयार हो गया।

माँ के मन में विचार आया कि उसको कहे कि उसकी पत्नी उसके लिए खाना बना प्रतीक्षा कर रही होगी, परन्तु वह नहीं कह सकी।

खाना खाते हुए मोहिनी ने पूछ लिया, "भैया! क्या भाभी से कल कोई झगड़ा हुआ है?"

"नहीं तो।"

"तो रो क्यों रहे थे?"

"अपनी विवशता पर।"

"क्या विवशता थी?" मोहिनी ने न समझते हुए पुछा।

"विवशता है समाज के बन्धनों की। मन एक बात चाहता है और ये बन्धन उस चाहत में बाधक बन गए हैं।"

"अर्थात् मन चाहता है पत्नी के पीछे जाने को, और समाज कहता है, बूढ़ी माँ का विचार भी करना चाहिए। इसलिए भैया! यहाँ न इच्छा रखते हुए भी खाना खाने पर विवश हो।"

"मोहिनी! रोया तो तब था, जब माँ ने खाने को नहीं पूछा था। अब खाना खाते हुए तो प्रसन्न हो रहा हूँ। मन चाहता है कि माँ के हाथ की रोटियाँ जीवन-भर खाता रहूँ। परन्तु समाज ने गले में पत्थर बाँध दिया है। वह उतार कर फेंका नहीं जा सकता।"

मोहिनी को भी भाई की वेदना का अनुभव हुआ। उसकी आँखों में भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल छलकने लगा। परन्तु उसने मन कड़ा कर कह दिया, "परन्तु भैया ! लड़कियों को भी तो अपने माता-पिता को छोड़ना पड़ता है।"

"वह तो एक महीना माँ के घर रहने के बाद भी आज फिर माँ से मिलने चली गई थी।"

"और, भैया ! तुम भी तो तेईस वर्ष माँ के पास रहने के पश्चात् आज फिर माँ से मिलने चले आये हो ?"

माँ हँस पड़ी। भगवानदास निरुत्तर हो गया। मोहिनी अपने वर्ग की हिमायत करने लगी थी। माँ ने हँसते हुए कह दिया, "तुम दोनों मूर्ख हो। भला माँ को छोड़ने-न छोड़ने की बात कहाँ से आ गई ? यह तो इच्छा-अनिच्छा की बात है। समाज के बन्धन इस इच्छा पर अपना अधिकार बना बैठे हैं।

"मान लो, तुम दोनों हमारे घर में आकर रहना चाहो तो समाज तुम्हारी निन्दा करने लगेगा। यह है समाज का बन्धन। जब भगवान यहाँ से जाना नहीं चाहता और इसकी पत्नी यहाँ रहना नहीं चाहती तो समाज इसको अपनी पत्नी के पास रहने को कहता है। यह है समाज का बन्धन। इसी प्रकार अन्य बातें हैं।"

मोहिनी की समझ में आने लगा था कि समाज ने कई बन्धन बनाए हैं। उनमें से कुछ बन्धन तो ठीक हैं। इन ठीक बन्धनों में एक यह भी है कि स्त्री एक पति की पत्नी बनकर रहे। वह समझती थी कि यह तो बहुत ठीक है परन्तु माता-पिता और पत्नी के झगड़े में पति पत्नी का पक्ष ले और पत्नी पति का पक्ष ले, यह सर्वथा ठीक प्रतीत नहीं होता। फिर भी समाज तो यही चाहेगा कि पति-पत्नी परस्पर एक होकर रहें। वह मान रही थी कि समाज का बन्धन इस विषय में अनुचित है।

लोकनाथ ऊपर आ गया। भगवानदास भोजन कर हाथ धो रहा था। लोकनाथ ने भगवानदास को खड़ा देखा तो विस्मय में पूछ लिया, "तुम अभी तक यहीं हो ?"

"पिताजी ! माँ ने कहा, भोजन कर लो तो मैं भोजन करने ठहर गया।"

"भोजन करना था तो माला को भी ले आते। अच्छा, अब जाओ। बहुत देर हो गई है। नीचे नूरुद्दीन पूछ रहा था। मैंने तो कह दिया कि तुम आए थे और चले गए हो।"

भगवानदास नीचे उतर गया। नूरुद्दीन तब तक भी बैठक में बैठा था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने भगवानदास को देखा तो विस्मय में पूछने लगा, "तो तुम अभी गए नहीं ?"

"बस जा रहा हूँ ।"

नूरुद्दीन उठकर उसके साथ जाने को तैयार हो गया । उसने कहा, "चलो, तुमको थोड़ी दूर तक छोड़ आऊँ ।"

दोनों चल पड़े । नूरुद्दीन ने पहली ही बात जो उसको कही वह थी, "देखो भापा ! बीवी को वहाँ अकेले मत छोड़कर आया करो । यह मुहल्ले और परिवार की बात दूसरी है । यहाँ सब अपने हैं । एक आवाज़ दो तो सारा मुहल्ला इकट्ठा हो जाता है और वहाँ उजाड़ बियावान में उसे अकेली छोड़कर चला आना ठीक नहीं । कोई चोर-डाकू आ जाए और वह चीखती भी रहे तो कोई मदद के लिए नहीं आयेगा ।"

"देखो, नूरुद्दीन ! तुमने मेरा दिमाग़ गन्दा कर दिया था । एक दिन के अनुभव से मैं समझ रहा हूँ कि हमारा अकेले उस जंगल में जाकर रहना भूल है । अब वहाँ से लौटना तो असम्भव हो गया है ।"

"सब नई बातें पहले ऐसे ही लगती हैं । लगता है कि कोई भारी भूल हो रही है, मगर जब एक बार छलाँग लगा दी जाती है तो फिर वह काम करना ही पड़ता है और कुछ दिन गुज़रने पर तो नई बात कुदरती और पहली हालत ग़ैर-कुदरती लगने लगती है ।"

भगवान चुप रहा । नूरुद्दीन ने पुनः कहा—"सब ठीक हो जाएगा भापा ! माला भाभी को भी अकेले रहने की आदत हो जाएगी और तुमको भी उसे अकेले छोड़कर जाने में भय नहीं लगेगा ।"

"तुम खूब हो । एक दिन भी तो करीमा को छोड़कर जाते नहीं और दूसरों को सबक सिखाने लगे हो ।"

नूरुद्दीन हँस पड़ा । बोला, "मैं तो उसे छोड़कर जा सकता हूँ । मैं कल ही उससे कह रहा था कि भापा ने हमारे लिए एक कमरा अपने बँगले में रिज़र्व कर रखा है ! उसने पूछा, 'किसलिए ?' मैंने बताया 'हमारे रहने के लिए ।'

"वह बोली, 'मैं तो वहाँ जाकर नहीं रहूँगी ।' मैंने पूछा, 'क्यों ?' तो वह कहने लगी, 'माला भाभी मुझसे रूठी रहती हैं ।'

"मैंने कह दिया, 'मुझसे तो बहुत खुश रहती हैं ।' यह सुन वह हँस पड़ी और कहने लगी, 'तो जाइए, वहाँ रहने चले जाइए ।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"पर तुम पीछे अकेली रह जाओगी ?' मैंने कहा तो वह बोली, 'मैं आपके बिना मर नहीं जाऊँगी । मैं आपकी अम्मी के पास सो रहूँगी ।'

"मैंने पूछा, 'तुमको मेरे अब्बाजान से डर नहीं लगेगा ?' वह कहने लगी, 'नहीं, उनसे डरने की कोई बात नहीं है । मुझको किसी से भी डर नहीं लगता' ।"

"तो मेरी बीवी को भी डर नहीं लगेगा।" भगवानदास ने कह दिया।

"अच्छा, आज पूछकर बताना। कल यहाँ आओगे या मैं वहाँ पूछने आऊँ ?"

"मैं यहाँ आऊँगा । मैं यहाँ नित्य आने का प्रोग्राम बना रहा हूँ ?"

"कल तो आ जाना । मगर नित्य का नाम न लेना ।"

"क्यों ?"

"बस कह दिया। लो मैं चला।" नूरुद्दीन ने हाथ मिला मुस्कराते हुए भगवान की आँखों में देखा और लौट गया ।

नूरुद्दीन ठीक कहता था । यद्यपि माला भोजन कर साथ के बँगले वाली मिसेज़ खोसला से बातें करने चली गई थी और उसके आने पर ही आई थी, फिर भी वह नाराज़ थी । सीताराम जाकर उसे बुला लाया था ।

वह आई तो आते ही पूछने लगी, "घड़ी में समय देखिए ।"

रात के दस बज गए थे। भगवानदास कुछ उत्तर नहीं दे रहा था। वह मुस्कराता हुआ उसके मुख पर देख रहा था । उसे चुप देख माला ने पूछ लिया, "अभी कॉलेज से आ रहे हैं क्या ?"

"नहीं; माँ से मिलने गया था ।"

"क्यों ? क्या था उनको ?"

"कुछ नहीं । उनके साथ कोई बात नहीं थी । बात तो मेरी थी । मैं मिलने गया था ।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि किसलिए मिलने गए थे ?"

"तुम भी तो आज दोपहर माँ से मिलने गई थीं न ? भला किसलिए गई थीं ?"

"मैं तो सिनेमा देखने गई थी ।"

"ओह ! अकेली ?"

"नहीं; माँ और जानकी आई थीं और मुझको ले गई थीं ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मैं सिनेमा देखने से कोई घटिया काम करने नहीं गया था।"

"वाह ! भला दोनों में क्या सम्बन्ध है ?"

"अपने-अपने मन की बात है। मैं चार बजे आया था। तुम थीं नहीं। सीताराम ने बताया कि माँ आई थीं और तुम उनके साथ गई हो। मैंने विचार किया कि मैं भी अपनी माँ से मिलने चला जाऊँ।"

"अच्छा, सीताराम ने खाना बनाया है। वह रखा है। जाइए खा लीजिए। वह गरम कर देगा।"

"और तुम क्या करोगी ? तुम नहीं खाओगी ?"

"मिसेज़ खोसला खाने लगीं तो उसने मुझको बुला लिया। मैं अपना भोजन वहाँ ले गई। हम दोनों ने साथ खाया है।"

"डॉक्टर नहीं थे वहाँ ?"

"वे दो दिन के लिए अपने गाँव गए हैं।"

"सुख से गए हैं न ?"

"उनकी माँ बीमार थीं। तार आते ही वे चले गए थे।"

"तो सीताराम से कह दो मैं नहीं खाऊँगा।"

"क्यों ?"

"माँ ने खिला दिया है।"

"तो अगर रुक्मिणी न बुलाती तो मैं फोकट में भूखी रहती ?"

"हाँ, तुम फोकट में ही भूखी रहतीं। भविष्य में फोकट में भूखे नहीं रहना। वक्त पर खा लेना।"

भगवानदास को फिर क्रोध चढ़ रहा था। उसने आगे कहा, "मैं भी चार बजे आया था और तुम घर पर नहीं थीं तो विचार आया कि अकेले चाय कैसे पिऊँगा ? मैंने चाय नहीं पी और फोकट में ही बिना चाय के रह गया। अब यह फोकट में ही चाय के बिना नहीं रहना चाहिए। ठीक है न ?"

"तो आपका मतलब है कि मैं आपके साथ बँध गई हूँ ?"

"नहीं, मैंने यह नहीं कहा। माला ! मैं तो यह कह रहा हूँ कि मैं फोकट में तुम्हारे साथ बँध गया हूँ। अब फोकट में बँधना ठीक नहीं, यही कहा है न तुमने ?"

"फोकट में क्यों ? पिताजी ने तीस हज़ार रुपया विवाह पर खर्च किया था। फोकट में कैसे हुआ ? ग्यारह हज़ार का तो चैक ही दिया था।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"वह तो मोटर खरीदने के लिए दिया था। जिस दिन रानी जी कहेंगी, खरीद दूँगा।"

"तो आपको वह नहीं चाहिए?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"मेरे पास मोटर रखने की सामर्थ्य नहीं। कल वेतन मिला था। पाँच सौ में अस्सी रुपये मकान का भाड़ा, पचास रुपए प्रॉविडेंट फंड, बीस रुपए, टैक्स के कटकर मिला साढ़े तीन सौ। उसमें से डेढ़ सौ पिताजी को दे आया हूँ। शेष बचे दो सौ। सौ रुपया खाने-पीने के लिए और सौ रुपए में नौकर, धोबी, नाई, भंगी और मैं तथा तुम। बताओ शेष क्या बचा जो मोटर का पैट्रोल, ड्राइवर और टूट-फूट के लिए चाहिए। रानी जी! मैं अभी मोटर नहीं खरीद सकता।"

"यह डॉक्टर खोसला कैसे रखे हुए हैं?"

"एक तो इनका वेतन सात सौ है। दूसरे इन्हें पिता को कुछ नहीं देना पड़ता। वे घर के ज़मींदार हैं। उनकी तो यह बात है कि घी, गेहूँ, चावल, आलू गाँव से चला आता है। एक बात और भी है। उनकी 'प्राइवेट प्रैक्टिस' भी है जो मेरी अभी नहीं है।"

"तो आप भी प्रैक्टिस के लिए कोशिश करिए।"

"करूँगा। घर पर तो बोर्ड लगा है। कॉलेज के समय के पश्चात् वहाँ दो घंटे बैठने लगूँगा।"

"वहाँ क्यों, यहाँ क्यों नहीं?"

"यह अपने पिताजी से पूछना कि वह अपनी दुकान अनारकली बाजार में क्यों करते हैं, नूरगली में क्यों नहीं करते?"

"वे तो जहाँ रहते हैं, वहीं ही दुकान करने लगे थे।"

"नहीं, रानी! जहाँ दुकान चली है, वहीं रहने लगे हैं।"

"परन्तु, अब तो मकान दूर बनवा लिया है और वहाँ जाने वाले हैं।"

"यही तो कह रहा हूँ। उनसे पूछना कि अब दुकान को भी वहीं उठाकर ले जाएँगे क्या?"

"मुझको तो आपकी बात समझ में नहीं आ रही।"

"तो समझ लो। काम-धन्धा एक बात है, रहना दूसरी बात है। रहते हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घरवाली के आराम के लिए, और काम करते हैं काम की सुविधा के लिए।"

"मैं तो यही कहूँगी कि काम यहाँ ही करिए। जब दूसरे डॉक्टरों की चलती है तो आपकी भी चलेगी।"

"अच्छा, विचार करूँगा।"

: ७ :

रात लोकनाथ सोने लगा तो उसको अपने पलंग पर दस-दस के नोटों की एक थई पड़ी मिली। उसने रामदेई को बुलाया और पूछ लिया, "ये तुमने रखे हैं यहाँ ?"

"नहीं तो। कदाचित् मोहिनी के हों।" उसने मोहिनी को आवाज़ दे दी।

मोहिनी आई तो माँ ने रुपयों को दिखाते हुए पूछ लिया, "ये तुम्हारे पड़े हैं यहाँ ?"

मोहिनी एक क्षण तक विचार कर बोली, "अवश्य भैया रख गए हैं। वे भोजन पर बैठने से पहले इस कमरे में खड़े थे।"

लोकनाथ हँस पड़ा। और हँसकर बोला, "तो कल यह उसको वापस करने जाना होगा ?"

"क्यों ?" मोहिनी का प्रश्न था।

"उसका अपना खर्च शेष में नहीं चल सकेगा। मुझको कुछ ज़रूरत भी नहीं। हमारे पास अपना मकान है। न नौकर रखा हुआ है, न अभी टैक्स लगता है। कोठी और मकान के खर्चों में बहुत अन्तर है।'

रामदेई चुप रही।

अलगे दिन ठीक चार बजे भगवानदास चाय पीने आया। माला घर पर ही थी। चाय तैयार थी। उसने चाय पी तो बोला, "मैं घर जा रहा हूँ।"

"घर ! कहाँ है घर आपका ?" माला ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर पूछा।

"देखो माला ! यह कोठी है और घर शहर में है।"

"वहाँ क्या है ?"

"मैंने कहा था न कि प्रैक्टिस का प्रबन्ध करूँगा। अब तुम्हारे सुझाव को मैंने स्वीकार कर लिया है। प्रातः आठ से नौ बजे तक यहाँ चिकित्सा-कार्य करूँगा और सायंकाल पाँच से सात तक वहाँ बैठा करूँगा। दोनों स्थानों में जहाँ चल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकलेगी, वहाँ का काम रहने दूँगा, दूसरे स्थान पर बन्द कर दूँगा।"

"आपकी यहाँ चल निकलेगी।"

"तो वहाँ बन्द कर दूँगा। अभी दोनों स्थान पर काम करूँगा।"

"और हमारा घूमना-फिरना ?"

"वह रविवार के दिन होगा। उस दिन कॉलेज बन्द होगा और चिकित्सा-कार्य भी बन्द रहा करेगा।"

"यह तो नौकरी हो गई ?"

"नौकर तो मैं हूँ ही। दुकानदार नहीं हूँ जो रविवार को भी दुकान के साथ बँधा रहूँगा।"

माला को कोई उत्तर नहीं सूझा।

भगवानदान ने कहा, "चलो तुमको भी माताजी से मिला लाऊँ ?"

"व्यर्थ है।"

भगवानदास ने साइकल पकड़ी और चल दिया।

वह अभी गया ही था कि लोकनाथ आ गया। उसने दरवाज़े के बाहर लगी घंटी का बटन दबाया तो माला ने दरवाज़ा खोल दिया। वह वस्त्र पहन, बाहर घूमने जा रही थी। अपने श्वसुर को सामने खड़े देख, अवाक् रह गई।

"माला बेटी ! नमस्ते।" लोकनाथ ने कहा।

विवश माला को हाथ जोड़ने पड़े।

लोकनाथ ने पूछ लिया, "भगवान घर पर है ?"

"वह तो आपकी तरफ गए हैं।"

"क्यों ?"

"वे, वहीं उस घर में प्रैक्टिस जमाना चाहते हैं।"

"यह तो बहुत ठीक करेगा। हम सब उसकी सहायता कर देंगे।"

माला चुप रही। लोकनाथ ने उसको सुर्खी, पाउडर लगाए देखा तो पूछ लिया, "कहीं जा रही थीं क्या ?"

"हाँ ! यह पड़ोस में मिसेज़ खोसला हैं। उनके साथ ज़रा लॉरेंस गार्डन तक जाने का विचार है।"

"अच्छा जाओ। यह एक लिफाफ़ा भगवानदास के नाम का है। वह आए तो उसको दे देना।" इतना कह और लिफाफ़ा दे, लोकनाथ खड़ा-खड़ा ही लौट गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घर पर पहुँच, लोकनाथ ने भगवानदास को नहीं बताया कि वह उसकी कोठी पर गया था। वह चुप रहा। जब यह निश्चय हो गया कि भगवानदास वहाँ प्रैक्टिस करेगा, तो नीचे की बैठक में मेज़, कुर्सी लगा दी गई। एक बगल का कमरा निरीक्षण-गृह बन गया। उस दिन उसने वहाँ के लिए 'स्टेशनरी' छपने के लिए दे दी।

रात को पुनः भोजन करके ही वह कोठी को लौटा।

सोने के समय रामदेई ने अपने पति से पूछा, "तो रुपए लौटा दिए हैं?"

"मैं वहाँ कोठी पर गया था। उस समय भगवान यहाँ आ चुका था। इसलिए रुपए एक लिफाफ़े में बन्द किए हुए माला को दे आया हूँ।"

"यह आपने ठीक नहीं किया?"

"क्यों?"

"रुपये भगवानदास के हाथ में देने चाहिए थे?"

"तो क्या वह उसको रुपए देगी नहीं?"

"वह अच्छीं औरत नहीं है।"

"तो यह उसकी परीक्षा हो जाएगी। मैंने तो यह विचार किया था कि भगवानदास बिना बताए रुपए रख गया है और मैं बिना बताए उसकी मेज़ पर रख आऊँगा। जब वह नहीं मिला और माला दरवाज़े में खड़ी-खड़ी ही बातें करती रही और मुझको भीतर चलकर बैठने के लिए कहा भी नहीं तो विवश वहाँ ख़ड़े-खड़े ही रुपयों का बन्द लिफाफ़ा उसको देकर लौट आया हूँ।"

"उसने आपको चाय-पानी को भी नहीं पूछा?"

"मैं चाय पीने नहीं गया था। वह पूछती भी तो कदाचित् पीता नहीं।"

"यह आपके पीने न पीने की बात नहीं है। मैं तो उसके पूछने की बात जानना चाहती हूँ। मैं समझती हूँ कि हमको वहाँ जाना ही नहीं चाहिए।"

"मेरा यह विचार नहीं है। उसको शिष्टाचार सिखाने के लिए हममें से किसी-न-किसी को नित्य वहाँ जाना चाहिए।"

"मैं तो जाने का साहस नहीं कर सकती। जब आपका इतना अनादर कर दिया तो मुझको वह धक्के देकर घर से निकाल सकती है।"

"निकाल देगी तो उसको समझाना पड़ेगा।"

"वह अब दूध पीती बच्ची नहीं है।"

"रामदेई! यह बहुत ही आवश्यक कार्य है। लड़के के जीवन-भर के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख-दुःख का प्रश्न है। अपने झूठे मान-अपमान का विचार कर मैं उसका जीवन बर्बाद होते नहीं देख सकता। हाँ, तनिक सावधानी से कार्य करना पड़ेगा।"

रामदेई ने अपने पति से कभी बहस नहीं की थी। उसको बहस करने की कभी आवश्यकता भी नहीं पड़ी थी। उसके अपने विषय में कभी किसी बात पर आपत्ति ही नहीं की जाती थी।

आज तो लड़के के विषय में बात हो रही थी। उसके सुख-दुःख के विषय पर मतभेद हो गया था। वह अपने पति को अपने से अधिक समझदार और बुद्धिमान मानती थी, इस कारण चुप रही। यद्यपि उसके मन में एक प्रकार के अज्ञात भय का साया-सा विराजमान था।

कई दिन व्यतीत हो गए और भगवानदास ने उन रुपयों की बात नहीं की। अब साधारण कष्टों के विषय में इक्का-दुक्का रोगी भगवानदास से परामर्श करने आने लगे थे। वह ओषधि लिख देता था और रोगियों को किसी दवाईखाने से दवाई बनवानी पड़ती थी। इससे उसको अभी लाभ तो कुछ नहीं हो रहा था, परन्तु काम जम रहा प्रतीत होने लगा था।

भगवानदास का कार्यक्रम यह हो गया था कि वह प्रातः चार बजे उठता था। पाँच बजे स्नानादि से निवृत्त हो अपने कॉलेज की पढ़ाई करने लगता था। सात बजे वह कोठी की बैठक में आ जाता। वहाँ भी बैठा-बैठा स्वाध्याय जारी रखता। अभी वहाँ परामर्श के लिए कोई नहीं आता था। साढ़े नौ बजे उठ, वह भोजन करता था और दस बजे कॉलेज जा पहुँचता था। ग्यारह बजे से उसका पढ़ाई का कार्य आरम्भ होता था। सप्ताह में बारह पीरियड पढ़ाई के और छः पीरियड क्रियात्मक कार्य के होते थे। दो बजे वह कॉलेज के कार्य से अवकाश प्राप्त कर कॉलेज में ही चाय पी, पुस्तकालय में जा बैठता। चार बजे तक वहाँ लिखना-पढ़ना अथवा साथियों से गप्पें हाँकना होता था। सवा चार बजे वह घर जा पहुँचता था। वहाँ पत्नी के साथ बैठकर चाय पीता था। पौने पाँच बजे वहाँ से चलकर वह पाँच बजे अपने पिता के मकान पर पहुँच जाता। वहाँ सात बजे तक बैठ, कोठी को लौट आता। कभी भोजन माँ के घर खा लेता, कभी कोठी में लौटकर खा लेता। यह निश्चय हो गया था कि यदि वह आठ बजे तक आ गया तो भोजन कोठी में करेगा। अन्यथा माला सवा आठ बजे खाना खाने बैठ जाती थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अगले मास पुनः रुपए की वही बात हुई। भगवानदास अपने पिता के पलंग पर रख गया और लोकनाथ रुपयों को लिफ़ाफ़े में बन्द कर भगवानदास की कोठी पर लौटाने चला गया। भगवानदास उस दिन भी शहर वाले मकान पर जा चुका था। इस दिन लोकनाथ बैठक में जा बैठा था। माला ने लिफ़ाफ़ा लिया और पति की मेज़ पर रख दिया। आज भी उसने न तो अपने श्वसुर को बैठने को कहा, न ही चाय-पानी के लिए पूछा। लोकनाथ लौट आया। जहाँ उसको माला के व्यवहार पर विस्मय हुआ, वहाँ भगवानदास के रुपयों के विषय में मौन रहने पर आश्चर्य भी हुआ। रामदेई ने पूछा, "आप रुपए लौटाने गए थे?"

"हाँ।"

"भगवानदास मिला था?"

"नहीं! आज मुझे दफ्तर से निकलते कुछ देरी भी हो गई थी।"

"आज भी द्वार पर ही स्वागत हुआ था?"

"नहीं! आज बैठक खुली थी। वहाँ नौकर खड़ा था। मैं गया तो उसने मुझको बैठ जाने को कहा और मालकिन को सूचना देने चला गया। वह आई तो मैंने उठकर नमस्ते की। उसने भी नमस्ते की और प्रश्न-भरी दृष्टि में मेरे मुख पर देखती रही। मैंने लिफ़ाफ़ा उसके हाथ में दिया तो उसने भगवान की मेज़ पर मेरे सामने ही रख दिया। मैं चला आया। उसने कुछ कहा भी नहीं।"

"मेरा विचार है कि आपको वहाँ नहीं जाना चाहिए।"

"क्या शक है तुमको, उसने रुपए भगवान को दिए हैं या नहीं?"

"मेरा विचार है कि वह रुपए हज़म कर गई है। उसने भगवानदास को बताया ही नहीं।"

"मेरा विचार है भगवानदास को विदित है, वह ही चुप है। अभी तो देखती जाओ।"

"मैं तो यही कहूँगी कि आपको वहाँ नहीं जाना चाहिए। आपका उस धनी बाप की बेटी से अपमान होता देख, मुझको दुःख होता है।"

"मैं समझता हूँ, महीने से ज्यादा हो गया है भगवानदास को उस घर में गए हुए, और दो महीने से ऊपर हो गए हैं माला को देखे हुए। तुमको और मोहिनी को वहाँ जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ८ :

एक दिन मोहिनी वहाँ गई। उस समय माला की माँ वहाँ पहुँची हुई थी और माला अपनी माँ के साथ कहीं जाने की तैयारी कर रही थी। मोहिनी ने छूटते ही कहा, 'भाभी ! आज तो मध्याह्न का भोजन नहीं किया। कुछ घर पर खाने-पीने को है अथवा नहीं ?"

"मुझको तो माँ एक होटल में खिलाने ले चली हैं। घर पर खाना बनाया ही नहीं।"

"तो मौसीजी ! मुझको भी निमन्त्रण दे दीजिए।"

"देख लो, मोहिनी ! तुम्हारे माता-पिता इस बात को पसन्द करेंगे अथवा नहीं। फिर तुम्हारे ससुराल वालों की बात भी विचारणीय है। तुमको होटलों में खाने की लत लग गई, तो कष्ट होगा। तुम्हारी ससुराल वाले तुमको होटलों में खिला नहीं सकेंगे।"

"मौसी ! नहीं खिलाना हो तो ऐसे ही कह दो। यह घर वालों की सामर्थ्य की बात रहने दो।"

विवश, मायारानी को मोहिनी को भी साथ ले जाना पड़ा। रामकृष्ण की पत्नी दयारानी और रामकृष्ण वहाँ पहले से ही उपस्थित थे। कुछ समय बाद जानकी और जानकी का घर वाला भी आ गए। यह तो मोहिनी को वहाँ होटल में जाकर ही पता चला की दयारानी का वह जन्म-दिवस था और उस दिन की दावत उसके उपलक्ष्य में थी। जब मोहिनी को यह बताया गया तो उसने दयारानी को बधाई दे दी।

तीन बजे वे लौट आए। मायारानी जब माला और मोहिनी को भगवानदास की कोठी पर छोड़कर चली गई तो मोहिनी ने कहा, "भाभी ! तुम वहाँ माताजी से कभी मिलने नहीं आतीं ? कुछ नाराज़ हो हमसे ?"

"इसमें नाराज़गी की कोई बात नहीं। वे मुझसे मिलने नहीं आईं मैं उनसे मिलने नहीं गई।"

"पर, पिताजी तो तुमसे मिलने आते रहे हैं। आज तो मैं भी आई हूँ। अब तो आओगी ?"

"तुम्हारे घर आ सकती हूँ। माँजी से मिलने तो तब आऊँगी, जब माँ जी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मिलने आएँगी।"

"और पिताजी से मिलने भी नहीं आओगी ? वह तो सुना है कई बार मिलने आ चुके हैं ?"

"वे तो अपने किसी मतलब से आते हैं। जब मुझको उनसे कोई मतलब होगा तो मैं आ जाऊँगी।"

"क्या मतलब होता है, उनका ?"

"यह तो वे ही बताएँगे। मैं किसी के मन की बात कैसे जान सकती हूँ ? इतना निश्चित है कि बिना मतलब के कोई कुछ नहीं करता।"

"मतलब तो तुमसे मिलना और सुख-समाचार जानना ही होगा।"

"हो सकता है। हाँ, सुख-समाचार उन्होंने कभी पूछा नहीं।"

"तुमने उनको कभी बैठने को भी तो नहीं कहा। उनको कभी चाय-पानी को नहीं पूछा। इससे वे तुमको चलती-फिरती, हँसती-खेलती देख, संतोष अनुभव कर, चले जाते हैं।"

"मैं घर में अकेली होती हूँ। इससे उनको कुछ कह नहीं सकती। मुझको भय लग जाता है।"

"पर, भाभी ! मुझसे तो भय नहीं लग रहा ? तुम तो मुझको भी टालना चाहती थीं। मेरा दो मिनट खड़े-खड़े मिलने से चित्त नहीं भरा तो तुम्हारे साथ होटल की यात्रा करने चल पड़ी थी।"

"बात यह थी कि निमन्त्रण देने वाली माताजी थीं। इस कारण मैं कुछ कह न सकी।"

मोहिनी यही समझी कि या तो माला बहुत ही चतुर है और तुरन्त बात बना लेती है अथवा सत्य ही उसका व्यवहार उचित है।

भगवानदास कॉलेज से आया तो मोहिनी को देख बहुत प्रसन्न हुआ। उसने पूछ लिया "मोहिनी, यहाँ आने का सुझाव तुमको किसने दिया है ?"

"भैया ! जब भाभी कभी मिलने नहीं आईं तो मन ने कहा, चलो मोहिनी ! तुम ही चलो। भाभी नहीं आती तो भाभी की भक्तिन ही उसकी सेवा में पहुँच जाए।

"भैया ! भाभी ने अपने मन्दिर में आने का अपनी भक्तिन को प्रसाद भी दिया है।"

"क्या दिया है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भाभी की माँ यहाँ आई हुई थीं। वे भाभी के साथ मुझको भी लंच खिलाने सैसिल होटल ले गईं। आज दया भाभी का जन्म-दिन था।"

"ओह ! मोहिनी, तब तो तुम मुझसे अधिक भाग्यशालिनी हो। हमको तो देवीजी की माताजी कभी होटल ले नहीं गईं।"

"परन्तु," माला ने बात बदल दी, "मोहिनी बहन को वहाँ का खाना पसन्द नहीं आया प्रतीत होता। बहुत कम खाया है इन्होंने ?"

"हाँ !" मोहिनी का उत्तर था, "घर में तो नमक, मिर्च, मसाले, अचार, चटनी खाने का अभ्यास है। वहाँ सब फीका-फीका था।"

"और खाने में क्या-क्या था ?"

"टोमाटो-सूप, फिश फ्राइड, चिकन-रोस्टिड, मटन-करी, पुडिंग और कॉफी थी।"

"चीज़ें तो सब मज़ेदार थीं ?"

"होंगी, मुझको तो फीकी ही लगी थीं।"

"हमको तो इसकी माँ यह फीका पकवान भी नहीं खिलातीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तृतीय परिच्छेद

मोहिनी का चित्त माला से मिलकर प्रसन्न नहीं हुआ। न ही रुपयों की बात सुलझी।

दो महीने और बीत गए। लोकनाथ प्रति मास भगवान वाले रुपए माला को देता रहा। अब तो वह जान-बूझकर ऐसे समय जाता था, जब भगवानदास वहाँ नहीं होता था। वह चाहता था कि माला यह समझे कि यह उसको ही ससुराल से भेंट मिल रही है। चार बार रुपए देने के बाद यह उचित समझा गया कि भगवानदास को संकेत तो मिलना ही चाहिए।

आखिर एक दिन नूरुद्दीन रात को भगवानदास के साथ उसकी कोठी की ओर चल पड़ा। नूरुद्दीन की बीवी करीमा से रामदेई ने अपने मन का सन्देह बताया तो उसने अपने पति नूरुद्दीन से बात की। नूरुद्दीन को माला के भाई रामकृष्ण ने माला का लांछन कि लोकनाथ अपनी पुत्रवधू पर बुरी दृष्टि रखता है, बताया था। इससे नूरुद्दीन में मन में भय समा गया कि दाल में कुछ काला भी हो सकता है। अगले ही दिन उसने भगवानदास के पिता से कह दिया, "बाबूजी ! आपको रुपए तो भगवानदास को वापस करने चाहिए थे।"

लोकनाथ ने कहा, "बात यह है कि भगवानदास चुपचाप मेरे पलंग पर प्रति मास डेढ़ सौ रुपए के नोट रख जाता है और मैं चुपचाप उसकी पत्नी को वह रुपया लौटाने चला जाया करता हूँ।"

"परन्तु, आप वह रुपया भगवानदास को लौटा रहे हैं या उसकी बीवी को खर्चे के तौर पर दे रहे हैं ?"

"मैं पहले तो भगवानदास को ही लौटाने जाया करता था। मगर उसकी पत्नी ने भगवानदास को यह बताया मालूम नहीं होता। इस पर भी मैं चुप हूँ। मैं विचार करता हूँ कि मेरे लिए भगवानदास और उसकी बीवी में कोई अन्तर नहीं होना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह ठीक नहीं। आप जो कुछ भगवानदास की बीवी को नज़र करना चाहते हैं, वह भगवानदास की मार्फत ही करना चाहिए।"

इससे तो लोकनाथ को यह सन्देह हुआ कि भगवानदास को उसके वहाँ जाने का ज्ञान है और वह उसको पसन्द नहीं करता। इससे उसने पूछ लिया, "तो क्या भगवानदास ने इस विषय में तुमसे कुछ कहा है ?"

"भगवानदास ने तो कुछ नहीं कहा। हाँ, रामकृष्ण ने मुझसे कुछ कहा था। उसकी रोशनी में, मैं अपने मन से आपको कह रहा हूँ।"

"रामकृष्ण ने क्या कहा था ?"

"यह तब की बात है जब भगवानदास आपसे पृथक् नहीं हुआ था। भाभी माला रूठकर अपनी माँ के घर गई हुई थीं। तब रामकृष्ण ने कुछ ऐसा कहा था जिसका इलाज मैंने यही समझा कि भगवानदास अपनी पत्नी को लेकर पृथक् रहने लगे। मैंने आपसे कहा और आपने उसको पृथक् कर दिया।"

"तो उसके साथी प्रोफेसर घोष ने कुछ नहीं कहा था ?"

"उसने तो यह कहा था कि शहर से बाहर जाकर रहना तो लाभ के स्थान पर खर्च ज्यादा करने वाला होगा।

"जब माला आपको बदनाम करने पर तैयार हो गई तो मैंने यही मुनासिब समझा की भगवानदास अपनी पत्नी को लेकर मकान छोड़ जाए।"

अब तो सब बात लोकनाथ के मन में स्पष्ट हो गई। उसको अपनी पत्नी का बार-बार कहना कि माला से मिलने नहीं जाना चाहिए, समझ में आने लगा। इससे वह गम्भीर हो गया। बहुत विचारोपरान्त लोकनाथ ने कहा, "नुरुद्दीन ! तुम क्या समझते हो कि हमको इन पति-पत्नी से सम्बन्ध-विच्छेद कर लेना चाहिए ?

"नहीं, मैं तो समझता हूँ कि इनको सुधारने की कोशिश करनी चाहिए। मगर जिस ढंग से आप चल रहे हैं, इससे तो आप किसी किस्म का सुधार करने के लायक रह ही नहीं जाएँगे। यह औरत आपको बदनाम कर देगी और भगवानदास और उसकी बीवी पर आपके कहने का कुछ भी असर नहीं रह जाएगा। वह ऐसे ही आपसे दूर हो जाएगा जैसे पेड़ से टूटा हुआ फल नीचे नाली में जा गिरता है।

"आप इसमें चुप रहिए। मैं और करीमा इस मुआमले में कोशिश करेंगे। मेरी राय मानिए, आप रुपए देने वहाँ मत जाइए। वहाँ जाना हो तो भगवानदास की उपस्थिति में ही जाना चाहिए।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तुम भगवानदास को समझो दो कि मुझको रुपयों की ज़रूरत नहीं। उसको मेरी आर्थिक अवस्था समझा देना। उसको बता देना कि मुझको अभी पिछले महीने ही तुमने अपनी कम्पनी के लाभ में से मेरे हिस्से को कितना रुपया दिया है।"

"परन्तु लालाजी! मैं उसको इस बात से मना नहीं कर सकता कि पुत्र पिता को कुछ नज़र न करे। श्वसुर पुत्रवधू को नज़र देता है, माँ लड़की को देती है और भाई बहन को देता है, इन बातों में दख़ल देना मैं बिल्कुल ग़लत समझता हूँ। मैंने सिर्फ़ यह कहा है कि जो कुछ भी कोई मुहब्बत के नाम पर किसी को देता है, यह उसके अपने सोचने और समझने की बात है। सिर्फ उस मुहब्बत का ग़लत मतलब न निकले, यह ख्याल रखने की बात है।"

इस बातचीत का परिणाम यह हुआ कि उस दिन नूरुद्दीन भगवानदास के साथ चल पड़ा। भगवानदास अपने हाथ में बाईसिकल लिए चल रहा था और नूरुद्दीन पैदल था। इस कारण भगवानदास भी पैदल ही था। नूरुद्दीन ने कहा, "भगवान भैया! अब तो तुमसे रोगी राय लेने आने लगे हैं और तुमसे मेल-जोल का वक्त ही नहीं मिलता। मैंने यह समझा कि रास्ता चलते-चलते ही कुछ बातचीत कर लिया करें।"

"तुम सब लोगों ने मेरी मशहूरी करने में ज़ोर लगाया है तो काम चलेगा ही। अब तो एक-आध कन्सल्टिंग फ़ीस भी आने लगी है।"

"हाँ, मैं देख रहा हूँ। भापा, मैं तो सोचता हूँ कि वह वक्त करीब है जब भगवान भापा को नूरे से बात करने की भी फुरसत नहीं रहेगी। मेरा चित्त इससे बहुत प्रसन्न है। 'बाई दि वे'," नूरुद्दीन ने बात बदल दी, "इस साल का हमारी कम्पनी का हिसाब-किताब करीमा ने तैयार किया है। नकद दो लाख रुपये का लाभ हुआ है। इसमें बाबूजी का हिस्सा पचीस हज़ार से ऊपर का बना है।"

"बहुत कमाया है, भैया!"

"हाँ, इसमें कुछ तो आपके पिता की मेहरबानी का फल है और कुछ हमारी मेहनत और ईमानदारी का। बकाया किस्मत की बात है। अब्बाजान बता रहे थे कि जब मैं और तुम आठवीं जमात में पढ़ते थे, तब अब्बाजान का हाथ बहुत तंग था। अम्मी ने उनको कहा, 'मियाँ, बच्चे तो पैदा करते जाते हो, कुछ आमदनी भी बढ़ाने की कोशिश करो। नहीं तो, भूखों मरने लगेंगे।'

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"इस पर वालिद साहिब ने अम्मी को कह दिया, 'दिन-भर मेहनत से काम करता हूँ। फिर भी ढाई रुपए से ज्यादा मिलते नहीं और उसमें भी महीने में पाँच-छः दिन खाली रह जाता हूँ। मुझको कुछ सूझ नहीं रहा कि कैसे आमदनी बढ़े।'

"अम्मी का कहना था, अपनी समझ में नहीं आता तो किसी दूसरे से राय कर लो। लालाजी तुम्हारे बहुत गहरे दोस्त हैं। उनसे ही पूछो कि आमदनी कैसे बढ़ायी जा सकती है ?

"तब अब्बाजान ने बाबूजी से बात की। उन्होंने अपने एक वाक़िफ ठेकेदार से मेरे वालिद साहब के लिए कोई काम पूछा। वे एक बहुत बड़ी इमारत बनवाने वाले थे। उसमें खुदाई का काम था। उन्होंने वालिद साहब को कुछ मज़दूर लेकर काम पर आ जाने को कहा। वालिद साहब दस मज़दूर लेकर वहाँ जा पहुँचे। खुदाई होने लगी। दिन-भर के काम की पैमाइश कराई गई और मज़दूरों की मज़दूरी देकर वालिद साहब को तीन रुपए बच गए। अगले दिन वालिद बीस मज़दूर लेकर वहाँ जा पहुँचे। उस दिन पाँच रुपए बचे। इसी तरह रोज होने लगा। कुछ दिन के बाद ठेकेदार ने वालिद साहब से पूछा, 'कुछ रुपया लगा सकते हो ?'

"वालिद ने पूछ लिया, 'कितना ?'

"उसने कहा, 'चाहिए तो चार-पाँच सौ के बीच। इसके अलावा सौ-दो सौ हमेशा जेब में रहें तो ठीक रहता है।'

"वालिद साहब ने लालाजी से जिकर किया तो उन्होंने एक हज़ार रुपया दे दिया। बस काम चल निकला। दो साल में ही वालिद ठेकेदार बन गए। जिस दिन से हमने बाबूजी को पत्तीदार बनाया है, उस दिन से एक तो बड़े-बड़े ठेके मिलने लगे और दूसरे काम में बरकत पड़ने लगी है।

"भापा ! करीमा हिसाब रखती है और ऐसे ढंग से समझाती है कि हम कभी नुक्सान उठा सकते ही नहीं। हम परिवार के लोग काम करते हैं और बाबूजी आशीर्वाद तथा काम की राय देते हैं। कम्पनी के खजाने में रुपया बरसता है।"

"नूरुद्दीन !" भगवानदास ने कहा, "मुझको तुम्हारी तरक्की की खबर सुन बहुत खुशी हुई है।"

"और तुम्हारी क्या हालत है ?"

"पाँच सौ मिलता है। उसमें से मकान का भाड़ा, प्रॉविडेंट फंड, टैक्स आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
देकर साढ़े तीन सौ पल्ले रह जाता है। उसमें से कुछ पिताजी को देता हूँ और शेष में नौकर, रोटी, कपड़ा वग़ैरा चलता है।"

"पिताजी को! भला उनको देने की क्या ज़रूरत है?"

"वे पिता हैं। मैं घर में उनके साथ रहता तो घर-भर के खाने का खर्च देता। अब उन्होंने अलहदा मकान में जाने को कहा है तो उनको प्रति मास अपनी श्रद्धा और सामर्थ्यानुसार दे आता हूँ।"

"कितनी है तुम्हारी सामर्थ्य?"

"अभी डेढ़ सौ दे रहा हूँ। वेतन-वृद्धि पर अथवा खर्च बढ़ने पर इस रकम पर दोबारा विचार कर लूँगा।"

"डेढ़ सौ! बहुत ज्यादा दे रहे हो।"

"नहीं, नूरुद्दीन! जीवन-भर उनसे लेता रहा हूँ। कुछ तो उनको देना चाहिए। लिये हुए के मुकाबिले में तो यह कुछ भी नहीं।"

"मगर, क्या उनको इसकी ज़रूरत है?"

"यह देखना मेरा काम नहीं। देखो नूर! अगर उनके पास कुछ है तो उसके उत्तराधिकारी हम दोनों भाई ही तो हैं।"

"मैं समझता हूँ कि उनको कुछ तुम्हारी सहायता करनी चाहिए। शायद करते भी हों?"

"करते तो नहीं। मगर मेरी गुज़र हो रही है। अब फ़ीस भी मिलने लगी है।"

"पर भगवान भापा! एक मोटर चाहिए। मैंने एक मोटर ले ली है। कल सवारी में आ जाएगी। उसको बिना कोई भी डॉक्टर शोभा नहीं पाता। परन्तु भगवान! क्या लालाजी कभी तुमसे पूछते नहीं कि तुम्हारी गुज़र कैसे होती है?"

"पूछा तो नहीं। बस कुशल-समाचार तो पूछते रहते हैं।"

"मैं कल उनसे कहूँगा कि तुम्हारे लिए एक मोटर खरीद दें।"

"नहीं, नूर! तुम मत कहना। मेरे पास मोटर को चलाने के लिए पेट्रोल का खर्च भी नहीं है।"

"भापा! वह भी मिलना चाहिए।"

"नहीं, नहीं; मुझको उनसे नहीं माँगना चाहिए। एक-दो वर्ष की बात है। मैं अपने पाँव पर स्वयं खड़ा हो जाऊँगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस समय वे कोठी में पहुँच गए थे। आज वे आठ बजे से पहले ही वहाँ पहुँच गए थे। माला बरामदे में कुर्सी पर बैठी एक बहुत छोटा-सा स्वेटर बुन रही थी। वह नूरुद्दीन को अपने पति के साथ आया देख, उस स्वेटर को टोकरी में, जो सामने रखी थी, छिपाने लगी। भगवानदास ने बाईसिकल नौकर के हाथ में पकड़ा दी और माला के पास आकर कहने लगा, "माला ! इनको जानती हो ?"

"जी जानती हूँ।"

"तो खाना लगवाओ। ये आज खाना यहाँ खाएँगे।"

"और इनकी बीवी ने जो खाना बनाया होगा ?"

"वह कल सुबह कौओं को खिला देंगे।" भगवानदास ने कह दिया।

अब नूरुद्दीन ने मुस्कराकर कहा—"भापा ! भाभी ने मेरे लिए बनाया मालूम नहीं होता।"

"तो आपके आज आने की खबर थी, क्या ?" माला ने पूछा।

"हाँ, मेरे भापा भगवानदास के घर कभी-कभी आकर खाने की खबर तो आज से बीस साल पहले से है।"

तीनों हँसने लगे। हँसकर माला ने कहा—"मगर उस समय तो मैं पैदा नहीं हुई थी।"

सब भीतर खाने के कमरे में जाने लगे तो भगवानदास ने सीताराम से कह दिया, "सीता ! तीन के लिए खाना लगा दो।"

जब ये खाने के कमरे में गए तो भगवानदास अपने सोने के कमरे में कपड़े बदलने चला गया। माला वाश-बेसिन में, जो उसी कमरे में लगा था, हाथ धोने लगी। वह जब कुर्सी पर आकर बैठी तो नूरुद्दीन ने कह दिया, "भाभी की मरजी नहीं थी कि यह नूरा यहाँ खाना खाए। पर नूरा बेशर्म ऐसा है कि जहाँ खाने की गन्ध आई, खाने बैठ गया। क्यों भाभी ! ठीक है न ?"

"यह होटल तो है नहीं।" माला ने कह दिया।

"लाहौलविला ! होटल में खाने के लिए तो इतने तरद्दुत की जरूरत नहीं होती। वहाँ तो दाम से खाने को मिल जाता है। यहाँ भाभी के घर में बिना दाम के खाने आया हूँ।"

"हाथ धोओ नूर !" भगवानदास ने कह दिया। वह कपड़े बदल आया था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"भापा ! मैं यही पूछ रहा था कि भाभी की मरज़ी खिलाने की है या नहीं ?"

"मगर आप तो कह रहे थे," माला ने कह दिया, "कि ज़बरदस्ती खाने आए हैं।"

"यह तो तब, जब भाभी की मरज़ी न हो।"

"अरे भाई, बैठो !" भगवानदास ने कह दिया।

नूरुद्दीन ने भी हाथ धोए और खाने के लिए बैठ गया।

: २ :

"आप इसको साथ क्यों ले आए थे ?"

नूरुद्दीन को विदा कर, गोल कमरे में बैठते हुए माला ने कह दिया।

"ले नहीं आया। यह चला आया है और मैं उसको इंकार नहीं कर सकता।"

"क्यों ?"

"वह मेरा दिली दोस्त है। इसके कारण हमारे परिवार को बहुत लाभ हो रहा है।"

"जो लाभ हो रहा है, वह सब मुझको पता है।"

"अच्छा ! मुझको तो पता नहीं था।"

"मुझको तो अपने विवाह से पहले ही मालूम हो गया था।"

"ओह ! तो तुम बहुत समझदार हो। मुझको तुमसे कुछ सीखना होगा।"

"आपका दिली दोस्त मेरी बात का समर्थन कर तो गया है। वह कह गया है कि उसकी आपसे साझेदारी की खबर सबको आज से बीस साल पहले से है और विवाह हुए अभी डेढ़ वर्ष ही हुआ है।"

"उसका मतलब तो यह है कि वह मेरा तब से दोस्त है, जब हम बहुत छोटी आयु के थे।"

"जी ! मैं भी तो यही कह रही हूँ।"

भगवानदास बताने वाला था कि प्रीमियर कन्स्ट्रक्शन कम्पनी से पिताजी को एक वर्ष में पच्चीस हज़ार का लाभ हुआ है, परन्तु जब-जब भी वह कोई जानकारी की बात अपनी पत्नी को बताने लगता था, वह पहले ही उसके विदित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri
होने की बात कहने लगती थी। इस पर वह चुप रह जाता था। अमीर गरीब को बे-समझ समझते ही हैं। आज भी वह कहता-कहता रुक गया। उसको बात बताने में रस नहीं रहा।

माला ने कह दिया, "मैं इन लोगों के यहाँ आकर रोटियाँ तोड़ने को पसन्द नहीं करती। उस दिन मोहिनी आई थी। जबरदस्ती माँ के साथ होटल में रोटी खाने चल पड़ी। माँ और भैया क्या कहते होंगे?"

"क्या कहते होंगे?"

"यह ठीक नहीं लगता। बिना निमंत्रण के, किसी के घर खाने जाना तो असभ्यता का लक्षण है।"

"हम हिन्दुओं में तो अतिथि की बहुत महिमा मानी जाती है।"

"वह क्या होता है?"

"जो मेहमान बिना 'नोटिस' के आए उसकी खातिर करने से बहुत पुण्य मिलता है।"

"पर देखिए न! अगर घर पर खाना न बना होता तो?"

"तो उसको आधा घंटा प्रतीक्षा करनी पड़ती। इससे कुछ अनर्थ न हो जाता।"

"मुझको यह ठीक नहीं लग रहा।"

"जाने के वक्त बाहर जाकर वह मुझको बधाई दे गया है।" भगवानदास की आँखों में चमक बढ़ गई थी। उसने बात बदलने के लिए कह दिया।

"कैसी बधाई?"

"कह गया है कि आज से छः महीने के बाद हमारे घर में लड़का होगा।"

"बहुत बेशर्म है!"

"इसमें बेशर्मी की बात क्या है? तुम सबके सामने जब उसके लिए स्वेटर बुनती रहती हो तो इस बात की डुग्गी पीटने के लिए ही तो है।"

"तो उसने मुझको बुनते देख लिया है? मैंने तो छुपा लिया था।"

"आँखों वाले देख लेते हैं।"

"मगर आपको तो कई दिन तक दिखाई नहीं दिया। यह तो उसका तीसरा स्वेटर है।"

"मगर मुझको तो इस बात का ज्ञान स्वेटर देखने से बहुत पहले का है।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"अच्छा, इसको अब घर मत लाइएगा।"

मगर अगले दिन करीमा आ पहुँची। माला तो टुकर-टुकर मुख देखती रह गई। करीमा बुर्का पहने मोटर में सवार हो आई थी। मोटर से उतरकर वह माला के सामने आकर खड़ी हुई और उसको परेशान देख, मुख पर से बुर्का उठा खिलखिलाकर हँस पड़ी। हँसते हुए उसने पूछा, "नहीं पहचाना भाभी!"

"पहचान तो गई हूँ। मगर कैसे आई हो?"

"भाभी के दीदार हासिल करने।"

"क्या पड़ा है इन दीदारों में?"

"अब तो बहुत कुछ है। कुछ तो पहले भी था। मगर अब तो भाभी के देवर कह रहे थे भाभी सवाई हो रही है। इसलिए आई हूँ। भाभी! मैं इस वक्त क्या खिदमत कर सकती हूँ?"

"मुझको मिलने मत आया करो।"

"क्यों?"

"बस, कह दिया। मैं जब तुमको देखती हूँ तो मेरे दिल में काँटा-सा चुभने लगता है।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि यह काँटा क्यों चुभता है?"

"सब औरतों को अपनी सौतें देखकर ऐसा होता ही है।"

यह सुनकर करीमा बरामदे में रखी एक कुर्सी पर ही बैठ गई और बोली, "भाभी! बैठ जाओ। बहुत देर तक खड़े रहने से कोई कष्ट न हो जाए।"

विवश माला बैठी तो करीमा ने कह दिया, "तो तुम अपने को मेरी सौत मानती हो, भाभी! यह है तो खराब बात, मगर मैं कहती हूँ कि मुझको तो इससे दिल में काँटा चुभने की जगह निहायत खुशी महसूस होती है।"

"तो क्या खराब बातों से भी खुशी होती है?"

"हाँ, जब सौत भाभी जैसी-नेक औरत बन जाए तो खुशी होती है। कहीं कोई चकले की आवारा औरत होती तो बहुत बुरा होता।"

"बहुत बेशर्मी की बातें करती हो तुम?"

"यह बात तो भाभी ने की है। मैं तो यह पूछने आई थी कि इस हालत में अकेली बैठे रहने से मन उदास होता हो तो या तो माँजी के घर चली आओ या मैं तुम्हारे घर में आकर रहने लगूँ।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"नहीं। मेरा मन उदास नहीं। अभी चार महीने तो मैं यहाँ रहूँगी। उसके बाद अपनी माँ के घर चली जाऊँगी।"

"देख लो। हम तो सब तरह से हाज़िर हैं।"

"मैं समझती हूँ कि अगर इतना ही काम था तो अब तुम जा सकती हो।"

"तो कुछ चाय वग़ैरा को नहीं पूछोगी ?"

"चाय का अभी वक्त नहीं है ?"

"कितने बजे चाय का वक्त होता है ?"

"पौने चार बजे।"

करीमा ने कलाई पर बँधी सोने की घड़ी में समय देखा और कह दिया, "बस पौना घंटा रह गया है। इतनी देर तक एक-दो मीठी-मीठी बातें करेंगी। फिर चाय पिऊँगी। भैया आ जाएँगे तो उनको मोटर में शहर वाले मतब (क्लिनिक) में ले जाऊँगी।"

विवश, माला को उसकी संगति में रहना पड़ा। अब करीमा ने माला के माता-पिता के स्वास्थ्य के विषय में पूछना आरम्भ कर दिया। उसके माता-पिता, भावज-भाई और उसके बहन-बहनोई की चर्चा चलने लगी। अपने मायके वालों की बातें माला बहुत रुचि से करने लगी। आधा घंटा व्यतीत हो गया। अब करीमा ने अपने माता-पिता की बात आरम्भ कर दी। उसने कहा—"मेरे वालिद बहुत ही गरीब थे। जब मेरे विवाह की बातचीत हो रही थी, वे परेशान थे कि विवाह पर खर्च कहाँ से करेंगे। विवाह के कुछ दिन पहले मुनव्वर के वालिद आ गए। उन्होंने हमारे घर का दरवाज़ा खटखटाया तो मैंने ऊपर से झाँककर देखा। रात का वक्त था। मैं पहचान नहीं सकी और पूछ लिया, 'कौन है ?' वे बोले, 'सादिक साहब हैं ?' मैंने अब्बा को नीचे भेजा। मैं और अम्मी अब्बा के पीछे छुपकर सुन रही थीं कि यह कौन बला आई है। अम्मी ने पहले पहचाना। वे इतना कहकर चले गए कि हमको शादी पर कुछ भी खर्च नहीं करना चाहिए और चुपचाप आले में पाँच सौ रुपया रख गए। अँधेरे में उनको रखते हुए किसी ने नहीं देखा। अगले दिन माँ ने सफाई करते वक्त रुपया देखा तो रुपया वापस करने की बात होने लगी। मगर हमारी मज़बूरी थी। वह रुपया अंधे को दो-दो आँखें मिलने की बात हुई। उस रुपए से मेरे कपड़े बने, आभूषण बने और फिर छोटी-सी बरात में आए मेहमानों में मिठाई बाँटी गई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"यह रुपया अब तक नहीं दिया जा सका। मुनव्वर के पैदा होने के बाद की बात है, एक दिन, मैं उनके हिसाब की किताबें देख रही थी। इनकी बही में लिखा देखा—'कम्मो, पाँच सौ रुपए।'

"मैं समझ गई। फिर भी मुनव्वर के पिता से पूछ बैठी। इन्होंने बही देखी तो मुस्कराते हुए कह दिया, 'यह तुम्हारे नाम नहीं। बल्कि एक शै खरीदी थी। उसका दाम लिखा है।'

"शै?' मैंने हैरानी में पूछा और इन्होंने हँसकर कहा, 'हाँ, इस कम्मो के वालिद बहुत ही सीधे-सादे आदमी हैं। इन्होंने एक लाख रुपए की शै पाँच सौ में दे दी। मुझको कामिल यकीन है कि अब इनको इस सौदे का अफ़सोस लग रहा होगा।'

"तो यह कम्मो लाख रुपए दाम की है?' मैंने पूछा। इनका कहना था—'हाँ! यह तो कम-से-कम दाम बता रहा हूँ। मैं तो कई लाख दाम लगाता था। मगर इतने से कम नहीं।'

"एक और भी सौदा इन्होंने किया है। एक लाला लोकनाथ हैं। उनको ये और इनके वालिद खरीदने चल पड़े। लालाजी को ये जानते तो थे, उनसे काम भी लेते थे, मगर उनको ही अपनी मल्कियत बनाने के लिए कोशिश होने लगी। आखिर मुनव्वर के बाप ने एक तजबीज़ चलाई। लाला लोकनाथ जी के लिए बारह हज़ार की लागत से मकान बनवा दिया। वे मकान का दाम देते थे, मगर ये तो लालाजी को ही खरीदना चाहते थे। आखिर मकान देकर लालाजी को मोल ले लिया। उससे इनको, इनका कहना है, दस लाख रुपए का माल मिल गया है।

"मैंने एक दिन कहा भी कि यह सौदा बहुत महँगा हुआ है। उन्होंने पूछ लिया, 'कौन-सा सौदा?'

"यह लालाजी को मकान देकर लेने का?'

"मुनव्वर के बाप कहते हैं कि लालाजी को इन्होंने ठग लिया है।"

"तो तुम मुझको खरीदने आई हो?" माला ने पूछा।

"पर, मैं तो खुद बिकी हुई हूँ।"

इस समय भगवानदास कॉलेज से आ गया। "ओह! करीमा भाभी! आज तो बहुत मेहरबानी की है जो यहाँ दर्शन दिए हैं?"

"भाभी से मिले बहुत दिन हो गए थे। आज ख्याल आया कि ये तो मिलने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आएँगी नहीं, खुद ही चलना चाहिए।"

"तो मिली हो ?"

"हाँ, यहाँ आए डेढ़ घण्टे के करीब हो गया है। भाभी तो बिना चाय-पानी पूछे टरका रही थीं, मगर मैंने कह दिया चाय पीकर ही जाऊँगी।"

भगवानदास हँस पड़ा। हँसकर और बात बदलकर पूछने लगा, "यह मोटर आपने मोल ली है ?"

"जी ! मेरी ख्वाहिश थी कि चाय पी लें और ज़रा भाभी को लेकर इसमें सैर करें।"

"नहीं, मैंने बहुत सैर की है मोटरों की। यह तो उनको कराएँ जिन्होंने कभी मोटर देखी न हो।" माला ने माथे पर त्यौरी चढ़ाकर कहा।

"भापा ! आप मोटर लेते क्यों नहीं ? भाभी के माता-पिता ने आपको मोटर के लिए दाम तो दे रखा है।"

"अभी मोटर चलाने के लिए पेट्रोल का दाम नहीं है।"

"तो वह इनकी माताजी ने नहीं दिया ?"

"नहीं, पूछ लो। शायद इनको प्राइवेट रूप में दिया हो।"

माला ने माथे पर त्योरी चढ़ाकर कहा—"उनको यह पता नहीं था कि मेरे श्वसुर इतने कंगले हैं कि सौ रुपया महीना भी खर्च नहीं कर सकेंगे।"

इस समय चाय आ गई। करीमा ने चाय बनाते हुए कह दिया, "कोई कह रहा था कि वे तो पैट्रोल के लिए हर महीने भाभी को खर्च दे जाते हैं।"

"कौन कह रहा था ?" भगवानदास ने विस्मय में पूछा।

"आपके दोस्त ही तो कुछ ऐसी बात कह रहे थे। मुझको कुछ ऐसा पता चला है कि डेढ़ सौ रुपया महीना लालाजी मोटर खर्च के लिए दे जाते हैं।"

"किसको ?"

"भाभी को। मगर भापा ! मैं पक्की बात नहीं कर सकती। मेरे समझने में भी भूल हो सकती है। भाभी से ही पूछ लें। क्यों भाभी ! यह सच है क्या ?"

भगवानदास विस्मय में अपनी पत्नी का मुख देखने लगा, तो माला ने बात बदल दी, "इस औरत की बात पर मत जाइए। यह तो अभी कह रही थी कि इसके श्वसुर और ख़ाविंद ने आपके पिताजी को बारह हज़ार रुपए में मोल ले रखा है।"

मकान की घटना का वृत्तान्त भगवानदास को विदित था। उसने कहा, "हाँ,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक ख्याल से यह ठीक कहती हैं। पिताजी ने इसके श्वसुर को एक हज़ार रुपया किसी समय दिया था। तब इनकी हालत पतली थी। जब इन्होंने कुछ पैसा पैदा कर लिया और इनका कारोबार चलने लगा, तब नूरुद्दीन के वालिद एक हज़ार रुपए लेकर आए। उस समय पिताजी ने रुपया वापस नहीं लिया। पिताजी ने हँसी-हँसी में कह दिया, 'हमने तो खुदाबख्श को एक हज़ार रुपए में गिरवी रखा हुआ है। हम उसको छोड़ नहीं सकते। उस वक्त खुदाबख्श एक हजार का था, अब वह पचास हज़ार का है।'

"उन्होंने रुपया नहीं लिया और कह दिया कि इस रुपए से बहू के लिए ज़ेवर तथा कपड़े बनवा दिए जाएँ।

"नूरुद्दीन के वालिद कहने लगे, 'मैं अपने को गिरवी से छुड़ाने आया हूँ।' पिताजी बोले—'पर मैं बेवकूफ नहीं हूँ जो पचास हज़ार की चीज़ को एक हज़ार में लौटा दूँ।'

"नूरुद्दीन के वालिद समझ गए। इसलिए उस समय तो वे चुप रहे और उस हज़ार रुपए को उन्होंने अपने कारोबार में हिस्सा समझ लिया। अब वे कहते हैं कि उनके कारोबार की सब पूँजी उसी एक हज़ार रुपए की है। इस वक्त कई लाख रुपए की हो गई है। वे समझते हैं कि पूँजी तो सब पिताजी की है, वे केवल मज़दूरी के हकदार हैं।

"अब नूरुद्दीन ने एक और चाल चली है। उसने चार वर्ष हुए, हमारा नया मकान बनवा दिया है। उस पर बारह हजार की लागत आई थी। पिताजी वह बारह हजार देने लगे तो उन्होंने हिसाब लगाकर दिखा दिया कि उस बारह हज़ार का कई लाख हो गया है और जीवन के अन्त से पहले दस लाख हो जाएगा। अतः वे कहते हैं कि बारह हज़ार से हमने दस लाख का आदमी बाँध रखा है।"

"अब समझी," माला ने कहा, "चोरी का माल और लाठियों के गज़।"

"कौन चोरी का माल है और किसकी लाठी गज़ बना रही हो?"

"एक हजार में पचास हज़ार और बारह हज़ार के दस लाख।"

इस पर तीनों हँसने लगे।

चाय समाप्त हो गई तो करीमा ने उठते हुए कह दिया, "चलो भाभी, घुमा लाऊँ।"

"मोटर में?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"हाँ।"

"मैं तो हवाई जहाज़ में घूमने जाऊँगी।"

"सत्य !" भगवानदास ने पूछ लिया।

"मैं इस छकड़े में नहीं जाऊँगी।"

भगदानदास को अपनी पत्नी की ऐसी बेतुकी बातें सुनने का अभ्यास हो गया था। फिर भी वह करीमा की डेढ़ सौ रुपए वाली बात समझ नहीं सका था। उसने करीमा के सामने अपनी पत्नी से कुछ नहीं पूछा। आज डॉक्टर और करीमा दोनों मोटर में शहर चले गए। ड्राइवर मोटर चला रहा था। करीमा बुर्का पहने पीछे बैठी थी और भगवानदास आगे ड्राइवर के पास।

: ३ :

रात को नूरुद्दीन की मोटर में डॉक्टर भगवानदास कोठी में आ गया। बाहर हार्न बजा तो माला ने समझा कि फिर वह बदकार औरत आई है। इससे वह उठकर बरामदे में आ गई। वह यह विचार करने लगी थी कि उसको दो-तीन जली-कटी सुनाकर बाहर से ही वापस कर दे, तो ठीक है। मगर मोटर में कोई नहीं था। ड्राइवर भगवानदास को छोड़कर मोटर ले गया। भगवानदास मोटर से उतर, कोठी के बरामदे में आया तो माला को सन्देह हो गया कि करीमा मोटर से उतरी नहीं। इससे वह जल-भुन गई। उसने पूछ लिया, "तो वह गई ?"

"मोटर ? हाँ, ड्राइवर ले गया है।"

"मैं मोटर की बात नहीं पूछ रही। मैं तो आपकी प्रेमिका की बात पूछ रही हूँ।"

"मेरी प्रेमिका तो तुम हो और मेरे सामने खड़ी हो।"

"वह करीमा थी न ? चली गई है न !"

"वह नहीं थी। मोटर में ड्राइवर ही था।"

"शुक्र है !"

"क्यों ? वह तुम्हें काटती है, क्या ?"

"उसको देख, मेरे तन-मन में आग लग जाती है।"

"मगर क्यों ?" इस समय वे बरामदे से ड्राइंग-रूम में आ गए थे। भगवानदास कपड़े उतारने के लिए सोने के कमरे में जा रहा था। माला ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथ-साथ चलते हुए पूछ लिया, "खाना खाकर आए हैं, क्या ?"

भगवानदास ने घड़ी में समय देखा और कह दिया, "अभी तो आठ भी नहीं बजे। मैं तो वहाँ खाना खाने के लिए गया था, मगर माँ ने कह दिया कि मुझको फौरन लौट जाना चाहिए। इस हालत में बहू को बहुत देर तक अकेला नहीं छोड़ना चाहिए।"

"तो मेरी इस हालत की नगर-भर में डुग्गी पीट दी गई है ?"

"नगर-भर में तो नहीं। हाँ, माँ को और मोहिनी बहन को ज़रूर पता चल गया है और वे इस समाचार को सुनकर बहुत खुशी मना रही हैं।"

"और मुझको इसमें लज्जा लग रही है।"

"लज्जा की क्या बात है, इसमें ? जब कुछ था नहीं तो पिताजी से शिकायत करने गई थीं और जब है तो शर्म लगने लगी है ?"

"पिताजी से कब शिकायत की थी ?"

"जिस दिन तुम शहर वाला मकान छोड़कर माँ के घर जा रही थीं। पिताजी खाना खा कपड़े पहनने अपने कमरे में गए थे और तुम सोई हुई उठकर उनके पीछे वहाँ जा पहुँची थीं। तुम यही तो कहने गई थीं।"

माला का मुख लज्जा से लाल हो गया। उसने पति को वहीं छोड़ दिया और बाहर आ, हाथ धो, खाने की मेज पर जा बैठी।

खाना खाते हुए भगवानदास ने पूछ लिया, "करीमा पिताजी के रुपयों की क्या बात कह रही थी ?"

"मुझको तो कुछ नहीं मालूम। उसको आपके वालिद देते होंगे और वह मेरा नाम झूठ ही लगा रही है।"

"तो मैं पिताजी से पूछूँगा। कल नूरुद्दीन ने भी कुछ इसी प्रकार की बात कही थी।"

"क्या कहा था उसने ?"

"उसने कहा था कि पिताजी को हमारी कुछ सहायता करनी चाहिए। कदाचित् कुछ करते भी होंगे। आज करीमा ने कह दिया कि उसका पति उसको कुछ ऐसी बात कहता है कि पिताजी सहायता के लिए कुछ तुमको देते हैं।"

माला ने बात बदल दी, "आज मेरी माताजी आई थीं। वे मुझको अपने घर ले चलने की बात कह रही थीं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"किसलिए ?"

"ऐसे ही। वे कह रही थीं कि जानकी आई हुई है। अब वह छठे मास में है।"

"परन्तु तुमको तो अभी तीन भी पूरे नहीं हुए ?"

"वे कहती थीं कि दोनों इकट्ठी रहेंगी तो ठीक रहेगा।"

"मैं इसमें लाभ के स्थान पर हानि देखता हूँ। दोनों को पृथक्-पृथक् ही रहना चाहिए।"

"मैंने उनको यह कहा था कि जानकी जब अवकाश पा जाएगी तो मैं वहाँ पहुँच जाऊँगी।"

"मेरे विचार में तुमको यहीं प्रसव करना चाहिए। हस्पताल समीप है। घर पर भी सब प्रकार की सुविधा रहेगी। डॉक्टर है, लेडी डॉक्टर भी है। नर्स है, और मैं सदा समीप रहूँगा।"

"विचार करूँगी।"

"मैंने विचार कर लिया है। यदि तुम रहोगी तो जल्दी ही माताजी यहाँ तुम्हारे पास आकर रहने लगेंगी। जब तुम्हारी माँजी जानकी से अवकाश पा जाएँगी, तब वे भी आ-जा सकती हैं और प्रसव यहीं होगा। अगर किसी प्रकार की कठिनाई समझ में आई तो सामने हस्पताल है ही।"

"अपनी माताजी को क्यों कष्ट देंगे ?"

"मैं उनको कुछ नहीं कह रहा। उनके यहाँ आने की बात तो उनकी अपनी विचार की हुई है।"

माला भोजन समाप्त कर भीतर चली गई। भगवानदास को रुपए की बात विचित्र प्रतीत हुई थी। चार महीने से वह पिताजी को रुपए दे रहा था और करीमा का कहना कि उतना ही उसके पिताजी माला को दे जाते हैं। उसको इसमें वैचित्र्य यह मालूम हुआ कि वे कब यहाँ आते थे और कब दे जाते थे। साथ ही न तो माला ने इसके विषय में कभी बताया था और न ही पिताजी ने इसका जिक्र किया था।

भगवानदास की समझ में करीमा तथा नूरुद्दीन की बात नहीं आई। इसी से उसने सन्देह प्रकट कर दिया था। अब वह पिताजी से इस विषय में पूछने का विचार रखता था।

अगले दिन रामदेई स्वयं माला से मिलने चली आई। स्वास्थ्य-समाचार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूछने के पश्चात् उसके दिन चढ़ने की बात होने लगी। माँ ने पूछा—"अन्तिम बार रजस्वला कब हुई थीं ?"

"ठीक याद नहीं। इस कोठी में आने के बाद एक बार हुई हूँ।"

"और यहाँ आए कितने महीने हो गए हैं ?"

"चौथा खत्म होने वाला है।"

"तो तुम तीसरे महीने में जा रही हो। अब तुम्हारा पुंसवन संस्कार होना चाहिए।"

"तो मेरी इस शर्म की बात नगर-भर में घोषित की जाएगी ?"

"देखो माला ! इसमें लज्जा की बात नहीं। तुमने हमारा परिवार चलाने का यह यत्न किया है। इससे हमको बहुत प्रसन्नता हुई है। परमात्मा की कृपा हुई तो लड़का होगा। नूरुद्दीन तो कहता था कि जरूर लड़का होगा। हम सब उसके इस कहने पर प्रसन्न हैं।

"मेरी सास के घर एक लड़का हुआ था। वह अकेला ही लड़का था। उसकी दो बहनें थीं। मेरे घर दो लड़के हुए और उसकी एक बहन है और मैं परमात्मा से प्रार्थना करती हूँ कि तुम्हारे घर तीनों लड़के हों।"

"बहुत मुसीबत है !"

"मैं तुम्हारी माताजी से मिलने गई थी और उनसे यह संस्कार और शकुन कब किया जाए, इस पर विचार करके आई हूँ। अगले सप्ताह वीरवार के दिन मुहूर्त है।

"तुम्हारी माँ से यह भी फैसला कर आई हूँ कि प्रसव यहीं होगा। मैं तो दो-तीन दिन में यहाँ आ जाऊँगी। तुम्हारी माँ समय पर आ जाएँगी।

"भगवानदास के पिता कह रहे थे कि अब एक मोटर तुमको भी ले लेनी चाहिए। उनका कहना है कि जो एक सौ पचपन रुपया वे प्रतिमास तुमको दे जाते हैं वह ड्राइवर के वेतन और पेट्रोल के लिए काफी है।"

"कौन-सा एक सौ पचपन रुपया ?"

"वे कह रहे थे कि हर महीने तुमको दे जाते हैं ?"

माला का मुख पीला पड़ गया। वह चुप बैठी रह गई। उसने इस बात का उत्तर नहीं दिया। रामदेई ने समझा कि माला को अभी भी शर्म लग रही है। कुछ देर तक माला चुपचाप रह, सास को वहीं छोड़, सोने के कमरे में जाकर लेट गई। उसकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सास ने यह समझा कि गर्भावस्था के कारण शिथिलता होने लगी है, इस कारण वह आराम करने चली गई है। उसने कोठी के अन्य भागों में देखभाल करनी और सीताराम से सफाई करानी आरम्भ कर दी। भगवानदास के पढ़ने-लिखने का कमरा भी झाड़-फूँककर साफ करवा दिया गया।

उस दिन भगवानदास कॉलेज से लौटा तो माला तब तक सोने के कमरे में लेटी हुई थी। उसने माँ को ड्राइंग-रूम में बैठे गीता पढ़ते देखा तो प्रसन्न हो पूछने लगा, "तो माँ ! तुम आ गई हो।"

"नहीं, अभी दो दिन तक नहीं आ सकूँगी। मोहिनी को पिताजी की रोटी आदि बनाने के लिए आने को कहा था। वह परसों से वहाँ आएगी और तब मैं इधर आ जाऊँगी। मैंने माला को यह विचार बताया। वह इसको पसन्द करती हुई मालूम हुई है। फिर उसकी माँ भी इसी बात को ठीक समझती है।"

"माला कहाँ है ?"

"भीतर लेटी हुई है।"

"क्यों, ठीक तो है ?"

"बेटा ! ऐसा होता ही रहता है।"

चाय आई तो भगवानदास माला को सोने के कमरे से बुला लाया॥ माला सर्वथा पीतमुख हो रही थी। रामदेई ने पूछा, "क्यों ? कुछ कष्ट है क्या ?"

"कुछ दुर्बलता महसूस हो रही है।"

"चाय पी लो। देखो बेटा ! थोड़ी-थोड़ी देर पर कुछ-न-कुछ खाते रहना चाहिए। यह पेट में बच्चे के खाना माँगने के लक्षण हैं।"

वे चाय पी रहे थे कि करीमा मोटर लेकर आ गई। उसने आते ही रामदेई से कहा, "मैं आपके घर गई थी और आपको वहाँ न देख, यह ख्याल कर कि आप जरूर इधर आई होंगी, मैं भी इधर आ गई हूँ।"

रामदेई ने उसके लिए भी प्याला लगा दिया और वह निश्चिन्तता से चाय पीने लगी। करीमा ने माला के मुख पर देखा तो पूछने लगी, "क्या बात है, भाभी ! आज तुम्हारा मुख पीला क्यों पड़ गया है ?"

"ठीक हूँ।" माला ने केवल इतना ही कहा।

"मैं समझती हूँ। चलो जरा खुली हवा में घूम आएँ।"

"नहीं, तुम जाओ। मैं समझती हूँ कि खाने की कमी से ऐसा हो रहा है। मैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कई दिन से कम खा रही थी । मुझको भय लग रहा था कि कहीं अधिक खा गई तो उल्टी न होने लगे ।"

"थोड़ा खाओ और दिन में कई बार खाओ ।" रामदेई ने समझा दिया ।

चाय समाप्त हुई तो करीमा भगवानदास और उसकी माँ को शहर वाले मकान पर ले गई ।

: ४ :

दो दिन पहले नूरुद्दीन ने भगवानदास से कहा था कि उसका पिता कदाचित् उसकी सहायता करता भी है । इसको भगवानदास ने नूरुद्दीन की केवल इच्छा-मात्र समझा था, परन्तु अगले दिन करीमा ने स्पष्ट ही कह दिया कि उसने सुना है कि लालाजी माला को डेढ़ सौ रुपया महीना दे जाते हैं । इससे भगवानदास ने समझा कि किसी प्रकार पिताजी उसका रुपया उसकी पत्नी को पहुँचा जाते हैं । कदाचित् वे उसके रुपए का अनादर करना नहीं चाहते, इस कारण रुपया वापस कर देते हैं । इसकी समझ में यह भी आया कि माला ने वह रुपया कदाचित् अपना पाकेट खर्च मानकर अपने पास ही रख लिया है और उसको बताने की आवश्यकता नहीं समझी । परन्तु क्या यह सत्य है कि पिताजी रुपया वापस कर रहे हैं ? उसने सोचा, इसकी जाँच-पड़ताल अवश्य करनी चाहिए ।

उस दिन वह अपने शहर वाले चिकित्सालय में गया तो पिताजी के वहाँ आने की प्रतीक्षा करने लगा । जब से भगवानदास वहाँ रोगी देखने लगा, लोकनाथ दफ्तर से लौटकर सीधे ऊपर मकान पर चले जाया करते थे और प्रायः पौने सात बजे, जब अधिकांश रोगी, दिखाकर, चले जाते थे, वह नीचे आ जाया करते थे । उस समय नूरुद्दीन भी वहाँ पहुँच जाता था । कभी खुदाबख्श भी किसी आवश्यक परामर्श करने के लिए आ जाता था । इस समय यदि किसी अन्य को लोकनाथ से काम होता, तो वह भी वहाँ आ जाता ।

उस दिन पिताजी को आया देख भगवानदास ने उनको अपनी कुर्सी के समीप एक कुर्सी पर बैठाकर पूछ लिया, "क्या, आप मेरा दिया रुपया वापस कर देते हैं ?"

"मैं उसमें पाँच रुपए अपने पास से डालकर माला को दे आया करता हूँ ।"

"यह आप कब से कर रहे हैं ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"जब से तुम कोठी में गए हो । ऐसा चार बार हो चुका है । परन्तु क्या उसने तुम्हें कभी बताया नहीं ?"

"नहीं । परन्तु पिताजी ! मैं तो वह रुपए घर के खर्च में सहयोग देने के लिए दे रहा था ।"

"मैं तुम्हारी इस भावना से बहुत प्रसन्न हूँ, भगवान ! परन्तु परमात्मा की कृपा से घर का खर्च चलाने में मुझको किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती । इसी कारण वह वापस कर देता हूँ ।"

भगवानदास ने आगे बात नहीं चलाई ।

लोकनाथ और रामदेई ने यह समझा कि अब सब बात भगवानदास और माला में खुल गई होगी और माला ने रुपए के विषय में न बताने का कारण अपने पति को बताकर, उसको सन्तुष्ट कर दिया होगा । जब अगले दिन पुनः रामदेई आई तो उसने माला को स्पष्ट ही कह दिया कि एक सौ पचपन रुपए जो उसको दिए जा रहे हैं वे पेट्रोल तथा ड्राइवर के लिए पर्याप्त हो जाएँगे ।

रामदेई ने माला के चुप रहने का कारण यह समझा कि उसको अपने पति वो रुपयों के विषय में न बताने की लज्जा आई है और वह इस विषय पर बात करना नहीं चाहती । ऐसा अनुमान लगा, उसने भी इस बात को अपने मन से निकाल दिया और सायंकाल, जब तक वह वहाँ रही, उसने पुनः उस रुपए की बात नहीं की । उस रात रामदेई ने अपने पति को भी कह दिया, "ऐसा प्रतीत होता है कि माला ने भगवानदास की तसल्ली करा दी है । अब हमको इस विषय में और कुछ नहीं कहना-सुनना चाहिए ।"

"ठीक है । तुम कब जा रही हो ?"

"माला के पास रहने के लिए न ?"

"हाँ ।"

"मोहिनी परसों इस घर में रहने के लिए आ जाएगी । वह आपके भोजन की व्यवस्था करेगी । कान्तिनारायण और बच्चे भी यहाँ आकर ही रहेंगे । तब मैं जाऊँगी ।"

"बहुत कष्ट दोगी उनको ।"

"परिवार में ऐसा होता ही है । कहते हैं 'दाहिना धोये बायें को और बायाँ धोये दाहिने को ।' "

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उस दिन लोकनाथ ने तो भगवानदास से रुपए की बात नहीं की। परन्तु नूरुद्दीन अपने मित्र को अपनी मोटर में लेकर गया तो भगवानदास ने ही बात आरम्भ कर दी।

उसने पूछ लिया, "कितने की ली है, यह मोटर ?"

"साढ़े सात हज़ार की।"

"क्या मेकर है ?"

"डॉज। बहुत मज़बूत गाड़ी है।"

"तब तो यह ली ही ज़ा सकती है। माला के पिता ने जो रुपया गाड़ी के लिए दिया था वह माला के एकाउण्ट में ही जमा है। अब तो ग्यारह हज़ार से कुछ ऊपर हो गया होगा।"

"मुझको बताकर लेना। मैं कुछ कमीशन दिलवा सकता हूँ।"

"कैसे ?"

"इसका एजेण्ट मेरा दोस्त है। इस गाड़ी में भी पाँच सौ रुपया कम करवाया है।"

"तब तो ठीक है।"

"तो लालाजी मदद करने की बात मान गए हैं ?"

"वे तो पहले से ही मदद कर रहे थे। माला डर रही थी कि कहीं दाम ग्यारह हज़ार से अधिक न हों ?"

"तो यह बात है। मैं समझता हूँ कि मोटरकार रखने से डॉक्टर की शान और रुतबा बढ़ जाता है। तुमको मोटर कोठी में रखनी चाहिए। इसके साथ ही बँगले में और शहर वाले मकान में टेलिफोन लगवा लो जिससे तुम चाहे कहीं भी हो, रोगी तुमसे फोन पर मशवरा कर सकें।"

"यह भी करूँगा।'

इस प्रकार बातचीत करते हुए वे वहाँ पहुँचे तो सीताराम नौकर बरामदे में खड़ा था। सीताराम ने बताया, "बीबीजी घर पर नहीं हैं ?"

"कहाँ हैं ?"

"बताकर नहीं गईं। मुझको कह गई हैं कि मैं यहाँ बरामदे से हिलकर कहीं न जाऊँ।"

"कितनी देर हुई, गए हुए ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"तीसरे पहर की चाय पीकर आप गए तो वे भी कपड़े पहनने चली गईं। कपड़े पहनकर आईं तो उनके हाथ में एक सूटकेस था। उन्होंने ताँगा मँगवाया और उसमें सवार हो चली गई। तब से ही मैं यहाँ बैठा हूँ।"

"अच्छा, खाना बनाओ।"

सीताराम भीतर चला गया तो नूरुद्दीन और भगवानदास विचार करने लगे। नूरुद्दीन बहुत कल्पनाशक्ति रखता था। उसने कह दिया, "दोस्त! पत्नी फिर भाग गई मालूम होती है।"

"भागने का कोई कारण नहीं।"

"क्या पहले भी कभी ऐसा हुआ है?"

"नहीं। वह सदा आठ बजे तक मेरी यहाँ प्रतीक्षा करती है। जब मैं आठ बजे से पहले आ जाता हूँ तो खाना इकट्ठे खाते हैं। जिस दिन सवा आठ बजे तक मैं न आऊँ, उस दिन वह खाना खा लेती है। आज तो हम आठ बजने में पाँच मिनट रहते तक यहाँ आ गए थे।"

"तनिक पड़ोसियों के घरों से पता करो।"

भगवानदास डॉक्टर खोसला के घर चला गया। नूरुद्दीन वहीं बैठा रहा। खाना परस दिया गया। भगवानदास अभी भी नहीं लौटा था। नूरुद्दीन ने सीताराम को डॉक्टर के पीछे भेज दिया। आधे घण्टे के बाद भगवानदास लौटा और बोला—"वह पड़ोस में किसी के यहाँ नहीं गई। मिसेज़ खोसला ने उसको ताँगे में अनारकली बाज़ार की ओर जाते देखा है। मैं समझता हूँ कि वह अपने माता-पिता के घर चली गई है।"

"तो चलो। मोटर में चल वहाँ से पता कर आएँ?"

"नहीं! जरा खाना खाकर दिमाग़ सही कर लें। कई दिन से उसकी बातों से खिजा बैठा हूँ। खाली पेट तो मुझको भी क्रोध आ जाएगा और मैं उससे झगड़ा करना नहीं चाहता।"

नूरुद्दीन चुप रहा। भोजन किया गया और नौकर को अपनी कोठरी में आराम करने को कह, शेष कमरों में ताला लगा, दोनों मित्र शरणदास के मकान के नीचे जा पहुँचे। नूरुद्दीन नीचे मोटर में बैठा रहा और भगवानदास ऊपर मकान पर चढ़ गया। आधे घंटे के बाद भगवानदास नीचे उतरा। रामकृष्ण भगवानदास के साथ था। उसने नूरुद्दीन को मोटर में बैठे देख सलाम की और कह दिया, "नूरुद्दीन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भैया ! मैंने तुमको एक बात पाँच महीने पहले कही थी । वह बात फिर पैदा हो गई है ।"

नूरुद्दीन भौंचक्का हो उसका मुख देखता रह गया । फिर बोला, "अच्छा ? मुझको तो पता नहीं ।"

"लेकिन हो तो गई है ।"

भगवानदास से हाथ जोड़ नमस्ते की और मोटर में बैठ गया । ड्राइवर ने मोटर चला दी ।

नूरुद्दीन ने भगवानदास के घर जा ड्राइंग रूम में बैठ पूछ लिया, "क्या बात है ? वह क्यों चली गई है ?"

"वह तो मुझको मिली नहीं । रामकृष्ण ही बताता रहा है । उसने बताया है कि माला की माँ कई दिन से माला की सेहत बिगड़ रही देख रही थी । आज वह वहाँ पहुँची । माला बिल्कुल ही कोलैप्स (शिथिल) हो गई । दिल बैठ रहा था और वह ताँगा लेकर साढ़े पाँच बजे की यहाँ आई हुई है । डॉक्टर को दिखाया है और उसका कहना है कि इसको दिल का दौरा पड़ा है । इस कारण इसको बिल्कुल आराम करने देना चाहिए । रामकृष्ण ने यह भी कहा कि डॉक्टर की सम्मति है कि इसको अपने ससुराल वालों से बिल्कुल मिलने नहीं देना चाहिए । इससे मैं उसके कमरे में नहीं गया । माला की माँ उसके पास थी ।"

नूरुद्दीन उस समय तो चुप रहा । मगर भगवानदास को यह कह कि अगले दिन उसकी खबर लेने जाए, वह सीधा लाला लोकनाथ के घर जा पहुँचा । उसने दरवाजे के बाहर लगी घंटी बजाई । लालाजी नीचे आए तो नूरुद्दीन ने बैठक में बैठकर पूछा, "लालाजी ! एक बात पूछने आया हूँ । नाराज न हों तो पूछूँ ?"

"नूरे ! यह आज कैसी बातें कर रहे हो ? क्या तुमने मुझको कभी भी नाराज़ होते देखा है ?"

"आज आप भगवानदास के घर गए थे क्या ?"

"नहीं तो । क्या हुआ है ?"

"आप रुपए देने के अतिरिक्त भी कभी उसकी पत्नी से मिले हैं ?"

"नहीं !" लोकनाथ को उस संकेत का स्मरण आया जो नूरुद्दीन ने उसको दिया था । उसमें उसने रामकृष्ण के कथन का उल्लेख किया था । इस कारण उसने चिन्ता व्यक्त करते हुए पूछ लिया, "क्या हुआ है, वहाँ ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"माला भाभी घर छोड़, माँ के घर चली गई हैं। भगवानदास की अनुपस्थिति में ही उसने ऐसा किया है। हम दोनों उसके बाप के घर पता करने गए थे। लेकिन भगवानदास को माला से मिलने नहीं दिया गया। उसको दिल के दौरे की बीमारी बताई गई है। रामकृष्ण भगवानदास को नीचे छोड़ने आया। मैं मोटर में बैठा भगवानदास का इन्तज़ार कर रहा था। रामकृष्ण ने मुझे देख कहा कि आपने माला के जीवन में फिर दखल दिया है।"

लोकनाथ का मुख क्रोध से लाल हो गया। उसने कहा, "भाई ! मैं समझा नहीं। क्या मतलब है इस औरत का ?"

"मुझको रामकृष्ण की बात पर कभी विश्वास नहीं आया, मगर वह बात इतने इत्मीनान से कहता है कि आपसे तसदीक करने की आवश्यकता पड़ गई है।"

"तो तुम क्या समझे हो इससे ?"

"यह औरत बदकार है। यह कुछ करना चाहती है जिससे आपको अथवा भगवान को बदनाम किया जा सके !"

लोकनाथ ने कुछ विचारकर पूछ लिया, 'भगवान क्या समझता है ?"

"वह कल अपनी पत्नी की खबर लेने जाएगा। जब उससे मिलकर आएगा, तब ही पता चलेगा कि वह इस विषय में क्या समझता है। मैं नहीं चाहता कि उसको हमारी ओर से इस विषय में कोई बात बताई जाए। ठीक यही होगा कि माला आप पर आरोप लगाए और फिर हम बात कर लेंगे।"

लोकनाथ गर्दन झुकाए ऊपर चढ़ गया। नूरुद्दीन घर जाकर सो रहा। करीमा ने पूछा भी, "आज ग़मगीन मालूम होते हैं। तबीयत तो ठीक है ?"

"ठीक है। सो जाने दो। मैं बहुत थक गया हूँ, आज।"

"क्या कस्सी चलाते रहे हैं ?"

"बेग़म ! आज सो जाओ। मत बोलो।"

: ५ :

अगले दिन ठीक नौ बजे एक चक्कर काम पर लगाने के बाद नूरुद्दीन भगवानदास की कोठी पर जा पहुँचा। भगवानदास अपनी ससुराल से लौटा ही था। नौकर अल्पाहार बना रहा था। नूरुद्दीन की मोटर के आने का शब्द सुन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भगवानदास कोठी से बाहर आ गया। नूरुद्दीन ने मोटर से निकलते ही पूछा, "दहाँ गए थे ?"

"अभी आया हूँ।"

"कैसी है ?"

"वह तो अभी भी नहीं मिली। उसकी माँ भीगी आँखों से बाहर आयी थी और कह गयी थी कि वह रात-भर सोई नहीं। अब जरा आँख लगी है।"

"मैं आधा घण्टा उसकी आँख खुलने की प्रतीक्षा करता रहा। रामकृष्ण ने एक बात और बताई हैं।"

"क्या ?" नूरुद्दीन ने उत्सुकता से पूछा।

"वह यह कि पिताजी माला से छेड़खानी करते रहे हैं। जब से वह इस कोठी में आई थी, वे मेरी अनुपस्थिति में आया करते थे और उससे मुहब्बत प्रकट करने की कोशिश किया करते थे। कल भी वे आए थे और बात सीमा से बढ़ गई तो वह कोठी से वहाँ भाग गई है। पिताजी के व्यवहार का उसके दिल पर बहुत बड़ा सदमा पहुँचा है।"

"और तुमको उसके कहने पर विश्वास आ गया ?"

"मैं कैसे विश्वास कर सकता हूँ ? मैं समझता हूँ कि मेरा दिमाग़ अभी तक ठीक काम करता है।"

"रामकृष्ण के पिता मिले हैं ?"

"नहीं, वे तो बम्बई गए हुए हैं।"

"देखो भगवान ! अभी इस बात की जाँच-पड़ताल हो जानी चाहिए।"

जब सीताराम खाना लेकर आया तो नूरुद्दीन ने उससे पूछा, "साहब के पिताजी को पहचानते हो ?"

"जी हाँ।"

"वे यहाँ कब आए थे ?"

"जब से मैं आया हूँ वे हर दूसरी या तीसरी तारीख को आया करते थे। इस महीने भी वे तीसरी तारीख को आए थे।"

"यह तारीख तुमको कैसे याद है ?"

"मेरा वेतन भी उन्हीं दिनों में मिला करता है। इस बार मेरा वेतन दूसरी तारीख को मिला था और पिताजी तीसरी तारीख को आए थे।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"कल तुम कहीं बाहर भी गए थे ?"

"जी नहीं, सब्जी-भाजी यहाँ बिकने आ जाती है। कल बाजार जाने की जरूरत नहीं पड़ी।"

"लालाजी को तुमने कल यहाँ देखा था ?"

"जी नहीं।"

"अच्छा भाई ! एक गिलास पानी ले आओ।"

नौकर पानी लेने गया तो भगवानदास ने कह दिया, "मैंने फ़ैसला कर लिया है कि अब मैं इस औरत का मुख नहीं देखूँगा।"

"कब तक ?"

"मरण-पर्यन्त।"

नूरुद्दीन टुकर-टुकर मुख देखता रह गया। सीताराम जल लाया। उसने जल पिया और चुपचाप बैठा रहा। भगवानदास ने अल्पाहार समाप्त किया, कपड़े पहने और हस्पताल की ओर चल पड़ा। नूरुद्दीन कुछ दूर तक उसके साथ गया। उसने केवल एक बात कही, "अच्छा दोस्त ! इसमें जो कुछ भी करना हो, मुझसे और लालाजी से राय करके ही करना।"

"मुझे कुछ नहीं करना है। मैं अब उससे मिलने नहीं जाऊँगा। एक-आध महीने में, मैं यह मकान भी छोड़ दूँगा और वहीं अपने पिताजी के पास चलकर रहूँगा।"

"अच्छा, अब तुम चलो। फिर बात करेंगे।"

भगवानदास ने अनारकली बाज़ार में से गुज़रना छोड़ दिया। लोकनाथ ने अपनी पत्नी और लड़की को स्पष्ट कह दिया कि वे माला से मिलने न जाएँ। करीमा को भी नूरुद्दीन ने यही हिदायत कर दी थी।

एक महीने के बाद भगवानदास ने सरकारी कोठी छोड़ दी। वह अपने पिता के साथ आकर रहने लगा। दोनों घरों में एक ही सम्बन्ध था। वह था, राधा पंडिताइन। वह कभी-कभी शरणदास के घर जाती और माला के समाचार लाकर सुना जाया करती थी।

राधा उधर जाकर माला और उसकी माँ को क्या बताती थी, यह उसने रामदेई इत्यादि को कभी नहीं बताया। इनको वह सदा यह बताती रहती थी कि माला खुश है, स्वस्थ और प्रसव के समीप होती जा रही है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदेई इत्यादि ने यह निश्चय कर रखा था कि वे माला की निन्दा अथवा प्रशंसा कुछ भी नहीं करेंगे।

एक दिन राधा आई और रामदेई से कहने लगी, "बहू को पीड़ाएँ हो रही हैं।"

"कब की बात करती हो?"

"मैं अभी-अभी वहाँ से आ रही हूँ।"

"परमात्मा भली करे।"

"तो बहन, जाओगी न?"

"नहीं।"

"क्यों?"

"यह तुम उससे ही पूछना।"

"बहन! मैं दोनों घरों का अन्न खाती हूँ। इससे इधर की बात उधर नहीं करती। मगर अब तो मुहल्ले में भी इसकी चर्चा होने लगी हैं। इसलिए मैं समझती हूँ कि इस वक्त भले ही दिखावे के लिए चली जाओ तो ठीक ही रहेगा।"

"मैं भगवान से पूछ लूँ। तब ही जा सकती हूँ।"

"तो उसने मना कर रखा है?"

"देखो पंडिताइन! बहू उसकी है। वह यहाँ आएगी तो उसके साथ रहने के लिए ही आ सकती है। मैं इस विषय में अपने पुत्र के अधीन हूँ।"

राधा चुप रही। अगले दिन वह आई तो उसने बताया, "भगवानदास के लड़का हुआ है।"

"कैसा है?"

"गोल-मटोल और गोरा-गोरा है।"

इससे आगे रामदेई ने कुछ नहीं पूछा। राधा भी समझ गई कि भगवानदास ने माँ को बहू को देखने जाने की स्वीकृति नहीं दी है।

समय व्यतीत होता गया। एक-दो-तीन करते-करते पाँच वर्ष बीत गए। भगवानदास का चिकित्सा-कार्य चलता रहा। वह कॉलेज में भी पढ़ाता था। वेतन के अतिरिक्त भी उसको पाँच-छः सौ रुपए फीस की आय होने लगी थी। इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समय वेतन भी सात सौ रुपए महीना था। लोकनाथ ने सरकारी नौकरी छोड़ दी और वह कन्स्ट्रक्शन कम्पनी में काम करता था। यह कम्पनी अब बड़े-बड़े ठेके लेने लगी थी। लाहौर नगर विस्तार पा रहा था। इस कम्पनी ने एक काम करना और आरम्भ कर दिया था। वे भूमि मोल लेते थे। उस पर मकान बनाते थे और फिर बेच देते थे। इस प्रकार भारी लाभ हो रहा था। अब कम्पनी दो दिशाओं में काम कर रही थी। लोगों के लिए और सरकार के लिए इमारतें बनवाती थी अथवा स्वयं मकान बनाकर लोगों को देती थी।

एक दिन भगवानदास कॉलेज से निकल, घर को पैदल ही जा रहा था कि शरणदास उसको सामने से आते हुए मिला। वह मोटर में था। उसने मोटर रोक ली और नीचे उतर भगवानदास के सामने खड़ा हो गया। भगवानदास आँख बचाकर निकल जाना चाहता था, परन्तु जब शरणदास सामने ही आकर खड़ा हो गया तो उसने हाथ जोड़ नमस्ते कर दी। शरणदास ने पूछा, "तुम लाहौर में ही रहते हो, भगवानदास !"

"जी, आपकी कृपा से अभी जीवित हूँ।"

"तुम्हारे कभी दर्शन नहीं हुए ?"

"कम-से-कम आज तो हो ही गए हैं ?" भगवानदास से मुस्कराते हुए कह दिया।

"बीवी को अपने घर ले जाना चाहते हो या नहीं ?"

"वह ले जाने योग्य नहीं रही।"

"क्या खराबी हो गई है उसमें ?"

"यह उससे ही पूछ लेते तो ठीक था।"

"पूछकर ही कह रहा हूँ।"

"तो उसने कुछ नहीं बताया ?"

"बताया है। जो कुछ बताया है, वह मैं यहाँ सड़क पर खड़ा-खड़ा नहीं सुना सकता।"

"तो फिर किसी दिन घर आकर सुना जाइए।"

"तो आओ मेरे साथ।" शरणदास ने खड़ी मोटर की ओर संकेत कर दिया।

"आपके घर तो मैं जाऊँगा नहीं। अपने घर आपको ले जा सकता हूँ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मगर इस गाड़ी में नहीं, ताँगे में ?"

"इस गाड़ी में क्या खराबी है ?"

"जो आपके घर में है।"

"मैं समझा नहीं ?"

"इससे अधिक जानने की आवश्यकता नहीं है।"

"अच्छा आऊँगा। तुम्हारे घर पर ही आऊँगा। आज नहीं, फिर किसी दिन।"

शरणदास नहीं आया। आठ वर्ष और बीत गए। अब नूरुद्दीन ने बाहर कोर्ट रोड पर एक बहुत बड़ी कोठी बनवा ली थी। उतनी ही जमीन पर उतनी ही बड़ी, बिल्कुल उसकी बगल में एक कोठी डॉक्टर भगवानदास ने बनवा ली थी। वह अपने माता-पिता को लेकर उसमें जाकर रहने लगा था। भगवानदास के भाई नरोत्तम ने इंजीनियरिंग पास कर ली थी। उसने भी पहले पंजाब गवर्नमेण्ट की नौकरी की थी, परन्तु एक दिन वहाँ से त्यागपत्र देकर घर आ गया। उसकी नौकरी जिला काँगड़ा में लगी हुई थी और वहीं उसने एक लड़की से विवाह कर लिया था। अपने अधिकारियों से एक मामूली-सी बात पर झगड़ा हुआ तो लम्बी छुट्टी लेकर चला आया। यहाँ पहुँच उसने त्याग-पत्र भेज दिया। इस प्रकार उसने भी कारोबार आरम्भ कर दिया। रेलवे रोड पर मशीनरी की दुकान खोल ज़ीविकोपार्जन करने लगा था। वह भी भगवानदास की कोठी में ही रहता था।

यों भी भगवानदास के दूसरे विवाह की चर्चा कई बार हुई थी, मगर वह मानता नहीं था। आयु तो कुछ बड़ी नहीं हुई थी। इस समय वह चौंतीस वर्ष का था। परन्तु अपने प्रथम विवाहित जीवन के अनुभव से उसका दिल बुझ-सा गया था।

: ६ :

जब नरोत्तम लाहौर आकर रहने लगा तो उसकी पहाड़िन बीवी ने, सौन्दर्य में अनुपम अपनी छोटी बहन का सम्बन्ध अपने जेठ से करने के लिए यत्न किया। उसने बहन को लाहौर बुलाकर अपने पास रखा। मगर डॉक्टर विवाह के लिए तैयार नहीं हुआ।

कई महीने के यत्न पर भी जब भगवानदास ने सुलक्षणा की बहन सुन्दरी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

 Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को स्वीकार नहीं किया तो उसने अपने पति से उसके विवाह का प्रबन्ध करने के लिए कहना आरम्भ कर दिया। जब बात लोकनाथ के कानों में आई तो उसने अपनी पुत्रवधू को बुलाकर पूछा, "क्या चाहती हो?"

"सुन्दरी का विवाह कहीं लाहौर में हो जाए।"

"अन्यत्र क्यों नहीं?"

"मैं चाहती हूँ कि मेरी बहन भी मेरी भाँति ही राज करे।"

"देखो सुलक्षणा! धनी तो बहुत मिल जाएँगे, एक धनी परिवार हमको भी मिला है। भगवानदास का इतिहास तुमने सुना है। धन में एक दोष होता है। वह बुद्धि भ्रष्ट कर देता है। यह अभिमान का उद्गम स्थान है और अभिमान से विनाश अवश्यम्भावी है।"

"परन्तु आप में तो वह बात दिखाई नहीं देती।"

"इसलिए कि तुम्हारी सास में ईश्वर का भय है।"

"तो संसार में अन्य कोई नहीं, जिसकी माँ के मन में ईश्वर का भय हो?"

"ढूँढ़ने पर मिल सकता है। हाँ, एक है। मगर मैं उससे तुम्हारी बहन के सम्बन्ध की बात कहते हुए संकोच करता हूँ।"

"कौन है वह?"

"नूरुद्दीन का लड़का मुनव्वर।"

सुलक्षणा चुप रही। वह बितर-बितर अपने श्वसुर का मुख देखती रह गई। लोकनाथ ने कहा, "मेरी अपनी लड़की उसकी आयु की होती तो रिश्ता तज़वीज करता।"

"और माताजी मान जातीं?"

"पूछकर देख लो।"

सुलक्षणा ने बात रामदेई से की। रामदेई ने कह दिया—"उसकी माँ और दादी लाखों में एक हैं, मगर वे हैं मुसलमान।"

"यही तो पूछ रही हूँ कि इस अवस्था में यदि आपकी लड़की उसकी आयु की होती और पिताजी मुनव्वर से विवाह के लिए कहते तो आप स्वीकार करतीं?"

"कर लेती।"

"क्यों?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"मुसलमानी और हिन्दूपन का विवाह तो होता नहीं। हाँ, लड़के-लड़की का हो सकता है और लड़के के विचार से वह लड़का सर्वगुण-सम्पन्न है।"

सुलक्षणा अपने मन को तैयार नहीं कर सकी। उसने पुनः लोकनाथ तथा रामदेई से इस बात का उल्लेख नहीं किया। अभी लड़की भी अठारह वर्ष की ही थी।

एक दिन ट्रिब्यून समाचार-पत्र में छपा, "लाहौर के रईस लाला शरणदास घड़ियों वाले का पिछली रात आठ बजे दिल की धड़कन बन्द हो जाने से देहान्त गया है। चौथा शनिवार सायं पाँच बजे, 'छोटेलाल' के मन्दिर में होगा।"

इस समचार को पढ़ते ही लोकनाथ के घर में विचार होने लगा कि इस अवसर पर रामकृष्ण से शोक प्रकट करने जाया जाए अथवा नहीं? विचार होता रहा। इस कार्य में किसी की रुचि नहीं थी। नूरुद्दीन ने करीमा से भी ज़िक्र किया। उसके मन की प्रतिक्रिया यह थी कि शोक प्रकट करने जाना चाहिए।

"उन्होंने कभी बुलाया तो है नहीं?" नूरुद्दीन ने कहा।

"बुलाया जाता है खुशी के मौके पर और खुशी क्रोध को कम करती नहीं। ग़मी के मौके पर ही इन्सान, खुदा के डर से मन की सब बुराइयों को दूर करना चाहता है और उस वक्त कोई बुलाता नहीं। अच्छे आदमी स्वयं ही ऐसे मौके पर हमदर्दी महसूस कर गिरे हुओं को उठाने पहुँच जाते हैं।"

नूरुद्दीन ने बताया कि भापा भगवानदास और लालाजी इसके हक में नहीं हैं।

करीमा का कहना था, "उनके दिलों के ज़ख्म अभी हरे हैं। उस पर मरहम लगाना हमारा काम है।"

करीमा रामदेई को समझाने चल पड़ी। उसकी एक ही युक्ति थी, "माताजी! मरना सबको है। मरने पर दुनिया के सब वैर-विरोध छूट जाते हैं। इससे उस फौत हुए की रूह के लिए दुआ करनी और उसकी मौत पर पीछे रह जाने वालों से हमदर्दी प्रकट करनी इंसान की आला ख्यालातों (श्रेष्ठ गुणों) का ज़हूर होता है।"

बात रामदेई की समझ में आई तो करीमा, रामदेई और मोहिनी शोक प्रकट करने उनके घर अनारकली को चल पड़ीं।

वे गईं और माया रानी के पास जा बैठीं। उनके पास ही माला, जानकी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और दयारानी बैठी थीं। वे तीनों इनको आया देख भौंचक्की रह गयीं।

करीमा ने बात की, "मौसी जी! कल समाचार-पत्र में लालाजी के फौत होने की खबर पढ़ बहुत ही अफसोस हुआ है। बेचारी माला का वही तो आश्रय थे—।"

करीमा कहती गई और माया रानी आँखें नीचे किये सुनती रहीं। उसने कुछ भी उत्तर नहीं दिया। मायारानी और माला यह आशा नहीं करते थे कि लोकनाथ के घर से इस अवसर पर भी कोई शोक प्रकट करने आयेगा।

ये दो घण्टे बैठी रहीं और किसी ने इनके साथ बात तक नहीं की। कुछ देर बाद माला उठकर मकान के भीतर चली गई। रामदेई इत्यादि समझ नहीं सकीं कि किस कारण वह गई है। करीमा का विचार था कि वह उनसे इतनी नफरत करती है कि उनको वहाँ बैठा देख भी नहीं सकती।

मोहिनी ने अर्थ-भरी दृष्टि से करीमा की ओर देखा। मगर वहाँ बिरादरी और मित्रों के घरों की बहुत स्त्रियाँ एकत्रित थीं। इस कारण वे अपने मन की बात परस्पर कह नहीं सकीं।

दो घण्टे बैठकर वे मायारानी से पुनः शोक प्रकट कर उठ आईं। बाहर उनकी मोटर खड़ी थी। वे आयीं तो मोटर के पास एक बारह-तेरह वर्ष का लड़का खड़ा था। रामदेई और करीमा का ध्यान उस ओर नहीं था। वे मोहिनी की बात पर विचार कर रही थीं। मोहिनी ने मकान की ड्योढ़ी से निकलते हुए कहा था, "करीमा बहन! क्या लाभ हुआ यहाँ आने का?"

"तुम किसी लाभ की उम्मीद लेकर आई थीं?" करीमा का प्रश्न था।

"वाह! यही तो मैं पूछ रही हूँ? किस आशा पर आई थीं और वह पूरी हुई है क्या?"

"मैं तो सिर्फ अपने दिल की तस्कीन (शान्ति) के लिए आई थी। न कुछ लेने, न देने। वह मुझको मिल गई है।"

इस समय वे अपनी मोटर के पास आईं तो वहाँ खड़े लड़के ने हाथ जोड़ कह दिया, "दादी माँ! नमस्ते।"

"दादी माँ—।"

तीनों उसकी ओर देखने लगीं। रामदेई ने पहचान लिया। यह भगवानदास का बिल्कुल नमूना था। तीनों भौचक्की हो उसका मुख देखती रह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गईं। करीमा ने कह दिया, "ओह, फूल !" उनको राधा पंडिताइन ने बताया था कि भगवानदास के लड़के का नाम फूलचन्द है। "तुम, माला के फूल हो ?"

"माँ ने कहा था कि मेरी दादी आई है और इस मोटर में जाएगी। इसलिए नमस्ते कहने के लिए मुझको यहाँ खड़ा कर गई है।"

रामदेई ने उसको पकड़, अपने अंग लगा लिया। उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए वह आँसू बहाने लगी। "फूल," करीमा ने कहा, "आओ, ज़रा हमारे साथ मोटर पर चलो। हम तुमको अभी थोड़ी देर में यहाँ छोड़ जायेंगी।"

"कहाँ चलेंगे ?"

"तुम्हारे पिता के पास। उनको भी नमस्ते कर आओ।"

"मेरे पिता ? वे तो मर चुके हैं ?"

"यह भी तुम्हारी माँ ने बताया है ?"

लड़का विस्मय में मुख देखता रह गया। करीमा ने कहा, "आओ, वे जीवित हैं। तुमको देखकर बहुत प्रसन्न होंगे।"

"माँ से पूछ आऊँ ?"

"सब औरतों में बैठी माँ से कैसे पूछने जाओगे ? और फिर एक घंटे में तो हम लौट ही आएँगे।"

लड़का झिझकता था। रामदेई ने उसकी पीठ पर हाथ फेरते हुए कह दिया, "फूल बेटा ! आ जाओ। वे तुमको बहुत प्यार करेंगे।"

लड़का निश्चय नहीं कर सका। वह मोटर में चढ़ा तो मोटर कोठी में जा पहुँची। मोहिनी ने लड़के को बताया, "मैं तुम्हारी फूफी हूँ। और यह तुम्हारी चाची।"

फूल ने कहा—"माँ ने बताया था कि एक दुर्घटना में पिताजी का देहान्त हो चुका है।"

तीनों औरतें मुस्कराती हुई उसकी ओर देखती रहीं। डॉक्टर भगवानदास, कोठी के लॉन में बैठा एक पुस्तक पढ़ रहा था। वे तीनों, लड़के को लेकर उसके पास जा खड़ी हुईं। भगवानदास का ध्यान भंग हुआ तो उसने लड़के को खड़े देखा। देखते ही पहचान गया। उसको यह विदित था कि वे कहाँ गई हैं।

"तो इसको भी साथ ले आई हो ?" उसने माँ से पूछा।

"हाँ !" करीमा ने कहा, "इस बेचारे को यह पता नहीं था कि इसका बाप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीवित है ।”

रामदेई ने माली को कहा कि बैठने के लिए कुर्सियाँ ले आए ।

भगवानदास ने कहा—“फूल ! तुम्हारी माँ ने सत्य बात नहीं बताई । उसके लिए मैं मर ही चुका हूँ, मगर तुम्हारे लिए नहीं । बैठो !”

कुर्सियाँ आ गईं । रामदेई ने चाय के लिए कोठी में कहला भेजा । फूल बैठा तो भगवानदास ने कहा, “फूल, देखो ! अगर तुम चाहो तो यहाँ इस कोठी में रह सकते हो ।”

“और माँ ?”

“उसके लिए सत्य ही मैं मर चुका हूँ । वह यहाँ नहीं आएगी ।”

“माँ नाराज़ होगी ।”

“तो टेलीफोन पर पूछ लो ।”

फूल के नाना के देहान्त के कारण कोठी में शोक छाया हुआ था । इस कारण उसको यह कोठी उसे भली लग रही थी । फिर भी वह माँ से डरता था । उसने कहा, “माँ यहाँ रहने के लिए मना करेगी ?”

“पूछ लो न । मना करेगी तो तुमको छोड़ आएँगे ।”

फूलचन्द को एक बात सूझी । वह तो यहाँ भी बिना पूछे आया था । अतः टेलीफोन करने से दो मतलब पूरे होने की आशा में उसने पूछ लिया, “कहाँ है टेलीफोन ?”

करीमा उसको ले कोठी में चली गई । रामदेई ने कह दिया, “मुझको कुछ ऐसा मालूम होता है कि वह इसको यहाँ रहने की स्वीकृति दे देगी ।”

“मुझको भी कुछ यही लग रहा है । कदाचित् वह, इसके द्वारा पुनः अपना अधिकार पाने की आशा करती है । मगर—।”

मोहिनी ने बात बीच में ही काटकर कह दिया, “भैया ! पहले ही कुछ मत कहो । किस समय क्या उचित प्रतीत होगा, उसका अभी से मत निर्णय करो ।”

भगवानदास चुप रहा । बैरा चाय लेकर आ गया था । अभी चाय लग ही रही थी कि करीमा और फूल दोनों अति प्रसन्नवदन कोठी से उधर आते दिखाई दिए । फूल ने आते ही कहा, “माँ ने कहा है कि मैं चाहूँ तो कुछ दिन यहाँ रह सकता हूँ ।”

“सो ठीक है ।”

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

: ७ :

फूलचन्द लोकनाथ के घर ही रह गया। शरणदास के चौथे के दिन लोकनाथ, भगवानदास और नरोत्तम भी गए। इन्होंने रामकृष्ण से शोक प्रकट किया, परन्तु फूल तथा माला के विषय में कोई बात नहीं हुई। फूल स्कूल की छठी श्रेणी में पढ़ता था। वह अब कोर्ट रोड की कोठी पर से मोटर में स्कूल जाने लगा था। एक दिन उसने माँ को टेलीफोन पर कहा—"तुम यहाँ आओ न।"

"क्यों ?"

"यहाँ एक चाची है करीमा ! वे कहती है कि तुमको आना चाहिए।"

"तुम बताओ। प्रसन्न हो ?"

"यहाँ बहुत मज़ा है। मुनव्वर भापा मुझको पढ़ाते हैं। एक नरोत्तम चाचा हैं, वे मुझको बहुत प्यार करते हैं। बाबा भी हर रोज़ अपने पास बैठाकर बताया करते हैं कि माँ और पिता को परमात्मा समझो।"

"अच्छा, फूल ! तुम वहाँ रहो। मुझको कभी-कभी टेलीफोन कर लिया करो। कभी मिलने को जी करे तो दादी माँ को कहकर उनसे गाड़ी लेकर मिल जाया करो।"

"पर, माँ ! तुम आती क्यों नहीं ?"

"देखो फूल ! अहल्या कीं कहानी पढ़ी थी न ? उसने कुछ कुकर्म किया था। इस कारण वह पत्थर हो गई थी। भगवान् राम का जन्म हुआ और उसने उसका उद्धार किया। इसी तरह मैं भी तपस्या कर रही हूँ। कोई भगवान् राम मेरा उद्धार करेंगे तो मैं भी तुमसे मिलने आऊँगी।"

फूलचन्द ने एम० ए० पास कर लिया। वह चाचा नरोत्तम की कम्पनी में मैनेजर का काम करने लगा था। लोकनाथ ने उसके विवाह का प्रबन्ध किया तो उसके विवाह के निमंत्रण-पत्र बँटे। फूल को, उस निमंत्रण-पत्र को देने के लिए अपनी माँ और मामा के परिवार में भेजा गया। माँ ने निमंत्रण-पत्र पढ़ा तो पूछने लगी, "फूल ! बहू देखी है ?"

"हाँ, माँ !"

"कैसी है ?"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

"बहुत सुन्दर है।"

"क्या नाम है ?"

"रहमत।"

"ओह ! किस की बेटी है ?"

"चाचा नूरुद्दीन और चाची करीमा की।"

"यह शादी अपने बाबा और दादी के कहने पर कर रहे हो ?"

"नहीं माँ ! मैंने खुद उसको चुना है। कई वर्ष से मेरी उससे मुहब्बत थी। एम० ए० पास करने के बाद मैंने पिताजी और दादा जी से कहा तो उन्होंने पहले इनकार कर दिया। मैंने हठ किया। एक दिन तो मुझको और रहमत को भूख हड़ताल भी करनी पड़ी। आखिर बाबा और दादी मान गए।"

"और तुम्हारे पिता क्या कहते हैं ?"

"वे कहते हैं अपने बाबा और दादी का कहा मानो। मैं भी उनका कहना मानता हूँ।"

"देखो फूल ! मैं वहाँ नहीं जाऊँगी। मगर अपनी बहू को लेकर मुझसे आशीर्वाद लेने यहाँ आना।"

रस्सी चल गई पर बल नहीं टूटे।

□□□

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इस माला में लेखक की रचनाएँ

सुमति
मैं न मानूँ
भूल
विश्वास
प्रगतिशील
भद्रपुरुष
जात न पूछे कोय
बनवासी
चंचरीक
भैरवी चक्र
विकार

Central Library
167966
Gurukula Kangri (Deemed to be University) Haridwar
081
167966

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय

गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

R 089.9143 167966

वर्ग संख्या........G.U.R - M आगत संख्या..............

पुस्तक विवरण की तिथि नीचे अंकित है। इस तिथि सहित 30 वें दिन यह पुस्तक पुस्तकालय में वापस आ जानी चाहिए अन्यथा 50 पैसे प्रतिदिन के हिसाब से विलम्ब दण्ड लगेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

GURUKUL KANGRI LIBRARY

	Signature	Date
Access No.		
Class No.		
Cat No		
Tag etc.		
E.A.R.		
Recomm. by.		
Data Ent. by		
Checked		

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री गुरुदत्त

1894-1989 शिक्षा : एम. एस-सी.

प्रथम उपन्यास "स्वाधीनता के पथ पर" से ही ख्याति की सीढ़ियों पर जो चढ़ने लगे कि फिर रुके नहीं।

विज्ञान की पृष्ठभूमि पर वेद, उपनिषद् दर्शन इत्यादि शास्त्रों का अध्ययन आरम्भ किया तो उनको ज्ञान का अथाह सागर देख उसी में रम गये।

वेद, उपनिषद् तथा दर्शन शास्त्रों की विवेचना एवं अध्ययन अत्यन्त सरल भाषा में प्रस्तुत करना गुरुदत्त की ही विशेषता है।

उपन्यासों में भी शास्त्रों का निचोड़ तो मिलता ही है, रोचकता के विषय में इतना कहना ही पर्याप्त है कि उनका कोई भी उपन्यास पढ़ना आरम्भ करने पर समाप्त किये बिना छोड़ा नहीं जा सकता

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar